वर्ष 09 अंक 11 माह फरवरी, 2025 ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950

बजट 2025 :
सर्वसमावेशी और दूरदर्शी बजट
से भारत के निर्माण
को मिलेगी गति

जो रंग बरस रह्यौ बरसाने, सो रंग 'तीन' लोक में नाहें

आर.एन.आई. संख्या - 2166/2016 | डाक पंजीयन संख्या आगरा-139/2022-24

BEBER

BATH FITTINGS

Make way for iconic luxury....

Mathura
Mobile +91-9412280225

युवक

वर्ष - 09, अंक - 11, फरवरी 2025

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेंद्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट
(सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166/2016
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क
340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)
बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, आगरा-282004, उत्तर प्रदेश
पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**

लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com
Website - www.progressiveyuvak.com

जरूर पढ़ें
महाकुंभ विशेष

10 | क्यों करोड़ों श्रद्धालु जुड़ते हैं कुंभ से ?

महाकुंभ का शुभारंभ हो चुका है। पौष पूर्णिमा पर पहला स्नान विगत 13 जनवरी को हुआ। देश के कोने-कोने से भक्त प्रयागराज आ रहे हैं। विदेशी श्रद्धालु भी बड़ी तादाद में कुंभ में स्नान करने पहुंच रहे हैं। क्या आप भी महाकुंभ में स्नान करने जाएंगे ? अगर आप जा रहे हैं, तो आप अपने को भाग्यशाली मान सकते हैं। आपको यहां कई तरह के धार्मिक अनुष्ठान होते हुए दिखाई देंगे। जैसे कि यज्ञ, हवन, और कीर्तन। ये अनुष्ठान वातावरण...

विशेष
चिंताजनक

32 | कश्मीर से पंडितों के पलायन के चार दशक

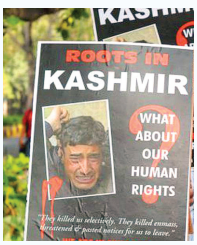

हिजबुल और अलगाववादियों का अप्रत्यक्ष समर्थन कर रहे फारुख अब्दुल्ला तब भी चुप रहे थे या कार्यवाही करनें का अभिनय मात्र कर रहे थे जब भाजपाई और कश्मीरी पंडितों के नेता टीकालाल टपलू की 14 सितम्बर 1989...

विशेष
डिजिटल दुनिया

18 | शब्दों की दुनिया में दृश्यों का दबाव

इंटरनेट समाज के लिए एक चमत्कार रहा है। इसने जमीनी स्तर पर कई सकारात्मक बदलाव देखे हैं। कैमरे वाले मोबाइल फोन के माध्यम से इंटरनेट की उपलब्धता ने लोगों के लिए संभावनाओं के कई दरवाजे खोल दिए। डिजिटल दुनिया जहां समाज को गई, वहीं इसने कई जटिलताओं को आसान बना दिया। अनुसार, मार्च 2024 तक भारत में 6.4 करोड़ 2.27 गीगाबाइट प्रति...

जरूर पढ़ें
विवादास्पद

16 | भारत के भविष्य को लेकर नेताजी...

नेताजी की विचारधारा और व्यक्तित्व के बारे में कई व्याख्याएं उपलब्ध हैं लेकिन अधिकांश विद्वानों का मानना है कि हिंदू आध्यात्मिकता ने उनके व्यस्क जीवन के दौरान उनके राजनीतिक और सामाजिक विचारों का आवश्यक हिस्सा बनाया, हालांकि इसमें कट्टरता...

जरूर पढ़ें
नजरिया

30 | आखिर कौन लागू करवाएगा दक्षिण...

दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में चीनी दबदबे को नियंत्रित करने के लिए एक आदर्श आचार संहिता लागू करने की मांग सही है, लेकिन वहां पर इसे लागू कौन करवाएगा, इस बात का उत्तर भारत समेत विभिन्न आसियान देशों के पास नहीं है। ये तो सिर्फ वकालत कर रहे हैं कि दक्षिण चीन सागर ऐसा होना चाहिए। जबकि चीन अपनी हठधर्मिता के चलते सैन्य कार्रवाई करने पर उतारू है।

48 | कहानी
50 | कविता

सम्पादकीय

जागरूकता से ही होगा कैंसर रोग पर नियंत्रण

कैंसर बीमारियों का एक जटिल समूह है जिसकी विशेषता असामान्य कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि और प्रसार है। इसमें 100 से अधिक विभिन्न रोग शामिल हैं जो शरीर के विभिन्न अंगों को प्रभावित करते है। ये कोशिकाएं ट्यूमर नामक द्रव्यमान का निर्माण कर सकती हैं। जो शरीर के सामान्य कामकाज में हस्तक्षेप कर सकती हैं। जबकि कैंसर किसी को भी प्रभावित कर सकता है। इन्हें कार्सिनोमा, सारकोमा, ल्यूकेमिया और लिम्फोमा जैसे प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है। इसके कारणों में आनुवंशिक, पर्यावरणीय और जीवनशैली कारक शामिल हैं, जिनमें अस्पष्टीकृत वजन घटाने से लेकर लगातार थकान तक के लक्षण शामिल हैं। कैंसर की रोकथाम में जीवनशैली में बदलाव जैसे कि तंबाकू से परहेज, स्वस्थ आहार और टीकाकरण शामिल हैं। प्रभावी प्रबंधन और शुरुआती पहचान के लिए जागरूकता और ज्ञान महत्वपूर्ण है।

कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसकी रोकथाम, पहचान और उपचार को प्रोत्साहित करने के लिए 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है। विश्व कैंसर दिवस का जन्म 4 फरवरी 2000 को पेरिस में न्यू मिलेनियम के लिए कैंसर के खिलाफ विश्व शिखर सम्मेलन में हुआ था। विश्व कैंसर दिवस का प्राथमिक लक्ष्य कैंसर और बीमारी के कारण होने वाली मौतों को कम करना है। 1933 में अंतर्राष्ट्रीय कैंसर नियंत्रण संघ ने स्विट्जरलैंड में जिनेवा में पहली बार विश्व कैंसर दिवस मनाया था। कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिसका नाम सुनते ही घबराहट होने लगती है। कैंसर से पीड़ित व्यक्ति बीमारी से अधिक तो कैंसर के नाम से डर जाता है। जिस व्यक्ति को कैंसर होता है वह तो गंभीर यातना से गुजरता ही है उसके साथ ही उसका परिवार को भी बहुत कष्टमय स्थिति में गुजरना पड़ता है। जानलेवा होने के साथ ही कैंसर की बीमारी में मरीज को बहुत अधिक शारीरिक पीड़ा भी झेलनी पड़ती है। कैंसर की बीमारी इतनी भयावह होती है जिसमें मरीज की मौत सुनिश्चित मानी जाती है। बीमारी की पीड़ा व मौत के डर से मैरिज घुट-घुट कर मरता है। इस दिन कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाने, लोगों को शिक्षित करने, इस रोग के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए दुनिया भर में सरकारों और व्यक्तियों को समझाने तथा हर साल लाखों लोगों को मरने से बचाने के लिए मनाया जाता है। नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने कहा है कि देश के अधिकांश क्षेत्रों में कैंसर की सही निगरानी नहीं हो पा रही है। जिस कारण अधिकांश मामलों में बीमारी का देरी से पता चल रहा है। देश के सभी शोध केंद्रों को पत्र लिख आईसीएमआर ने कैंसर की जांच और निगरानी को आसान बनाने के लिए प्रस्ताव मांगे हैं। देश के सभी जिलों में कैंसर निगरानी और जांच को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य अनुसंधान के तहत नई नीति बनाने के लिए आईसीएमआर को जिम्मेदारी सौंपी है। इसके लिए अलग-अलग शोध टीमें गठित होंगी और भौगोलिक व स्वास्थ्य सेवाओं की मौजूदा स्थिति के आधार पर वैज्ञानिक तथ्य एकत्रित किए जाएंगे। दुनिया भर में हर साल एक करोड़ से अधिक लोग कैंसर की बीमारी से दम तोड़ते हैं। जिनमें से 40 लाख लोग समय से पहले (30-69 वर्ष आयु वर्ग) मर जाते हैं। इसलिए समय की मांग है कि इस बीमारी के बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथ कैंसर से निपटने की व्यावहारिक रणनीति विकसित करनी चाहिये। 2025 तक कैंसर के कारण समय से पहले होने वाली मौतों के बढ़कर प्रति वर्ष एक करोड़ से अधिक होने का अनुमान है। यदि विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2025 तक कैंसर के कारण समय से पहले होने वाली मौतों में 25 प्रतिशत कमी के लक्ष्य को हासिल किया जाए तो हर साल 15 लाख जीवन बचाए जा सकते हैं। अमेरिका और चीन के बाद दुनिया में सबसे ज्यादा कैंसर मरीज भारत में है। 2020 में 1.93 करोड़ नए कैंसर मरीज सामने आए हैं। जिनमें 14 लाख से अधिक भारतीय हैं। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम के अनुसार देश में कैंसर के मामलों की संख्या 2022 में 14.6 लाख से बढ़कर 2025 में 15.7 लाख होने का अनुमान है। जिसके लिए सरकार को चिकित्सा व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाने की जरूरत है। तभी समय पर कैंसर मरीजों की जांच से पहचान कर सही उपचार कर देकर उनकी जान बचाई जा सकती है। भारत में कैंसर के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) की नैशनल कैंसर रजिस्ट्री के आंकड़ें बताते हैं कि देश में 2023 में कैंसर के मामले 15 लाख तक पहुंच गए हैं। इसके अलावा ऐसे हजारों केस भी होंगे जिनका आंकड़ा नहीं मिल पाता होगा। भारत में कैंसर के मामलों में लगातार बढ़ोतरी हो रही हैं। 2040 तक भारत में कैंसर के मामले 2020 की तुलना में 57.5% बढ़कर 20लाख 80हजार हो जाएंगे। (आईसीएमआर) के मुताबिक भारत में हर साल 1.3 मिलियन से ज़्यादा नए कैंसर के मामले सामने आते हैं। कैंसर रोग का इलाज करने वाले डॉक्टरों का भी मानना है कि यह खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। कैंसर रोग की शुरुआती पहचान, जोखिम में कमी और प्रबंधन जैसे उपाय जरूरी है। आईसीएमआर के आंकड़ों को देखें तो 2021 में कैंसर के 1426447 मामले नैशनल कैंसर रजिस्ट्री प्रोग्राम में दर्ज किए गए। 2022 में यह संख्या बढ़कर 1461427 हो गई और 2023 में 1496972 केस सामने आए। हर 9 में से से एक व्यक्ति को अपने जीवनकाल में कैंसर होने की संभावना है। पुरुषों में फेफड़े और महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के काफी मामले सामने आ रहे हैं। 14 वर्ष तक की आयु में लिम्फोइड ल्यूकेमिया का खतरा बढ़ा है। 2020 की तुलना में 2025 में कैंसर के मामलों में 10 प्रतिशत से ज्यादा की बढ़ोतरी का अनुमान है। ■

विश्व कैंसर दिवस दुनिया पर कैंसर के प्रभाव को कम करने के लिए सभी के लिए मिलकर काम करने का एक अवसर है। जागरूकता बढ़ाकर, शिक्षा को बढ़ावा देकर, दूसरों को नैतिक रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करके और कैंसर के खिलाफ लड़ाई में समर्थन देकर ऐसे लोगों का जीवन बचाना है जिसे रोका और ठीक किया जा सकता है। एकजुट होकर और कार्म करके हम इस बीमारी से हमारे स्वास्थ्य, हमारी अर्थव्यवस्था और एक समाज के रूप में हमारी आत्माओं पर पड़ने वाले असर को कम कर सकते हैं। कैंसर दुनियाभर में मौत का प्रमुख कारण बना हुआ है। विश्व स्वस्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) की रिपोर्ट के अनुसार 2023 में लगभग एक करोड़ लोगों की मौत कैंसर से हुइ थी।

डॉ. वंदना पालीवाल

संविधान लागू होने के अमृत महोत्सव काल में देश के हर नागरिक के लिए **न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व** के मूल्यों को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित कराने वाले नायक **भारत रत्न बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर** को कृतज्ञ राष्ट्र का नमन।

76वें गणतंत्र दिवस की

26 जनवरी, 2025

हार्दिक शुभकामनाएं

"प्रदेशवासियों को लोकतंत्र एवं सामाजिक समता को सर्वोपरि बनाने वाले **76वें गणतंत्र दिवस** की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। यह पर्व हमें अमर सेनानियों के स्मरण के साथ ही बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर के बनाए संविधान एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन **'विरासत एवं विकास'** के अनुरूप भेदभाव रहित शक्तिशाली आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के लिए संकल्पित होने की प्रेरणा देता है।"

- योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

mahakumbh_25/ upmahakumbh MahaKumbh_2025 https://kumbh.gov.in/

विश्व प्रसिद्ध बरसाना की लट्ठमार होली (08 मार्च 2025) पर विशेष

जो रंग बरस रह्यौ बरसाने, सो रंग तीन लोक में नाहें

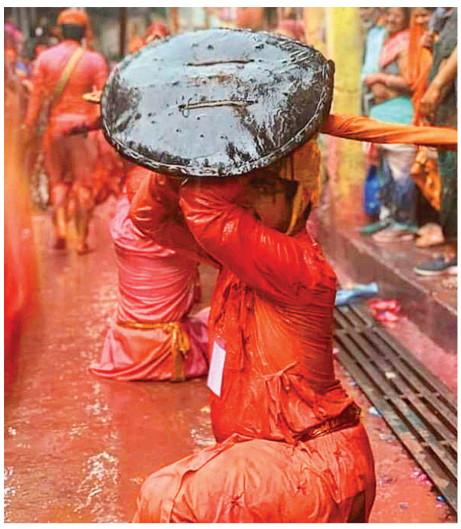

बरसाना भगवान श्रीकृष्ण और उनकी स्वरूप भूता आल्हादिनी शक्ति राधा की लीला भूमि रही है। फाल्गुन शुक्ल नवमी को होने वाली यहां की लट्ठमार होली न केवल अपने देश में अपितु विदेशों तक में प्रसिद्ध है। जिसे देखने के लिए दुनियां के प्रत्येक कोने से लाखों लोग प्रति वर्ष यहां आते हैं। बरसाना, दिल्ली-आगरा राजमार्ग पर स्थित कोसीकलां से 19 किलोमीटर और मथुरा से (वाया गोवर्धन) 47 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

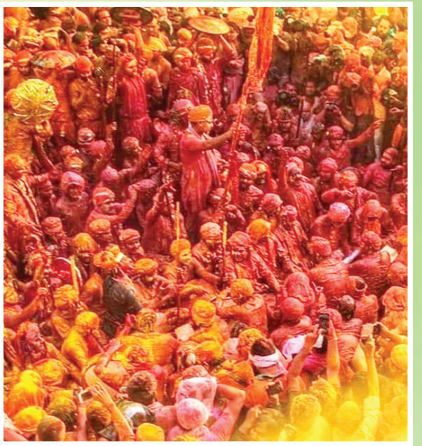

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

बरसाना की लट्ठमार होली में अन्य स्थानों की होली के अनुरूप रंग-अबीर एवं नृत्य-संगीत के अलावा लाठियों से होली खेलने की जो विशिष्टता है, वो इस बात की द्योतक है कि राधा-कृष्ण की इस लीला भूमि के कण-कण में आज भी इतना रस व्याप्त है कि यहां लाठियां चल कर भी रस की वृष्टि होती है। होली का रंग यहां स्थित श्रीजी मन्दिर में बसन्त पँचमी के दिन होली का डॉढ़ा गड़ते ही छाने लग जाता है। साथ ही मंदिर में आने वाले दर्शनार्थियों के माथे पर गुलाल लगना प्रारम्भ हो जाता है। इसके अलावा मन्दिर में प्रतिदिन सायंकाल समाज गायन होता है। महाशिवरात्रि के दिन मन्दिर से रंगीली गली तक होली की प्रथम चौपाई अत्यंत धूमधाम के साथ निकाली जाती है। इस चौपाई में गोस्वामीगण संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य होली के पदों का गायन करते हुए साथ चलते हैं। फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को श्रीजी मन्दिर में राधा रानी के छप्पन प्रकार के भोग लगते हैं। फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को श्रीकृष्ण के प्रतीक के रूप में नंदगाँव का एक गुसाईं बरसाना की गोपिकाओं को होली खेलने का निमंत्रण देने बरसाना आता है। बरसाना की गोपीकाओं द्वारा इस गुसाईं का लड्डुओं और माखन-मिश्री से अत्यधिक स्वागत सत्कार किया जाता है।इसके साथ ही वह होली खेलने का निमंत्रण स्वीकार कर लेती हैं। बरसाना का भी एक गुसाईं नंदगाँव जाकर वहां के गुसाइयों को बरसाना में होली खेलने हेतु आने का निमंत्रण देता है।इसी दिन बरसाना के श्रीजी मन्दिर से होली की दूसरी चौपाई सुदामा मोहल्ला होकर रँगीली गली तक जाती है। साथ ही इसी दिन फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को श्रीजी मन्दिर प्रांगण में लड्डू होली व पाण्डे लीला का भव्य आयोजन होता है। जिसमें गोस्वामीगण भक्तों व श्रद्धालुओं पर लड्डुओं और जलेबियों आदि की बौछार करते हैं।

अगले दिन फाल्गुन शुक्ल नवमी को नंदगाँव के तकरीबन 600 गोस्वामी परिवारों के हुरियारे अपनी-अपनी ढालों को लेकर नंदगाँव स्थित नंदराय मन्दिर में एकत्रित होते हैं और वहां से पैदल ही गाते-बजाते, नाचते-झूमते लगभग 9 किलोमीटर दूर बरसाना पहुँचते हैं। नंदगाँव के इन हरियारों का बरसाना में पहला पड़ाव पीली पोखर (प्रिया कुंड) पर होता है। यह वही सरोवर है जिसमें राधा रानी ने हल्दी का उबटन लगा कर स्नान किया था। इस कारण इसका रंग आज भी पीला है।

नंदगाँव के हुरियारे पीली पोखर में स्नान आदि कर यहां स्थित वट वृक्ष के तले बरसाना की गोपिकाओं के साथ होली खेलने के लिए सजते-संवरते हैं। वह अपनी ढालों को भी सजाते हैं। साथ ही वह चिलम पीते हैं, हुक्का गुड़गुड़ाते हैं और सिल-बट्टा चला-चला कर भांग-ठण्डाई छानते हैं। इस सबके नशे से वह इतना मदमस्त हो जाते हैं कि उनके नेत्र व होठ आदि फड़क उठते हैं। यह नशा वह इसलिए करते हैं ताकि वह गोपिकाओं के द्वारा किये जाने वाले लाठियों के प्रहारों को अपनी ढालों पर आसानी से झेल सकें। नंदगांव के हरियारों में 10-12 वर्ष के बच्चों से लेकर 60-70 वर्ष के बूढ़े तक हुआ करते हैं।

इस सबके बाद यह हुरियारे अपरान्ह लगभग 3 बजे नंदगांव के नंदराय मन्दिर का झंडा लेकर अपनी पारम्परिक वेशभूषा में **बम्म** (बड़ा नगाड़ा) व मंजीरों की ताल पर होली व रसिया आदि गाते हुए श्रीजी मन्दिर की ओर चल पड़ते हैं। रास्ते में इनकी बरसाना के वयोवृद्ध गुसाइयों के द्वारा उसी प्रकार **मिलनी** की जाती, जिस प्रकार की विवाहों में कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष की **मिलनी** होती है। यह **मिलनी** गले मिलकर, रंग-अबीर लगा कर और इलायची-मिश्री आदि खिलाकर होती है।

होली के रसिया गाते, अबीर-गुलाल उड़ाते और नाचते-झूमते नंदगाँव के हुरियारे 250 सीढ़ियों की कवायद कर बरसाना के ब्रह्मेश्वर गिरि के उच्च शिखर पर स्थित श्रीजी मन्दिर में पहुँचते हैं। यहां राधा रानी की मनोहारी प्रतिमा के समक्ष बरसाना और नंदगाँव के गुसाइयों द्वारा समाज गायन होता है। इस समाज में नंदगाँव के गुसाईं अपने को श्रीकृष्ण का प्रतिनिधि मान कर राधा रानी के प्रतीक के रूप में बरसाना के गुसाइयों को और बरसाना के गुसाईं अपने को राधा रानी का प्रतिनिधि मान कर, श्रीकृष्ण के प्रतीक के रूप में नंदगांव के गुसाइयों को प्रेम भरी गालियाँ सुनाते हैं। साथ ही सभी परस्पर टेसू के फूलों से बने रंग के द्वारा होली खेलते हैं।

ततपश्चात नंदगाँव के हुरियारे मन्दिर की सीढ़ियां उतर कर रँगीली गली में प्रवेश करते हैं, जहां पर कि रंगों की बौछारों एवं सङ्गीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य ठिठोली यानी हंसी-मजाक की जमकर होली होती है। ठिठोली होली में नंदगाँव के हुरियारे बरसाना की गोपिकाओं के साथ श्रृंगार रस से परिपूर्ण हंसी-मजाक करते हैं। इस हंसी-मजाक में बरसाना की गोपिकाएँ भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती हैं। आखिर लें भी क्यों न, होली कौन सी रोज-रोज होती है।

ठिठोली होली हो चुकने के बाद बरसाना की गोपिकाएँ (श्रीजी मन्दिर के गुसाईं घरों की स्त्रियां) एवं नंदगाँव के हरियारे लट्ठमार होली खेलने हेतु रँगीली गली के चौक पर एकत्रित होते हैं। उनके हाथों में मेहन्दी, पांव में महावर और आंखों में कटीला काजल हुआ करता है। कंठ-हार हमेल, हथफूल व कर्णफूल आदि अनेकानेक आभूषण उनके अंग-प्रत्यंग की शोभा बढ़ाते हैं। इसके अलावा उनके हाथों में लंबी-लंबी लाठियां और मुँह पर लंबे-लंबे घूँघट होते हैं। यह गोपिकाएँ अपने-अपने घूंघटों की ओट से नंदगांव के हरियारों पर उछल-उछल कर अपनी-अपनी लाठियों से बड़े ही प्रेम पूर्ण प्रहार करती हैं। इन प्रहारों को नंदगाँव के हरियारे अपनी-अपनी ढालों पर रोकते हैं। यह प्रहार बड़े ही जबरदस्त होते हैं। गोपिकाओं की लाठियों के प्रहारों से देखते ही देखते नंदगाँव के हरियारों की ढालें छलनी हो जाती हैं। यदि इस लट्ठमार होली में किसी के खून आदि निकल आये तो उसे एक शुभ-शगुन समझा जाता है। उससे किसी में कोई दुर्भावना उत्पन्न नही होती है। नंदगाँव के हरियारों को बरसाना की गोपिकाओं की लाठियां भी इतनी अच्छी लगती हैं कि जब-जब गोपिकाओं का लाठियां चलाने का जोश ठंडा पड़ता है, तब-तब नंदगाँव के हुरियारे श्रृंगार रस की कड़ियाँ गा-गाकर उन्हें उत्तजित कर देते हैं। अत: यह लट्ठमार होली काफी देर तक चलती है। जब यह होली हो चुकती है तब बरसाना की गोपिकाएँ अपनी लाठियों को दर्शकों के माथे पर टिका-टिका कर उनसे इनाम माँगती हैं।जो देना चाहे वह दे,किसी से कैसी भी कोई जबरदस्ती नही होती है।

लट्ठमार होली के खेलने की तैयारी बरसाना की गोपिकाएँ और नंदगांव के हुरियारे कई महीनों पूर्व से बड़े ही उत्साह व उमंग के साथ किया करते हैं। बरसाना में जिस दिन यह होली खेली जाती है उस दिन लोग-बाग इस होली को देखने के लिये सुबह से ही घरों की छतों पर बैठना शुरू कर देते हैं। रँगीली गली के किनारे बने सारे मकानों के छज्जे इस होली के असँख्य दर्शकों से पट जाते हैं। इसके अलावा रँगीली गली में भी दर्शकों का सैलाब उमड़ पड़ता है। बरसाना में जिस दिन लट्ठमार होली होती है उस दिन यहां सुबह से ही घर-घर में पूड़ी-पकवान बनने शुरू हो जाते हैं। क्योंकि पता नही कब और किसके घर पर बरसाना की लट्ठमार होली देखने हेतु मेहमान आ जाएं। इस दिन प्राय: प्रत्येक बरसाना वासी के यहां कोई न कोई मेहमान अवश्य आता है।

अगले दिन यानी फाल्गुन शुक्ल दशमी को इसी प्रकार की लट्ठमार होली नंदगाँव में गांव से बाहर रंगीली चौक पर होती है। नंदगाँव में होने वाली लट्ठमार होली में हुरियारे होते हैं बरसाना के गुसाईं और लाठियां चलाती हैं नंदगाँव की गोपिकाएँ। नंदगाँव में होली खेलने हेतु बरसाना के गुसाईं बरसाना स्थित श्रीजी मन्दिर की ध्वजा को लेकर नंदगाँव जाते हैं। वहां के यशोदा मन्दिर में उनका भांग-ठण्डाई से स्वागत-सत्कार किया जाता है। उसके बाद नंदराय मन्दिर में संगीत समाज होता है। ततपश्चात वहां होती है बरसाना की भांति लट्ठमार होली। ■

कुम्भ का मानसिक दृष्टि से महत्व

डॉ. चारुदत्त पिंगले

कुम्भ मेला भारतीय संस्कृति और धार्मिक आस्था का महान प्रतीक है, लेकिन इसका महत्व केवल आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं है। यह मानसिक स्वास्थ्य, आत्मचिंतन और सामूहिक ऊर्जा के अनुभव का एक अनुपम अवसर प्रदान करता है। लाखों श्रद्धालु और साधक जब इस आयोजन में सम्मिलित होते हैं, तो वे अपने मन, मस्तिष्क और आत्मा को शुद्ध करने की दिशा में आगे बढ़ने लगते हैं। इस वर्ष का कुम्भ तो महाकुम्भ है, यह मानवी मन पर अधिक सकारात्मक प्रभाव करता है।

आध्यात्मिक शांति और मानसिक स्थिरता: कुम्भ मेले का भक्तिमय वातावरण सकारात्मक ऊर्जा और आत्मिक शांति का स्रोत है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्नान करने की श्रद्धा आत्मा की शुद्धि और पापों से मुक्ति का माध्यम माना जाता है। यह धार्मिक श्रद्धा मन को नकारात्मकता से मुक्त करती है और मानसिक शांति, स्थिरता प्रदान करती है। सामूहिक ध्यान और ऊर्जा का अनुभव: कुम्भ मेले में करोड़ों लोग सामूहिक रूप से ध्यान, प्रार्थना और भक्ति में लीन होते हैं। यह सामूहिक ऊर्जा एक अनूठा मानसिक अनुभव प्रदान करती है। ऐसे आयोजनों में भाग लेने से व्यक्ति दैनिक जीवन के तनाव और चिंताओं से मुक्त होकर नई ऊर्जा और उत्साह का अनुभव करता है। एक विदेशी चित्रकार कुम्भ में रंगों का संगम देखने आए थे, परन्तु यहां आने के बाद यहां की भक्ति, श्रद्धा, अनुष्ठान, संगठन, अपनापन, सांस्कृतिक महानता आदि देखकर अचंभित हो गए। और भारत की आध्यात्मिक संस्कृति के मार्ग पर चलने लगे। ऐसे अनेक उदाहरण कुम्भ में मिलते है। यह सामूहिक उपासना का प्रभाव होता है।

धार्मिक विश्वास और मानसिक सुदृढ़ता: यहां प्रतिदिन साधु-संतों और विद्वानों के प्रवचन होते हैं, वह मानसिक सुदृढ़ता को बढ़ाते हैं। उनके द्वारा बताए गए जीवन-दर्शन और आध्यात्मिक मार्गदर्शन व्यक्ति के जीवन में मार्गदर्शक बनते हैं। जीवन की जटिलताओं को सरल दृष्टिकोण से समझने और उनका समाधान करने की प्रेरणा देते हैं। व्यक्ति के मन की सकारात्मकता बढ़ाते हैं। यह श्रद्धा आत्मविश्वास और मानसिक संतुलन को मजबूत करता है।

आत्मचिंतन और आत्मिक विकास: कुम्भ मेले का अनुभव व्यक्ति को आत्मचिंतन और आत्मिक विकास की दिशा में प्रेरित करता है। यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, अपितु जीवन के उद्देश्य को समझने और आत्मा की खोज के लिए एक मंच है। आत्मचिंतन मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है, और कुम्भ इस दिशा में एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। देश विदेश के बड़े बड़े उद्योगपति, कलाकार यहां आकर जीवन में बहुत बड़ा सकारात्मक परिवर्तन अनुभव करते हैं।

संस्कृति और सामुदायिक बंधन का विकास: कुम्भ मेला विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के लोगों को एक साथ लाता है। यह अनुभव मानसिक संतोष और सामाजिक एकता का प्रतीक है। विभिन्न क्षेत्रों से आए लोगों के साथ संवाद और सहभागिता व्यक्ति को मानसिक रूप से सशक्त बनाती है और उसे सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक करती है। सभी अपने जाति, सम्प्रदाय, पद, प्रतिष्ठा के ऊपर उठकर केवल एक भक्त, एक हिंदू के नाते कुम्भ में सम्मिलित होते है। यह अनूठा संगम देखने को मिलता है।

प्राकृतिक वातावरण और मानसिक स्वास्थ: त्रिवेणी जी के तट पर स्थित कुम्भ मेले का प्राकृतिक वातावरण मन को सुकून और ताजगी प्रदान करता है। पानी, पहाड़, और खुले आकाश के बीच बिताया गया समय मानसिक शांति का अनुभव कराता है। यह प्राकृतिक प्रभाव व्यक्ति को तनाव से मुक्त करता है और मानसिक ऊर्जा को पुन: जागृत करता है। यहां के प्रत्येक क्षण व्यक्ति के जीवन में सदैव के लिए एक स्मरणीय, प्रेरणादायी क्षण के रूप रहते हैं।

मानसिक सशक्तिकरण और जीवन के दृष्टिकोण का विकास: कुम्भ मेला व्यक्ति के भीतर मानसिक सशक्तिकरण और प्रौढ़ता को विकसित करता है। यह अनुभव व्यक्ति को आत्मविश्वास और साहस के साथ जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए प्रेरित करता है। जीवन को सकारात्मक मोड मिलता है। यह देखते हुए कि कुंभ मेला केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं है, अपितु यह मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए एक अद्वितीय पर्व है। यहां का वातावरण, साधु-संतों का मार्गदर्शन, और सामूहिक भक्ति व्यक्ति को मानसिक स्थिरता, शांति और नई ऊर्जा प्रदान करते हैं। कुंभ मेले का अनुभव जीवन को नई दृष्टि, संतुलन और सकारात्मकता प्रदान करने का एक प्रभावी साधन है। इस कुंभ मेले से प्राप्त ऊर्जा को बनाए रखने और मानव का मानसिक स्वास्थ्य उत्तम बनाए रखने के लिए धर्मरक्षण आवश्यक है। लेकिन वर्तमान में हर जगह हिंदू धर्म पर आघात हो रहे हैं। इसके लिए हिंदुओं को संगठित होना और धर्म रक्षण के लिए सामूहिक प्रयास करना आवश्यक है। ■

क्यों करोड़ों श्रद्धालु जुड़ते हैं कुंभ से?

महाकुंभ का शुभारंभ हो चुका है। पौष पूर्णिमा पर पहला स्नान विगत 13 जनवरी को हुआ। देश के कोने-कोने से भक्त प्रयागराज आ रहे हैं। विदेशी श्रद्धालु भी बड़ी तादाद में कुंभ में स्नान करने पहुंच रहे हैं। क्या आप भी महाकुंभ में स्नान करने जाएंगे? अगर आप जा रहे हैं, तो आप अपने को भाग्यशाली मान सकते हैं। आपको यहां कई तरह के धार्मिक अनुष्ठान होते हुए दिखाई देंगे। जैसे कि यज्ञ, हवन, और कीर्तन। ये अनुष्ठान वातावरण को शुद्ध करते हैं और श्रद्धालुओं को भगवान के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करने का अवसर देते हैं। कुंभ मेला एक धार्मिक और आध्यात्मिक अनुभव है जो लोगों को भगवान के करीब लाता है। यह एक ऐसा समय है जब लोग अपने पापों से मुक्ति पा सकते हैं और मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। यह आत्म-अनुशासन और त्याग के महत्व को दर्शाता है। यह एक ऐसा उत्सव है जो लाखों लोगों को एक साथ आने और अपनी आस्था को मजबूत करने का अवसर देता है।

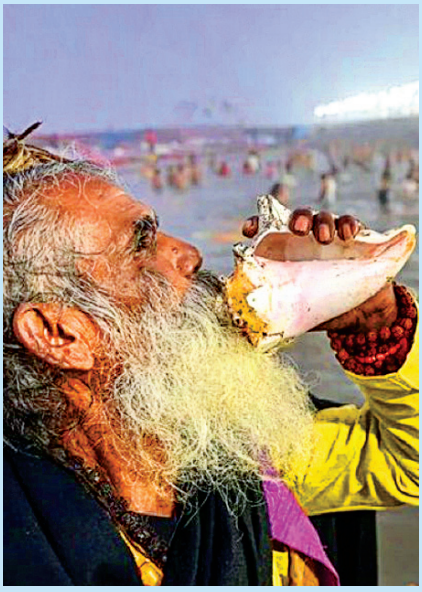

आर.के. सिन्हा

कुंभ मेले की शुरुआत समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से जुड़ी है। इस कथा के अनुसार, देवताओं और असुरों ने मिलकर अमृत (अमरता का दिव्य पेय) पाने के लिए समुद्र मंथन किया था। जब अमृत का कुंभ निकला, तो देवताओं और असुरों के बीच इसे पाने के लिए युद्ध हुआ। इस दौरान, अमृत की कुछ बूंदें इन चार स्थानों पर गिरीं, जिन्हें पवित्र माना जाता है। इसलिए, इन स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है। कुंभ मेले का आयोजन उन स्थानों पर होता है जहां पवित्र नदियों का संगम होता है, जैसे गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम प्रयाग में। इन नदियों में स्नान करना हिन्दू धर्म में बहुत शुभ माना जाता है। मान्यता है कि इस दौरान नदियों में स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अब बात प्रयागराज और कुंभ के संबंधों की भी। प्रयाग (बहु-यज्ञ स्थल) को कहा जाता है। प्राचीन काल से ही 'तीर्थराज' के रूप में प्रसिद्ध हुआ यह संगम स्थल पर हुए अनेक यज्ञों की वजह से, जिनमें पहला यज्ञ किया सृष्टिकर्ता प्रजापति ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना के तत्काल बाद। यज्ञवेदी है गंगा, यमुना और गुप्त रूप से बहने वाली सरस्वती की धारा, जो इस क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित करती है। 'पद्म पुराण' में इसकी तुलना साक्षात सूर्य से करते हुए कहा गया है कि जहां सरस्वती, यमुना और गंगा का संगम होता है, वहां स्नान करने वाले ब्रह्मपद को प्राप्त करते हैं। यह यज्ञ की महिमा ही है, जिसके कारण मान लिया गया है, कि जो प्रयाग की धरती पर पैर भी धर लेता है, उसे हर कदम पर अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। प्रयाग में लगभग 70 हजार तीर्थ उपस्थित हैं। पद्म पुराण के अनुसार अपने घर में मृत्युशय्या पर पड़ा व्यक्ति भी, यदि दूर भी रहते प्रयाग का नाम स्मरण कर ले तो ब्रह्मलोक का भागी होता है। 'मत्स्य पुराण' में कहा गया है कि युग चक्र पूर्ण होने पर जब रुद्र (शिव) पृथ्वी का विनाश करते हैं, प्रयाग तब भी नष्ट नहीं होता है, क्योंकि विष्णु वेणीमाधव, शिव अक्षय वटवृक्ष के रूप में और स्वयं

ब्रह्मा छत्र में उपस्थित रहते हैं। शूलपाणि स्वयं वट की रक्षा करते हैं और यहां मृत्यु प्राप्त करने वाले को सीधे शिवलोक की प्राप्ति होती है। पुराणों के अनुसार यदि कोई व्यक्ति संगम की मिट्टी का भी अपने शरीर पर स्पर्श करा लेता है, तो समस्त पापों से मुक्त हो जाता है और गंगा स्नान के बाद स्वर्ग के पुण्य का भागीदार बन जाता है। यहां यदि किसी को मृत्यु प्राप्त होती है, तो वह जन्म और मृत्यु के सांसारिक चक्र के बंधनों से मुक्त हो जाता है। कुंभ मेला लाखों- करोड़ों लोगों को एक साथ आने का अवसर देता है। यहाँ विभिन्न साधु-संत, नागा साधु और अन्य धार्मिक गुरुओं के दर्शन होते हैं, जिससे श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक ज्ञान और प्रेरणा मिलती है। यह एक ऐसा समय है जब लोग सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर भगवान की भक्ति में लीन होते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक अद्भुत उदाहरण है। यहां विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों से लोग आते हैं, जिससे विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का संगम होता है। मेले में लोक नृत्य, संगीत, कला और शिल्प का प्रदर्शन किया जाता है, जो इसे एक रंगीन उत्सव बनाता है। अगर धर्म-कर्म स हटकर बात करें तो कुंभ मेला सामाजिक समरसता का प्रतीक है। यहाँ सभी जाति, धर्म और वर्ग के लोग एक साथ आते हैं और मिलकर प्रार्थना करते हैं। यह एकता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देता है। कुंभ मेले के पहले दिन बड़ी संख्या में सिखों ने भी स्नान किया। इसमें आने वाले लोग कई तरह के त्याग और अनुशासन का पालन करते हैं। वे साधारण जीवन जीते हैं, जमीन पर सोते हैं और सात्विक भोजन करते हैं। यह उन्हें अपने अंदर की शांति और संयम को बढ़ाने में मदद करता है। अगर आप आएंगे तो कुंभ मेला हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो लाखों लोगों को आध्यात्मिक शांति और आनंद प्रदान करता है। यह एक ऐसा पर्व है जो हिन्दू संस्कृति की विविधता और गहराई को दर्शाता है। ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार, जब बृहस्पति कुंभ राशि में प्रवेश करते हैं और सूर्य मेष राशि में होते हैं, तब पूर्ण कुंभ का आयोजन होता है। यह खगोलीय संयोग इस मेले को और भी खास बना देता है। यह विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक और शांतिपूर्ण जमावड़ा होगा, जिसमें विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लोग एक साथ आते हैं। कुंभ मेला केवल एक धार्मिक आयोजन भी नहीं है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक अनुभव भी है। यहाँ साधु, संत, नागा बाबा और अन्य धार्मिक गुरुओं के दर्शन होते हैं, जो अपने ज्ञान और अनुभवों से लोगों को प्रेरित करते हैं। यह मेला आत्म-खोज और आध्यात्मिक विकास का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। देश के विभिन्न हिस्सों से लोग आते हैं और अपनी पारंपरिक कला, संगीत, नृत्य और वेशभूषा का प्रदर्शन करते हैं। कुंभ मेले का वैश्विक पर्यटन से संबंध है। दुनिया भर से पर्यटक इस मेले की भव्यता और आध्यात्मिकता को देखने के लिए आते हैं। यह भारत की संस्कृति और विरासत को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करने का एक शानदार अवसर है। आपको इतने विशेष मेले का हिस्सा तो बनना ही चाहिए। ■

विज्ञान में महिलाएं

उनका योगदान और सशक्तिकरण

हर साल, दुनिया विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाती है। यह विशेष दिन केवल एक फैंसी शीर्षक नहीं है; यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित में महिलाओं के अद्भुत योगदान को पहचानने और उनकी सराहना करने का दिन है। यह भी एक समय है कि वे उन बाधाओं को स्वीकार करें जो वे सामना करते हैं और इन क्षेत्रों में लिंग अंतर को बंद करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। जैसा कि हम आईडीडबयुजीआईएस का निरीक्षण करते हैं, हम एक ऐसी कहानी को फिर से लिख रहे हैं, जहां रूढ़िवादिता अब शानदार दिमाग को सीमित नहीं करती है और लिंग जिज्ञासा को प्रतिबंधित नहीं करता है।

विजय गर्ग

इस दुनिया में, ग्राउंडब्रेकिंग खोजें विविध दृष्टिकोणों से निकलती हैं। हम एक ऐसे भविष्य की कल्पना करते हैं जहां विज्ञान को लड़कों के लिए के रूप में लेबल नहीं किया जाता है और महिला और लड़कियां इस समावेशी और अभिनव दुनिया को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आइए हमने जो प्रगति की है, उसे मनाएं और एक ऐसे भविष्य की दिशा में काम करना जारी रखें, जहां हर कोई, चाहे लिंग की परवाह किए बिना, विज्ञान की रोमांचक दुनिया में पनप सकता है। विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस का इतिहास 2011 में वापस, महिलाओं की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र आयोग ने एक बड़ी समस्या पर ध्यान दिया- पर्याप्त महिलाएं विज्ञान में नहीं जा रही थीं, भले ही उनके पास बहुत कुछ था। यह लोगों को बात कर रहा था और 2013 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा

ने यह सुनिश्चित करने के लिए एक योजना पर सहमति व्यक्त की कि महिलाओं और लड़कियों के पास विज्ञान में एक ही मौके थे। इसमें कुछ साल लग गए, लेकिन 2015 में, उन्होंने आधिकारिक तौर पर 11 फरवरी को विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों का पहला अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया, इनोवेशन: द मिसिंग लिंक फॉर वीमेन इन साइंस थीम पर ध्यान केंद्रित किया। विज्ञान विषयों में महिलाओं और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस: प्रगति का जश्न मनाना, चुनौतियों को संबोधित करना हर साल, आईडीडबयुजीआईएस एक नया विषय चुनता है जो दिखाता है कि महिलाएं विज्ञान में कैसे प्रगति कर रही हैं। अतीत में, हमने 2018 में सस्टेनेबल डेवलपमेंट में लैंगिक समानता के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और नवाचार और कल के वैज्ञानिकों के लिए निवेश जैसी चीजों के बारे में बात की। 2023 में कल के वैज्ञानिकों के लिए निवेश। इस बार, हमारा ध्यान सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में महिला नेतृत्व पर है। हम उन महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करना चाहते हैं जो महिला वैज्ञानिक बेहतर भविष्य बनाने में निभाते हैं। विज्ञान के लिए महिलाओं का योगदान पूरे इतिहास में, महिलाओं और लड़कियों के दिमाग से शानदार विचारों ने वैज्ञानिकों ने विभिन्न क्षेत्रों में जिस तरह से विचार किया है, उसे आकार दिया है। उनके शोध, आविष्कार, नवाचारों और खोजों ने हमारे जीवन को समृद्ध किया है और एक आशाजनक भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। उनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, वैज्ञानिक क्षेत्रों में उतनी महिलाएं नहीं हैं जितनी पुरुष हैं। महिलाओं ने विज्ञान के लिए अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए अलग-अलग समय पर बाधाओं को पार कर लिया है, जब सही वातावरण प्रदान करने पर उनकी क्षमता साबित होती है। दुर्भाग्य से, विज्ञान में महिलाओं द्वारा कई ग्राउंडब्रेकिंग योगदान की अनदेखी की गई है। एक उदाहरण रोज़ालिंड फ्रैंकलिन है, एक रसायनज्ञ जिसका काम डीएनए की संरचना की खोज में महत्वपूर्ण था। उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद, मान्यता केवल मरणोपरांत आ गई। अन्य अनसंग नायिकाओं में नासा में अफ्रीकी-अमेरिकी गणितज्ञ कैथरीन जॉनसन, डोरोथी वॉन और मैरी जैक्सन शामिल हैं। उन्होंने शुरुआती अंतरिक्ष मिशनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, पुस्तक और फिल्म, हिडन फिगर्स को प्रेरित किया, जिसने उनकी उपलब्धियों को सुर्खियों में लाया। मैडम क्यूरी से, केवल 8 वर्षों के भीतर भौतिकी और रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली एकमात्र महिला, शकुंतला देवी को, जो अपनी अविश्वसनीय गणितीय क्षमताओं के लिए भारत के मानव कंप्यूटर के रूप में जानी जाती है। हम बात करते हैं विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं के बारे में। यूनेस्को के अनुसार, दुनिया भर में 30% शोधकर्ता महिलाएं हैं। हालांकि, यह प्रतिशत एक ही क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में एक असमानता को उजागर करता है। इसे पहचानते हुए, विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस को विज्ञान में महिलाओं के योगदान को स्वीकार करने और प्रोत्साहित करने और अनुसंधान में लिंग अंतर को पाटने के लिए मनाया जाता है।

विज्ञान-प्रौद्योगिकी में महिलाओं की सूची

1. जनाकी अम्मल उसके बिना, चीनी आज जिस तरह से मीठा हो सकता है। वह पेशे से एक साइटोजेनेटिक और वनस्पति विज्ञानी थीं, जिन्होंने समाज द्वारा लगाए गए रूढ़िवादी नियमों को तोड़ दिया और हजारों पौधों की प्रजातियों पर शोध करने में उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। वह चीनी को मीठा बनाने के पीछे का कारण खोजने वाला था। उसे उस नवाचार का श्रेय दिया जाता है और उसे 1977 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। वह केरल में साइलेंट वैली हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट के बारे में विद्रोही थी। उन्होंने हजारों पुष्प प्रजातियों के गुणसूत्रों पर व्यापक अध्ययन भी किया और वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय योगदान दिया।
2. अन्ना मणि वह 1918 में पैदा हुई थी। फिर, महिलाओं को विज्ञान का अध्ययन करने या तथाकथित सामाजिक नियमों को तोड़ने की अनुमति नहीं थी। वह इन सभी नियमों को धता बताते हुए आगे बढ़ी और मौसम विज्ञान में अपना शोध शुरू किया। उन्होंने प्रो सीवी रमन की प्रतिभा के तहत भी काम किया और मौसम विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। सौर विकिरण, पवन ऊर्जा और ओजोन पर उनके शोध ने उन्हें वैश्विक अभिनय लाया। वह भारतीय मौसम विभाग की उप निदेशक बन गईं।
3. टेसी थॉमस 1963 में जन्मी, उन्होंने मानक सामाजिक नियमों को तोड़ दिया और एक भारतीय मिसाइल परियोजना के प्रमुख के प्रमुख वैज्ञानिकों में से एक बन गईं। कल्पना कीजिए कि कैसे वह रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) के एक पुरुष-प्रधान वैज्ञानिक क्षेत्र में एक शानदार योगदानकर्ता बनने में कामयाब रही। वह ऐसी महत्वपूर्ण परियोजना का नेतृत्व करने वाली पहली भारतीय वैज्ञानिक थीं, जो अब हमारे पास मौजूद सैन्य शक्ति के स्तर को बढ़ाती थीं। वह एक गृहिणी हैं जो अग्नि IV और वी मिसाइलों के विकास के लिए परियोजना निदेशक बनने के लिए चली गईं। यह 5,500 किमी की सीमा के साथ एक ठोस-ईंधन अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल है।
4. कल्पना चावला उसका नाम कौन नहीं जानता है? वह हरियाणा, भारत से पहली भारतीय मूल महिला एरोनॉटिकल इंजीनियर थी। वह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन जाने के लिए नासा की चुनी हुई इंजीनियर थी। वह राकेश शर्मा के बाद अंतरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय और दूसरी भारतीय हैं। अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में कल्पना चावला उनके योगदान के कारण, उन्हें कांग्रेस के स्पेस मेडल ऑफ ऑनर, नासा के प्रतिष्ठित सेवा पदक और नासा स्पेस फ्लाइट मेडल से सम्मानित किया गया। दुर्भाग्य से, वह सभी 6 अन्य चालक दल के सदस्यों के साथ एसटीएस -107 मिशन में कोलंबिया स्पेस शटल में लौटते समय मर गई। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वह एक शौकीन भरतनाम डांसर, एक पेशेवर स्कूबा गोताखोर और एक कराटे चैंपियन थी।
5. शकुंतला देवी जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, उसे भारत के मानव कंप्यूटर के रूप में जाना जाता है। कुछ सेकंड के भीतर जटिल गणितीय संचालन करने की उसकी उल्लेखनीय शक्ति ने पूरी दुनिया को चकित कर दिया। उसने एक बार 2010 अंकों के साथ एक नंबर की 23वीं रूट की गणना की। उसने किसी भी उपकरण या यहां तक कि एक कलम का उपयोग किए बिना मानसिक रूप से किया और 1977 में सबसे तेज कंप्यूटर यूनीवैक की तुलना में 12 सेकंड तेजी से किया। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि शकुंतला देवी के पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी। जब वह 6 साल की थी, तब उसने अपनी गणितीय क्षमताओं का प्रदर्शन किया।
6. मैरी क्यूरी मैरी क्यूरी, वें में एक अग्रणी रेडियोधर्मिता का ई क्षेत्र, विज्ञान में महिलाओं के लिए एक आइकन बना हुआ है। वह नोबेल पुरस्कार जीतने वाली पहली महिला थीं और दो अलग -अलग वैज्ञानिक क्षेत्रों - भौतिकी और रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार जीतने वाली एकमात्र महिला बनी हुई हैं। उनकी खोजों ने चिकित्सा उपचारों में प्रगति की नींव रखी और महिला वैज्ञानिकों की भविष्य की पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका ये सभी नाम इस बात का प्रमाण हैं कि महिलाओं ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये नाम केवल भारतीय मूल के हैं। इस सूची की लंबाई की कल्पना करें जब महिला वैज्ञानिकों और आविष्कारकों के अंतर्राष्ट्रीय नाम शामिल हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी प्रतिभा पूल को बढ़ाएगी और भविष्य में उत्कृष्ट परिणाम प्रदान करेगी। यह महिलाओं को सशक्त भी करेगा और उन्हें विज्ञान के अपने संबंधित क्षेत्रों को चुनने के लिए प्रोत्साहित करेगा। यह विज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और गणित में महिलाओं के महत्व और भूमिका को समझने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा, सामाजिक भूमिका मॉडल को जन्म देगा और भविष्य की पीढ़ी को उसी को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

सुरों की साधना करते थे भीमसेन जोशी

सुरों की साधना करने वाले पंडित भीमसेन जोशी का 24 जनवरी को निधन हो गया था। उनको देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया गया था। भीमसेन जोशी ने 11 साल की उम्र में घर छोड़ दिया था।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की दुनिया में बड़े नामों में शामिल पंडित भीमसेन जोशी का 24 जनवरी को निधन हो गया था। सुरों की साधना करने वाले पंडित जोशी कला के प्रति खुद को समर्पित कर दिया था। उनको देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया गया था। कला जगत के अलावा पूरी इंसानियत के लिए पंडित जोशी की जिंदगी प्रेरक है। उनके परिवार में कोई भी संगीत से नहीं जुड़ा था। तो आइए जानते हैं उनकी डेथ एनिवर्सरी के मौके पर पंडित भीमसेन जोशी के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार

कर्नाटक के गड़ग में 04 फरवरी 1922 को भीमसेन जोशी का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम गुरुराज जोशी अंग्रेजी, कन्नड़ और संस्कृत के विद्वान थे। उनके परिवार में कोई भी संगीत से जुड़ा नहीं था। उन्होंने महज 19 साल की उम्र में पहली बार संगीत की प्रस्तुति दी थी। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में पंडित जोशी का योगदान बेहद अहम था।

संगीत की शिक्षा

बता दें कि पंडित जोशी बचपन से ही गायन का शौक रखते थे। वह स्कूल से लौटने के बाद एक ट्रांजिस्टर की दुकान पर बैठ जाते थे, वहीं पर ट्रांजिस्टर पर बजते रिकॉर्ड को सुनकर गाने का प्रयास करते थे। दुकानदार ने इस बात की जानकारी उनके पिता को दी थी कि उनका बेटा बहुत अच्छा गाना गाता है। बताया जाता है कि 11 साल की उम्र में पंडित जोशी गुरु की खोज में घर छोड़कर चले गए थे। इस दौरान उन्होंने सवाई गंधर्व से संगीत की शिक्षा ली थी। जब वह सवाई गंधर्व के पास संगीत की शिक्षा लेने गए, तो सवाई गंधर्व ने उनसे कहा कि वह संगीत सिखाएंगे, लेकिन इससे पहले तुमने जो भी सीखा है, वह तुम्हें भूलना होगा। इस बात की स्वीकृति मिलने के बाद ही सवाई गंधर्व ने उनको संगीत की शिक्षा दी।

संगीत की पहली प्रस्तुति

महज 19 साल की उम्र में पंडित भीमसेन जोशी ने पहली संगीत की प्रस्तुति दी थी। फिर वह बतौर रेडियो कलाकार मुंबई में काम करने लगे थे। फिर 20 साल की उम्र में उनका पहला एल्बम रिलीज हुआ था। पंडित जोशी ने कई फिल्मों के लिए भी गाने गाए। उनको पूरिया, दरबारी, भोगी, मालकौंस, ललित, तोड़ी, भीमपलासी, यमन और शुद्ध कल्याण आदि राम पसंद थे। पंडित जोशी की अद्भुत प्रतिभा की वजह से उनको पद्म भूषण और पद्म विभूषण जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था। वहीं साल 2008 में पंडित जोशी को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से नवाजा गया था।

मृत्यु

वहीं 24 जनवरी 2011 को पंडित भीमसेन जोशी का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया था। ■

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE
105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

विशेष

भारत के भविष्य को लेकर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की दृष्टि

नेताजी की विचारधारा और व्यक्तित्व के बारे में कई व्याख्याएं उपलब्ध हैं लेकिन अधिकांश विद्वानों का मानना है कि हिंदू आध्यात्मिकता ने उनके व्यस्क जीवन के दौरान उनके राजनीतिक और सामाजिक विचारों का आवश्यक हिस्सा बनाया, हालांकि इसमें कट्टरता या रूढ़िवाद की भावना नहीं थी।

प्रहलाद सबनानी

जब नेताजी सुभाषचंद्र बोस के विचारों को भारत के तात्कालीन समकक्ष राजनैतिक नेताओं ने स्वीकार नहीं किया तब नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारत के भविष्य को लेकर अपनी दूरदृष्टि को धरातल पर लाने के उद्देश्य से अपने कार्य को न केवल भारत बल्कि अन्य देशों में निवास कर रहे भारतीयों के बीच में फैलाने का प्रयास किया। उन्होंने इन देशों में निवासरत भारतीयों को एकत्रित कर उन्हें सैनिक प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया और इस कार्य में उन्हें अपार सफलता भी मिली क्योंकि 29 दिसम्बर 1943 को अंडमान द्वीप की राजधानी पोर्टब्लेयर में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा लहरा दिया था। भारतीय इतिहास में भारत भूमि का यह हिस्सा प्रथम आजाद भूभाग माना जाता है। हालांकि, भारत को आजादी मिलने की घोषणा 15 अगस्त 1947 को हुई थी।

नेताजी के रूप में लोकप्रिय सुभाष चंद्र बोस एक प्रखर राष्ट्रवादी, एक प्रभावी वक्ता, एक कुशल संगठनकर्ता, एक विद्रोही देशभक्त और भारतीय इतिहास के सबसे महान स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। उन्हें ब्रिटिश सरकार के खिलाफ निर्णायक युद्ध लड़ने और 21 अक्तूबर 1943 को एक स्वतंत्र सरकार बनाने का श्रेय दिया जाता है। वर्ष 1927 में नेताजी को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महासचिव के रूप में नियुक्त किया गया और उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए कांग्रेस के साथ काम किया, लेकिन समय के साथ कांग्रेस में उपजी गुटबाजी और गांधी जी के साथ वैचारिक मतभेदों के कारण वह कांग्रेस से अलग हो गए और एक स्वतंत्र संगठन के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सशस्त्र स्वतंत्रता संग्राम लड़ा। नेताजी भारतीय इतिहास में अपने समय के सबसे सम्मानित नेताओं में से एक थे। वह असीम देशभक्त और भारत के विकास और भविष्य के बारे में अत्यंत कृतसंकल्प थे। सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को बंगाल प्रांत के कटक, उड़ीसा संभाग में प्रभावती दत्त बोस और अधिवक्ता जानकीनाथ बोस के एक बंगाली कायस्थ परिवार हुआ था। उनके प्रारंभिक प्रभावों में उनके हेडमास्टर, बेनी माधव दास और स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाएं शामिल थीं। बाद में 15 वर्षीय बोस में आध्यात्मिक चेतना जग गई थी। नेताजी की विचारधारा और व्यक्तित्व के बारे में कई व्याख्याएं उपलब्ध हैं लेकिन अधिकांश विद्वानों का मानना है कि हिंदू आध्यात्मिकता ने उनके व्यस्क जीवन के दौरान उनके राजनीतिक और सामाजिक विचारों का आवश्यक हिस्सा बनाया, हालांकि इसमें कट्टरता या रूढ़िवाद की भावना नहीं थी। खुद को समाजवादी कहने वाले नेताजी का मानना था कि भारत में समाजवाद का मूल स्वामी विवेकानंद के विचार है। आपका मानना था कि 'भगवदगीता' अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष की प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत है। सार्वभौमिकता पर स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं, उनके राष्ट्रवादी विचारों और सामाजिक सेवा और सुधार पर उनके जोर ने नेताजी को उनके बहुत छोटे दिनों से प्रेरित किया था।

इस संदर्भ में नेताजी के कई उद्धरण आज भी याद किए जाते हैं। मात्र अडिग राष्ट्रवाद और पूर्ण न्याय और निष्पक्षता के आधार पर ही भारतीय स्वतंत्र सेना का निर्माण किया जा सकता है।; यह अकेला रक्त है जो स्वतंत्रता की कीमत चुका सकता है। तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा! वर्ष 1939 की शुरुआत में उनके द्वारा गढ़ा गया नारा था- ब्रिटेन की कठिनाई भारत का अवसर है। नेताजी ने अपने प्रारम्भिक जीवनकाल से ही अपने चिंतन और अपनी कार्यशैली से भारत को स्वाधीन और सशक्त हिंदू राष्ट्र बनाने की दिशा मे कदम बढाया था। भविष्य दृष्टा और राजनीतिज्ञ होने के नाते नेताजी का विश्वास था कि राष्ट्र जागरण और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रियाओ को साथ लेकर ही आगे बढ़ना चाहिए। नेताजी की स्पष्ट सोच थी कि स्वतंत्र भारत, सार्वभौम संप्रभुता युक्त शक्तिशाली और विश्ववंद्य होना चाहिये तथा सदियो तक पुन:परतंत्रता न आये, ऐसे प्रयास राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त होने के साथ ही प्रारम्भ होने चाहिए और इसीलिए भारत के नागरिकों में राष्ट्रीयता का भाव जगाना चाहिए। स्वाधीन भारत की सुरक्षा के लिये नेताजी सेना के तीनो अंगों, थल सेना, जल सेना और नभ सेना का आधुनिक ढंग से निर्माण और विकास करना चाहते थे। जब वे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान दूसरी बार जर्मनी गये थे तब नेताजी ने यूरोप के कई देशों का दौरा करके आधुनिक युद्ध प्रणाली का गहराई के साथ अध्ययन किया, इतना ही नही उन्होने जर्मनी मे युद्ध बंदियों और स्वतंत्र नागरिको की जो आजाद हिंद फौज बनाई, उसे पूर्ण रूप से आधुनिक अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित किया और उसे इस प्रकार का प्रशिक्षण दिलाया कि वह संसार की सर्व शक्तिमान सेनाओं के समकक्ष मानी जाने लगी। आजाद हिंद फौज दुनिया के फौजी इतिहास का एक सफल अध्याय बन गया।

ब्रिटिश शासन काल मे भारत के तात्कालिक राजनैतिक नेतृत्व के पास भारत के आर्थिक विकास, सामाजिक एवं सांस्कृतिक ताने बाने के सम्बंध में अपनी कोई दूरदृष्टि नहीं थी। येन केन प्रकारेण केवल राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना एकमेव लक्ष्य था। ऐसे समय में भारत में देश का शासनतंत्र ब्रिटिशों के हाथों में था। अंग्रेजी शासकों की इच्छा अनुसार ही भारत में शासन चलता था। इसलिये, तत्कालीन ब्रिटिश शासकों की राजनीति की पृष्ठभूमि का उद्देश्य एक ही था कि भारत का अधिक से अधिक शोषण किया जाये एवं भारत की जनता को गुलाम बनाकर, अज्ञानता के अंधेरे मे रखकर, अधिक से अधिक समय तक अपना अधिकार जमाकर रखा जाए। ताकि, भारत सदा सदा के लिये गुलामी की जंजीरो मे जकड़ा रहे, स्वतंत्र होने का विचार भी न कर सके। परंतु, ऐसी मनोवृत्ती होने के उपरांत भी ब्रिटिशों को भारत से खदेड़ दिया गया। परंतु ब्रिटिश शासकों ने कूटनीतिक चाल चलते हुए भारत का विभाजन हिंदुस्तान एवं पाकिस्तान के रूप में कर दिया। पंडित जवाहरलाल नेहरू और मोहम्मद अली जिन्ना के हाथों मे राजनीति की डोर आ गई। नेताजी के क्रांतिकारी विचारों एवं दूरदृष्टि का उपयोग लगभग नहीं के बराबर ही हो पाया था। जबकि नेताजी के विचारों में दूरदर्शिता थी एवं उनकी भारत के बारे में सोच बहुत ऊंची थी। नेताजी ने भारत के भविष्य के बारे में बहुत उल्लेखनीय योजनाओं पर अपने विचार विकसित कर लिए थे एवं आगे आने वाले समय के लिए इस संदर्भ में योजनाएं भी बना ली थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारत मे जगह-जगह पर अनेक छोटी छोटी रियासतें थी। सभी राजे महाराजे अपनी राज्य सीमा के अंदर राज्य चलाना और कमजोर राज्यों पर आक्रमण करके उसे अपने राज्य में मिला लेना ही श्रेयस्कर कार्य मानते थे। राज्य का विस्तार करना, यही राजतंत्र की शासन प्रणाली थी, पूरा भारत इसी प्रणाली का अभ्यस्त था, प्रजातंत्र की जानकारी भारतीयों के पास नहीं थी। अत: प्रजातंत्र का विषय भारतीयों के लिए नया था। अंग्रेजों के शासन काल में ऐसा आभास दिया गया था कि भारत में प्रजातंत्र अंग्रेजों की देन है। अंग्रेज ठहरे कूटनीतिज्ञ और स्वार्थी वे भारत को स्वतंत्र करना चाहते ही नही थे। इसीलिये भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति पर, ब्रिटिश, भारतीय सत्ताधारियो को प्रजातंत्र में कूटनीति से कैसे राज्य करना, लोभ, छलावा और स्वार्थ का पाठ पढ़ाकर, भारत का विभाजन कर, प्रजातंत्र की राजनीति सिखाकर ही भारत से गये थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात दुर्भाग्य से भारत का राजनैतिक नेतृत्व नेताजी जैसे राष्ट्रवादी ताकतों के स्थान पर ऐसे लोगों के हाथों में आया जिन्होंने अंग्रेजों द्वारा चलायी जा रही नीतियों का अनुसरण करना ही उचित समझा। भारतीय सनातन संस्कृति के अनुपालन को बढ़ावा ही नहीं दिया गया जबकि उस समय भी भारत में हिंदू बहुसंख्यक थे। प्रजातंत्र के नाम पर अल्पसंख्यकों के हितों को सुरक्षित रखने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई।

अंडमान एक स्वतंत्र द्वीप समूह था इसका इतिहास भी बहुत लंबा है। अभी अभी मोदी सरकार ने अंडमान निकोबार द्वीप समूह का नाम बदलकर श्री विजय पुरम रख दिया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय अंडमान द्वीप भारत के ही हिस्से मे आये थे और अंडमान द्वीप पर भारत का अधिपत्य हो यह स्वीकार करने की नेहरू की बिलकुल इच्छा नही थी। परन्तु, सरदार वल्लभभाई पटेल ने जिद ठान ली थी कि अंडमान चूंकि भारतीय शहीदों पर हुए जुल्मो का प्रतीक है इसलिये स्वाधीनता सेनानियों को, हिंदू राष्ट्र को ही अंडमान मिलना चाहिये। पटेल की जिद के कारण ही अंडमान भारत के हिस्से मे आया। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये जितने भी स्वाधीनता संग्राम सेनानी अंग्रेजों के हाथ लगते थे उन सबको भारत की पावन भूमि से कोसों दूर समुद्र के बीच टापू पर स्थित अंडमान मे अंग्रेजो द्वारा सेल्यूलर जेल का निर्माण करके हजारो क्रांतीवीरो को कालकोठरी मे रखा जाता था। इस पुण्य भूमि को सर्वप्रथम नेताजी ने मुक्त कराया था।

वर्ष 1938 में ही भारत मे योजना समिति का गठन कर पुनर्निमाण सम्बंधी योजनाओं को क्रियान्वित करने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया था। केवल भारत मे ही नही बल्कि भारत से बाहर, जर्मनी मे भी योजना आयोग की स्थापना करके भारत के पुनर्निर्माण के लिये योग्य व्यक्तियों को प्रशिक्षण देना प्रारंभ कर दिया गया था। प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये एक विद्यालय की स्थापना भी की गई थी। इस प्रकार, नेताजी ने परिश्रमी, कर्मठ, ईमानदार तथा अनुभवी व्यक्तियों का एक अच्छा खासा दल तैयार कर लिया था, लेकिन तत्कालीन भारतीय प्रशासन द्वारा स्वाधीन भारत में प्रशासन के लिये इन प्रशिक्षित व्यक्तियों का कोई उपयोग नही किया गया। भारत के नागरिक प्रशासन की जो तस्वीर नेताजी ने बनाई थी, यदि उसमे रंग भर दिए जाते तो आज भारत की तस्वीर ही कुछ और होती। ■

शब्दों की दुनिया में दृश्यों का दबाव

इंटरनेट समाज के लिए एक चमत्कार रहा है। इसने जमीनी स्तर पर कई सकारात्मक बदलाव देखे हैं। कैमरे वाले मोबाइल फोन के माध्यम से इंटरनेट की उपलब्धता ने लोगों के लिए संभावनाओं के कई दरवाजे खोल दिए। डिजिटल दुनिया जहां समाज को गई, वहीं इसने कई जटिलताओं को आसान बना दिया। अनुसार, मार्च 2024 तक भारत में 6.4 करोड़ 2.27 गीगाबाइट प्रति कल्पना लोक में ले पीआइबी की एक रपट इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं माह है। आबादी का 5.69 फीसद दूरसंचार घनत्व है।

विजय गर्ग

परिणामस्वरूप देश सोशल मीडिया का उदय और प्रभाव एक नई ऊंचाई पर पहुंच गया इसलिए, सोशल मीडिया में बड़े पैमाने पर भागीदारी अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है। इंटरनेट, कैमरे और सोशल मीडिया का संयोजन मानव जीवन में एक आवश्यक वस्तु बन गया है। शुरुआत में सोशल मीडिया पर दिखने का चलन शब्दों के माध्यम से था, खासकर तब, जब लोग फेसबुक और ट्विटर पर अपने विचार लिखते थे, लेकिन अब इसे वीडियो में बदला जा रहा है। फेसबुक और इंस्टाग्राम के माध्यम से सोशल मीडिया के मेटा समूह के मंच पर इसे रील कहा जाता है।

आम आदमी की सामान्य प्रवृत्ति खुद को लोगों के सामने पेश करने की होती है। इसलिए सोशल मीडिया पर रौल, शार्ट्स, फ्रेंक और सेल्फी आदि के रूप में पेश किया रहा है, जिसका मुख्य लक्ष्य इंटरनेट की दुनिया में वायरल होना या सुर्खियों में आना है, ताकि समाज में मशहूर हुआ सके। निस्संदेह, रचनात्मकता के कई रूपों को सार्वजनिक स्थान मिल रहा है और इसके कई पहलू, जैसे नृत्य, गायन, अभिनय, संगीत प्रस्तुति, खाना बनाना, पेंटिंग, गेमिंग, जादू, गणितीय खेल, चुटकुले, कविताएं, राजनीतिक व्यंग्य, स्टंट, बाइक चलाना, लोक कला, पालतू जानवरों से जुड़ी कलाएं, बच्चों की शरारतें और इसी तरह की अन्य गतिविधियां बिना किसी टीवी चैनल के, समाज तक पहुंच रही हैं। नए कलाकार, वक्ता, शिक्षक, पत्रकार, ब्लागर, यूट्यूबर और फ्रैंक स्टार इस माध्यम से प्रसिद्धि पा रहे हैं। हजारों वीडियो से करोड़ों रुपए की कमाई हो रही है। इस पूरी प्रक्रिया के माध्यम से एक नया रोजगार भी उभर रहा है, जिसे भारतीय अर्थव्यवस्था लिए सहायक माना जा सकता है। समाज में सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर के रूप में एक नया सम्मानजनक दर्जा सामने आया है। अगर सोशल मीडिया न होता तो उनमें से कई लोग दूसरों का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाते। हालांकि, यह भी है कि समाज केवल वायरल होने की मंशा से उभर रही हैं। इसमें एक रोल बना कर उसका प्रचार करके सबसे अधिक लोगों तक पहुंच बनाने की मंशा सर्वोपरि है। अधिक से अधिक दर्शक और प्रशंसक पाने के लिए उनमें अंधी प्रतिस्पर्धा चल रही है, है, क्योंकि उसी के अनुसार अधिक से अधिक कमाई में वृद्धि भी हो रही है। कारण, समाज में कई ऐसे कार्य हो रहे हैं, जिनकी नागरिक मूल्यों को देखते हुए अनुमति नहीं दी जा सकती है।

कई फ्रैंक स्टार आम आदमी को चिढ़ाते हैं, और इस तरह नागरिकों की निजता से समझौता होता है। सेल्फी लेने और स्टंट वीडियो बनाने के कारण दुर्घटनाएं हो रही हैं। पहाड़ पर चढ़ना, पानी में गोता लगाना और ऊंचाई से कूद कर स्टंट वीडियो बनाने की प्रवृत्ति खतरनाक है। इसके परिणामस्वरूप लोगों को गंभीर चोटें आई हैं। यहां तक कि मौत भी हो रही है। समाज में सहज मानवीय व्यवहार में यह कोई सामान्य घटना नहीं है, जहां वेब-सामग्री निर्माता अनैतिक, धोखाधड़ी वाले तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं, वहीं दर्शक भी इस तरह की नकली और अनुत्पादक सामग्री देख कर धोखा खा रहे हैं और समय भी बर्बाद कर रहे हैं। डिजिटल जागरूकता की कमी और भाषाई बाधाओं के कारण साइबर अपराधी लोगों को लूट रहे हैं। डिजिटल कंपनियों द्वारा निर्दोष उपयोगकर्ताओं से उनकी सूचित सहमति के बिना व्यक्तिगत डेटा चुरा कर दुरुपयोग किया जा रहा है।

सोशल मीडिया खबरों के उपभोग का पसंदीदा तरीका बन गया है। फिक्की द्वारा दैनिक समाचार उपभोग पर किए गए एक अध्ययन के अनुसार, डिजिटल मीडिया 79 फीसद, टेलीविजन समाचार चैनल 61 फीसद और मुद्रित समाचार पत्र पत्र 57 फीसद के साथ सर्वोच्च स्थान पर हैं। कोई भी इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि डिजिटल मीडिया की प्रवृत्ति बहुत अस्थिर है और संपादकीय भूमिका न्यूनतम इसलिए, लोगों को प्रामाणिक समाचार प्रदान करके उनकी सेवा करने की भावना से हर स्तर पर समझौता प्रदान किया जा रहा है, जहां प्राथमिक उद्देश्य अधिकतम दर्शक प्राप्त करना है। इसलिए पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य, जो समाचार की गुणवत्ता की कीमत और समझौतावादी इरादों के साथ टेलीविजन युग में उच्च टीआरपी हासिल करके मूल लाभ की ओर बढ़ना शुरू हुआ था, वह डिजिटल मीडिया में चरम पर पहुंच गया है। नतीजतन, नए मीडिया में पत्रकारिता की सहज भाषा के साथ एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और पारदर्शी समाचार की उपलब्धता न्यूनतम होती जा रही है। सामग्री का शीर्षक और वीडियो के थंबनेल मीडिया की नैतिकता सनसनी पैदा करने के लिए डिजाइन किए जा रहे हैं। अध्ययन डिजिटल मीडिया में सत्ता और धन के केंद्रीकरण को भी दर्शाते हैं। नए मीडिया विज्ञापन ने कुल विज्ञापन 152 फीसद योगदान दिया और 2023 में इसमें कुल विज्ञा न विज्ञापन वृद्धि का 105 फीसद हिस्सा शामिल था। यह तीव्र वृद्धि पारंपरिक मीडिया के सभी विज्ञापन लाभों को दबाने के लिए तैयार है। इसी तरह, यदि डिजिटल दुनिया को एक खुला संसाधन मानें तो उस स्थिति में मनोरंजन शैलियों में रील, शार्ट्स और पर्याप्त लंबाई के वीडियो जरिए हिंदी और भोजपुरी संयुक्त रूप से हावी हैं, जहां ये 70 फीसद की हिस्सेदारी कर रहे हैं, पंजाबी आठ फीसद, तमिल पांच फीसद, तेलुगु पांच फीसद, कन्नड़ तीन फीसद, मराठी दो फीसद, मलयालम एक फीसद और हरियाणवी का भाग भी एक फीसद है। हो सकता है कि लाभ में इतना अंतर अधिक आबादी और संबंधित भाषाओं में पर्याप्त वीडियो सामग्री की उपलब्धता के कारण हो है, लेकिन एक बार कोई प्रभुत्व स्थापित हो जाने के बाद, वैकल्पिक शक्ति के लिए उठना हमेशा तरह अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है। ये वीडियो बिना किसी संपादकीय हस्तक्षेप के उपलब्ध हैं। स्टैटिस्टा के एक अध्ययन के अनुसार भारत में एक व्यक्ति औसतन प्रतिदिन छह घंटे से ज्यादा आनलाइन समय बिताता है। ■

गांवों की खुशहाली मापने के लिए बनाएं

नए मानदंड

घरेलू खर्च के इस नए आंकड़े को देखते वक्त हमें इस संदर्भ पर भी ध्यान देना होगा। बहरहाल हमें यह भी ध्यान देना होगा कि ग्रामीण इलाकों में खाद्यान्न विशेषकर गेहूं और चावल पर खर्च में निजी या पारिवारिक खर्च में कमी आई है।

ीरतु त्रिवेदी

दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था वाले अपने देश की पहचान उसके गांव रहे हैं। देश सिर्फ ग्रामीण संस्कृति और कृषि व्यवस्था के लिए ही नहीं, सहकार और शिल्पकारी के लिए भी वैश्विक पहचान रखते रहे हैं। सोने की चिड़िया कहे जाने वाले दौर में भी भारतीय कृषि और आर्थिकी के आधार गांव ही रहे। यह बात और है कि अंग्रेजी शासन के दौरान से भारतीय गांवों का पतन शुरू हुआ। इसके बाद भारतीय गांव गरीबी और मजबूरी के पर्याय माने जाने लगे। लेकिन घरेलू उपयोग और खर्च के ताजा सर्वेक्षण की रिपोर्ट बता रही है कि गांवों की आर्थिक तस्वीर बदलने लगी है। भारत सरकार के सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की ओर से घरेलू उपयोग और खर्च के लिए कराए गए सर्वेक्षण के अनुसार शहरी और ग्रामीण इलाकों में घरेलू खर्च का जो पहले अंतर रहता था, वह लगातार घटता चला गया है।

अगस्त 2023 से जुलाई 2024 के दौरान किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक, ग्रामीण और शहरी भारत में प्रति व्यक्ति औसत मासिक खर्च 4,122 रुपये और 6,996 रुपये हो गया है। जबकि पहले यानी 2022 से 2023 के बीच यह खर्च क्रमश: 3,773 रुपये और 6,459 रुपये थाय् यानी शहरी और ग्रामीण भारत की प्रति व्यक्ति खर्च दर में बड़ा अंतर था। मोटे तौर पर यह आंकड़ा बता रहा है कि हाल के दिनों में ग्रामीण इलाकों में आर्थिक समृद्धि पहले की तुलना में बढ़ी और उस लिहाज से खर्च भी बढ़ा है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की 68 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है, जबकि 32 प्रतिशत आबादी शहरों में है। स्वाधीन भारत में विशेषकर उदारीकरण के बाद जिस तरह का विकास मॉडल हमने अपनाया, उसमें शहरी विकास पर सबसे ज्यादा फोकस रहा, ग्रामीण विकास या तो रस्मी रहा या फिर उस पर फोकस शहरों की तुलना में कम रहा। शहरों की ओर रोजगार और जीवन सुविधाएं केंद्रित होती चली गईं। शिक्षा के भी बेहतर अवसर गांवों की तुलना में शहरों की ओर बढ़ते गए। इस लिहाज से ग्रामीण क्षेत्रों से सबसे ज्यादा पलायन रोजगार और शिक्षा के लिए हुआ। फिर जिन परिवारों के पास सहूलियतें बढ़ीं, उन परिवारों ने अपनी हैसियत और बजट के लिहाज से मुफीद पाए जाने वाले शहरों की ओर रहने के लिए रूख किया। यही वजह है कि शहरी और ग्रामीण आबादी का जो अनुपात आबादी के समय था, वह आज बदल चुका है। आजादी के वक्त तकरीबन 80 फीसद से ज्यादा लोग गांवों में रहते थे, अनुमान है कि वह घटते-घटते अब साठ और पैंसठ फीसद के बीच आ गई है। रिकॉर्ड पर ग्रामीण आबादी का इतना बड़ा हिस्सा भले ही गांवों में बसता हो, लेकिन हकीकत यह है कि इसमें एक बड़ा हिस्सा शहरों में रोजी-रोटी और शिक्षा के लिए कभी शौकिया तो कभी मजबूरीवश रहने को मजबूर है। इसलिए रिकॉर्ड की तुलना में वास्तविक ग्रामीण आबादी अब और भी कम हो चुकी है। घरेलू खर्च के इस नए आंकड़े को देखते वक्त हमें इस संदर्भ पर भी ध्यान देना होगा। बहरहाल हमें यह भी ध्यान देना होगा कि ग्रामीण इलाकों में खाद्यान्न विशेषकर गेहूं और चावल पर खर्च में निजी या पारिवारिक खर्च में कमी आई है। इसकी वजह यह है कि सरकार की ओर से तमाम तरह की योजनाएं और सामाजिक कल्याण कार्यक्रम चल रहे हैं। मुफ्त खाद्यान्न योजना समेत कई अन्य सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के जरिये मुफ्त में मिल रही चीजों की कीमतों को ध्यान में रखें तो घरेलू खर्च के ये आंकड़े ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए क्रमश: 4,247 रुपये और 7,078 रुपये हो जाते हैं। मौजूदा कीमतों के संदर्भ में देखें तो शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति खर्च पर औसत आठ और नौ प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। साल 2011-12 में शहरी और खपत खर्च के बीच 84 प्रतिशत का अंतर था, जो 2022-23 में घटकर 71 प्रतिशत हो गया। जो अब 70 फीसद ही रह गया है। इन आंकड़ों से ग्रामीण इलाकों में बढ़ती खुशहाली की तसवीर सामने आती है। दिलचस्प यह है कि इस आंकड़े में खाने-पीने के अलावा की चीजों पर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में यह खर्च 60 और 53 प्रतिशत रहा। इसका मतलब साफ है कि अब ग्रामीण इलाकों में भी वाहन, कपड़े, बिस्तर, जूते, मनोरंजन एवं टिकाऊ आदि सामानों पर खर्च बढ़ा है। इससे साफ है कि उपभोक्तावाद ने ग्रामीण इलाकों पर भी जोरदार दस्तक दी है। वैसे ऑनलाइन स्टोर से गांवों में खरीददारी बढ़ी है और उनके डिलीवरी एजेंटों की बाइकें अब ग्रामीण इलाकों का भी खूब चक्कर लगा रही हैं।

पिछले साल मई में रिजर्व बैंक ने भी ग्रामीण इलाकों में बढ़ती खपत खर्च को लेकर ऐसे ही आंकड़े जारी किए थे। इन्हीं आंकड़ों के आधार पर रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने उम्मीद जताई थी कि भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी रहेगी और देश की जीडीपी दर मे 7.3 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हो सकती है। लेकिन रिजर्व बैंक ने इसी रिपोर्ट में ग्रामीण इलाकों में बढ़ते कर्ज को लेकर भी रिपोर्ट जारी की थी। सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय की रिपोर्ट में भी कर्ज को लेकर चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। इसके मुताबिक, कर्ज लेने में ग्रामीण क्षेत्रों के लोग कहीं ज्यादा आगे हैं। गांवों में प्रति एक लाख लोगों में 18,714 लोग ऐसे हैं, जिन्होंने कोई न कोई कर्ज ले रखा है, जबकि शहरों में यह आंकड़ा 17,442 प्रति लाख ही है। साफ है कि उपभोक्तावाद ग्रामीण संस्कृति को बदलने में बड़ी भूमिका निभा रहा है। कर्ज कभी गांवों के लोगों के लिए सिरदर्द होते थे, इसलिए वहां बचत केंद्रित आर्थिकी पर जोर था। लेकिन अब इसमें गिरावट आई है। इसका मतलब साफ है कि गांवों में खर्च भले ही बढ़ रहा है, लेकिन यह भी सच है कि गांवों की तसवीर अभी कम से कम वैसी नहीं हो पाई है, जिस स्तर पर शहरी तसवीर है।

गांवों का समृद्ध होना जरूरी है। हाल के दिनों में जनसंख्या को बढ़ाने और न बढ़ाने को लेकर सियासी तौर पर अपने-अपने तर्क दिए जा रहे हैं। इन तर्कों के अपने आधार हो सकते हैं। लेकिन इससे शायद ही कोई इनकार करेगा कि भारत के शहरों की सांस अगर फूल रही है तो इसकी बड़ी वजह उनकी ओर बेतहाशा हो रहा पलायन और उस बड़ी जनसंख्या के लिए इस्तेमाल हो रहे उपभोक्ता वस्तुओं का बड़ा योगदान है। भारत में आबादी बढ़ाने की जगह आबादी के समन्वित और संतुलित वितरण की जरूरत ज्यादा है। ग्रामीण इलाकों में आबादी को रोकने की कोशिश होनी चाहिए। ग्रामीण आबादी को बुनियादी शिक्षा और रोजगार गांवों या उसके आसपास ही उपलब्ध कराने की नीतियों पर आगे बढ़ना चाहिए। अगर ऐसा होगा तो निश्चित तौर पर आबादी को संतुलित किया जा सकेगा। तब गांव आबादी विहीन नहीं होंगे और शहरों पर आबादी का असंतुलित बोझ नहीं बढ़ेगा। गांवों में हो रही खपत और खर्च को लेकर आ रहे आंकड़ों का पहला असर यही होना चाहिए कि गांवों में आबादी रूके। लेकिन ऐसा होता नजर नहीं आ रहा है। ग्रामीण इलाके में बढ़ते खर्च से अव्वल तो गांवों में रोजगार के साधन बढ़ने चाहिए। लेकिन इस दिशा में ठोस बदलाव होते नजर नहीं आ रहे। बेशक आज आजादी के बाद के दौर की तरह के बदहाल गांव नहीं हैं। बेशक शहरों जितना उसे बिजली नहीं मिलती, लेकिन पहले की तुलना में अब गांवों को भी बिजली ज्यादा मिल रही है। गांवों में भी उपभोक्ता वस्तुएं पहुंची हैं। इससे बेशक पारंपरिक संस्कृति चोट भले ही पहुंची हो। यह भी सच है कि ग्रामीण विकास और दूसरी कल्याण योजनाओं के जरिए गांवों में केंद्रीय और राज्य सरकारों की ओर से पैसा जा रहा है। लेकिन यह भी सच है कि उस पैसे का एक बड़ा हिस्सा जमीनी स्तर पर खर्च होने की बजाय नौकरशाही और राजनीतिक रिश्वत के रूप में शहरी इलाकों में ही रूक रहा है और वहीं निवेशित हो रहा है। ■

वीआईपी कल्चर खत्म करता है लोगों के बीच

समानता का भाव

मौनी अमावस्या पर महाकुंभ में भगदड़, जिसके चलते तीस लोगों की मौत ने ऐसे मौकों पर कुछ विशेष लोगों को मिलने वाले वीआईपी सम्मान पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। सवाल यह पूछा जा रहा है कि हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों और आयोजनों में क्यों भक्तों के बीच भेदभाव होता है? महाकुंभ में 29 जनवरी को मौनी अमावस्या के स्नान के दिन भगदड़ के कारण जो दर्दनाक हादसा हुआ उसने वीआईपी कल्चर पर एक बार फिर से नये सिरे से बहस छेड़ दी है। सवाल उठ रहा है कि जब गुरुद्वारे में वीआईपी दर्शन नहीं, मस्जिद में वीआईपी नमाज नहीं, चर्च में वीआईपी प्रार्थना नहीं होती है तो सिर्फ मंदिरों में कुछ प्रमुख लोगों के लिये वीआईपी दर्शन क्यों जरूरी हैं? क्या इस पद्धति को खत्म नहीं किया जाना चाहिए, जो हिन्दुओं में दूरियों का कारण बनता है? खैर, योगी सरकार ने मौनी अमावस्या के दिन हुए हादसे से सबक लेते हुए वीआईपी सिस्टम पर रोक लगा दी है।

संजय सक्सेना

महाकुंभ के लिये सभी वीआईपी पास भी रद्द कर दिये गये। काश यह व्यवस्था पहले ही खत्म कर दी जाती। यह इसलिये भी जरूरी था क्यों भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ 07 जनवरी को ही धार्मिक स्थलों पर होने वाली वीआईपी व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े कर चुके थे। तो उन्हें ऐसे हादसे की उम्मीद भी नहीं रही होगी। उन्होंने कहा था कि कि वीआईपी व्यवस्था समानता के सिद्धांत के खिलाफ है और इसे धार्मिक जगहों से पूरी तरह समाप्त कर देना चाहिए। उपराष्ट्रपति ने आगे कहा कि धार्मिक स्थल समानता के प्रतीक हैं, जहां हर व्यक्ति ईश्वर के सामने बराबर होता है वहीं उन्होंने जोर देकर ये भी कहा कि वीआईपी दर्शन की अवधारणा भक्ति के खिलाफ है। यह एक असमानता का उदाहरण है, जिसे तत्काल समाप्त किया जाना चाहिए। वहीं, उन्होंने धर्मस्थलों पर समानता को स्थापित करने की बात कही थी।

धनखड़ ने अपने संबोधन कहा था कि धार्मिक स्थलों को समानता के प्रतीक के रूप में देखा जाना चाहिए। जब किसी को विशेषाधिकार दिया जाता है, या वीआईपी या वीवीआईपी का दर्जा दिया जाता है, तो यह समानता के विचार का अपमान है। इस दौरान उन्होंने कर्नाटक के एक धर्मस्थल का उदाहरण भी बताया, जो समानता का संदेश देता है। तब उपराष्ट्रपति ने कहा था कि पिछले कई सालों में धार्मिक स्थलों के बुनियादी ढांचे के विकास में एक सकारात्मक बदलाव आया। वहीं, उन्होंने कहा कि ये विकास केवल भौतिक सुधार नहीं हैं, बल्कि हमारी सभ्यता और सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण कदम भी हैं। हाल यह है कि कई मंदिरों के भीतर तो वहीं का स्टाफ और पुरोहित ही धन उगाही करके भक्तों को वीआईपी सुविधा प्रदान करने से नहीं चूकते हैं। ऐसे भक्तों को बिना लाइन के और मंदिर का प्रोटोकॉल तोड़कर गर्भगृह में प्रवेश कराकर भी दर्शन करा दिये जाते हैं। आम श्रद्धालु घंटों कतार में खड़े रहते हैं, जबकि वीआईपी को सीधे गर्भगृह में प्रवेश मिल जाता है। बड़े मंदिरों में वीआईपी पास या दान के बदले विशेष दर्शन की व्यवस्था होती है, जबकि साधारण भक्तों को धक्का-मुक्की झेलनी पड़ती है। वीआईपी भक्तों को विशेष प्रसाद, बैठने की जगह और पुजारियों का अलग से आशीर्वाद मिलता है, जबकि आम भक्त को कुछ ही सेकंड में दर्शन कर आगे बढ़ने को कहा जाता है।

तीर्थ स्थलों और गंगा स्नान में वीआईपी संस्कृति की बात कि जाये तो महाकुंभ मेले प्रयागराज, हरिद्वार या वाराणसी जैसे तीर्थ स्थलों पर आम श्रद्धालुओं को अपनी बारी का इंतजार करना पड़ता है, लेकिन वीआईपी के लिए अलग घाट बना दिए जाते हैं।जहां आम लोग भीड़ में संघर्ष करते हैं, वहीं खास लोगों के लिए विशेष स्नान व्यवस्था, सुरक्षा घेरा और सुविधाएं मुहैया कराई जाती हैं। कई बार वीआईपी के स्नान के लिए आम श्रद्धालुओं को घंटों रोका जाता है, जिससे

भीड़ में अफरा-तफरी तक मच जाती है। महाकुंभ हादसे की असली वजह क्या थी, ये तो न्यायिक जांच के बाद ही पता चलेगा लेकिन सवाल ये है कि जहां करोड़ों लोग जुट रहे हों, वहां आम श्रद्धालुओं की असुविधा को बढ़ाकर वीआईपी स्नान जैसी व्यवस्था क्यों? वीआईपी स्नान के नग्न प्रदर्शन की टीस महाराज प्रेमानंद गिरि के शब्दों में भी दिखी जब उन्होंने कहा कि प्रशासन का पूरा ध्यान वीआईपी पर था। आम श्रद्धालुओं को उनके हाल पर छोड़ दिया गया था। उनका आरोप है कि पूरा प्रशासन वीवीआईपी की जी-हुजूरी में लगा रहा, तुष्टीकरण में लगा रहा। वीआईपी की भी आस्था होती है, इससे कहां कोई इनकार कर सकता है लेकिन आम लोगों की कीमत पर वीआईपी ट्रीटमेंट क्यों? अगर हजारों करोड़ रुपये खर्च किए गए तो वीआईपी लोगों के लिए कुछ ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं की गई कि उनके मूवमेंट की वजह से आम श्रद्धालुओं को दिक्कत न हो? आम श्रद्धालु15 से 20 किलोमीटर पैदल चलकर स्नान करने पहुंचे और कथित वीआईपी गाड़ियों के रेले के साथ सीधे तट तक पहुंचे, ये तो आम श्रद्धालुओं में रोष, खींझ और असंतोष पैदा करने वाला ही होगा। भगदड़ से एक दिन-दो दिन पहले तक ऐसी खबरें आ रही थीं कि पीपे के तमाम पुलों को आम श्रद्धालुओं के लिए बंद कर दिया गया ताकि कथित वीआईपी अपने वीआईपीपने का प्रदर्शन कर सकें। वैसे वीआईपी कल्चर का दायरा काफी बड़ा है। वीआईपी कल्चर धार्मिक स्थलों तक ही नहीं सीमित है। लोकतंत्र से आस्था तक, हर जगह कुछ लोगों को कई मौकों पर विशेषाधिकार मिल ही जाता है। लोकतंत्र के मूल सिद्धांत कहते हैं कि सभी नागरिक समान हैं, लेकिन व्यवहार में कुछ लोग 'विशेष' हो जाते हैं, फिर चाहे वह सड़क पर हों, सरकारी दफ्तर में, अस्पताल में, या फिर मंदिर में! इसी प्रकार से अक्सर बड़े नेताओं और अधिकारियों की सुरक्षा के नाम पर ट्रैफिक रोका जाता है, जबकि आम जनता घंटों जाम में फंसी रहती है। अस्पतालों में वीआईपी वार्ड अलग से बनाए जाते हैं, जबकि आम मरीजों को बिस्तर तक नहीं मिलता। एयरपोर्ट और रेलवे स्टेशनों पर वीआईपी यात्रियों के लिए विशेष सुविधाएं होती हैं, जबकि आम जनता लंबी कतारों में खड़ी रहती है। वीआईपी कल्चर एक नासूर की तरह है। इसीलिये हर सरकार वीआईपी कल्चर खत्म करने के वादे और बात करती है, लेकिन असल में इसे बनाए रखने के नए तरीके ढूंढे जाते हैं। मंदिरों और तीर्थ स्थलों में भी यह भेदभाव खत्म होना चाहिए, क्योंकि भगवान के दरबार में वीआईपी और आम आदमी का भेद न्यायसंगत नहीं हो सकता। सबसे बड़ी बात यह है कि जब तक जनता खुद इस संस्कृति को स्वीकार करती रहेगी, तब तक वीआईपी कल्चर खत्म नहीं होगा। बदलाव तभी आएगा जब लोग अपने अधिकारों को समझेंगे और भक्ति से लेकर लोकतंत्र तक समानता की मांग करेंगे। अनेक धर्मस्थलों में 400-500 रुपए तक का अतिरिक्त शुल्क लेकर मंदिरों में देवताओं के विग्रह के अधिकतम निकटता तक जल्दी पहुंचा जा सकता है। यह व्यवस्था शारीरिक और आर्थिक बाधाओं का सामना करने वाले वीआईपी प्रवेश शुल्क देने में असमर्थ साधारण भक्तों के प्रति असंवेदनशील है। इससे शुल्क देने में असमर्थ भक्तों से भेदभाव होता है। विशेष रूप से इन वंचित भक्तों में महिलाएं तथा बुजुर्ग अधिक बाधाओं का सामना करने वाले शामिल हैं। ■

भारत के लिये खतरा है पाक-बांग्लादेश की नजदीकियां

बड़ी सच्चाई है कि पाक का जन्म ही भारत विरोधी मानसिकता से हुआ है। ऐसे में अतीत से सबक लेते हुए भारत को अपनी सीमाओं की सुरक्षा को लेकर किसी तरह की चूक नहीं करनी चाहिए। किसी भी तरह की ढिलाई भारतीय सुरक्षा पर भारी पड़ सकती है।

ब्रजेश शर्मा

बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार प्रधानमंत्री शेख हसीना के अपदस्थ होने के बाद से लगातार भारत विरोधी गतिविधियों एवं कारगुजारियों एवं षडयंत्रों में संलग्न है, लगता है पाकिस्तान के शह पर बांग्लादेश का भारत विरोधी रवैया बढ़ रहा है। बांग्लादेश में लगातार भारत विरोधी मुहिम व अल्पसंख्यक हिन्दुओं एवं हिन्दू धर्मस्थलों पर हिंसक हमलों के बाद अब भारत सीमा पर बाड़बंदी को लेकर बेवजह का विवाद खड़ा किया जा रहा है। जबकि इस मुद्दे पर दोनों देशों के बीच पहले ही सहमति बनने के बाद बड़े हिस्से पर बाड़बंदी हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार बैठे बांग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्तनाबूंद कर रहे हैं। बांग्लादेश भारत की शांति व सद्भाव की कामना एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बांग्लादेश के लिये बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की शांति, सद्भावना एवं सौहार्द के लिये किसी तीसरे देश के दखल को बढ़ने न दिया जाये।

2015 में शेख हसीना के कार्यकाल के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ढाका पहुंचे। यहां दोनों नेताओं ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किया। इसे लैंड बाउंड्री एग्रीमेंट कहते हैं। इसी के अन्तर्गत भारत ने अब तक 3271 किलोमीटर सीमा कर बाड़बंदी कर दी है। अब केवल 885 किलोमीटर खुली सीमा की बाड़बंदी बाकी है। भारत बचे इलाके की बाड़बंदी कर रहा है लेकिन बांग्लादेश भारत की कोशिशों में अड़ंगा डाल कर दोनों देशों के बीच हुए समझौते को नकार रहा है। बांग्लादेश के गृह मंत्रालय ने ढाका में भारतीय उच्चायुक्त प्रणय वर्मा को बुलाकर विरोध व्यक्त किया तो इसके जवाब में भारत ने भी जवाबी कार्रवाई की और बांग्लादेश के डिप्टी हाईकमिश्नर नूरूल इस्लाम को तलब कर अपना विरोध जताया। भारत अपनी सीमाओं को अभेद्य बना रहा है। सीमाओं के खुले रहने से बांग्लादेश से लगातार अवैध घुसपैठ, हथियारों की तस्करी, ड्रग स्मगलिंग, नकली नोटों का कारोबार और आतंकवादी गतिविधियां लगातार हो रही हैं। विशेषत: पाकिस्तान अब अपनी आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने के लिये बांग्लादेश का उपयोग कर रहा है। दरअसल, बांग्लादेश की युनूस सरकार पाकिस्तान के इशारों पर पुराने मुद्दे उछाल कर विवाद को हवा दे रही है। निश्चित ही पाक से उसकी नजदीकियां लगातार बढ़ी हैं और वहां पाक सेना के अधिकारियों की सक्रियता देखी गई है, ऐसी जटिल होती स्थितियों में भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिये कदम उठाने ही चाहिए एवं अपनी सीमाओं को सुरक्षित बनाना ही चाहिए। पाकिस्तान पंजाब, जम्मू-कश्मीर व नेपाल के रास्ते आतंकवादियों को भारत भेजने की कोशिशें लगातार करता रहा है, अब उसने बांग्लादेश को भी इन गतिविधियों के लिये चुना है एवं बांग्लादेश से लगी भारत की खुली सीमा का दुरुपयोग कर रहा है तो भारत को सतर्क एवं सावधान

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि दोनों देशों के संबंध बिगाड़ने में पर्दे के पीछे पाकिस्तान की भूमिका हो। जिस बांग्लादेश को पाकिस्तानी क्रूरता से मुक्त कराकर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत ने तमाम कुर्बानियों के बाद जन्म दिया, उसका यह रवैया दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं, बल्कि विडम्बनापूर्ण कहा जाएगा।

होना ही चाहिए। पाकिस्तान से लगती सीमा पर तमाम चौकसी के बाद भी सीमा पार से जिस तरह जब-तब आतंकियों की घुसपैठ होती रहती है, वह गंभीर चिंता की बात है। जब पाकिस्तान से लगती सीमा भारत की सुरक्षा के लिए खतरा बनी हुई है, तब यह शुभ संकेत नहीं कि बांग्लादेश से लगी सीमा भी भारत के लिए चिंता का कारण बने। बड़ी सच्चाई है कि पाक का जन्म ही भारत विरोधी मानसिकता से हुआ है। ऐसे में अतीत से सबक लेते हुए भारत को अपनी सीमाओं की सुरक्षा को लेकर किसी तरह की चूक नहीं करनी चाहिए। किसी भी तरह की ढिलाई भारतीय सुरक्षा पर भारी पड़ सकती है। भारत की उदारता को बांग्लादेश हमारी कमजोरी न मान ले, इसलिए उसे बताना जरूरी है कि भारत से टकराव की कीमत उसे भविष्य में चुकानी पड़ सकती है। यह भी कि संबंधों में यह कसैलापन, दौगलापन एवं टकराव लंबे समय तक नहीं चल सकता। उसकी यह कटुता उसके लिये ही कालांतर घातकएवं विनाशकारी साबित हो सकती है। यह विडंबना ही है कि नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस से क्षेत्र में शांति व सद्भाव की जो उम्मीदें थी, उसमें उन्होंने मुस्लिम कट्टरपंथ को आगे करके निराश ही किया है। उनकी सरकार लगातार विघटनकारी, अड़ियल व बदमिजाजी का रुख अपनाए हुए है, दोनों देशों के संबंध बिगाड़ने में पर्दे के पीछे पाकिस्तान की भूमिका को साफ-साफ देख जा रहा है। जबकि शेख हसीना शासनकाल में भारत और बांग्लादेश के संबंध सामान्य थे तो भारत बांग्लादेश को विश्वास में लेकर बाड़बंदी कर रहा था लेकिन अब यूनुस सरकार लगातार उकसाने वाली कार्रवाई कर रही है। उसने पाकिस्तानियों का बांग्लादेश में प्रवेश आसान कर दिया है तो पाक के बांग्लादेश को भारत विरोधी प्लेटफॉर्म के रूप में इस्तेमाल करने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। इसी के चलते बांग्लादेश की भारत विरोधी बयानबाजी और कारगुजारी से दोनों देशों के संबंधों में जबरदस्त कड़वाहट आ चुकी है। बावजूद इसके गत दिसम्बर में भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने अपनी ढाका यात्रा के दौरान बांग्लादेश को आश्वस्त किया था कि भारत उसका दोस्त बना हुआ है और व्यापार, ऊर्जा, बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी के मामलों में रिश्ते पहले की तरह बरकरार रहेंगे। उस समय ऐसा लगा था कि दोनों पक्षों ने सीमा पर स्थिति को शांत कर लिया है। यूनुस सरकार ने भारत विरोधी तत्वों को न केवल हवा दी है बल्कि उनको उग्र कर दिया है। जेल में बंद कई भारत विरोधी तत्वों को बेल दे दी गयी है, ये ही तत्व भारत में अस्थिरता फैलाने की साजिश रच रहे हैं। लिहाजा भारत के लिये बॉर्डर पर घेराबंदी अत्यावश्यक हो गयी है। राजनीतिक आग्रह, पूर्वाग्रह एवं दुराग्रह के चलते यूनुस सरकार शेख हसीना के पिता की विरासत को निपटाने एवं धुंधलाने की कोशिशों में लगी हुई है। कट्टरपंथी तत्व जनाक्रोश के चलते अपनी सुविधा का मुहावरा गढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। भारत में पहले से ही लाखों बांग्लादेशी अवैध रूप से रह रहे हैं लेकिन ढाका द्वारा आतंकवादियों और दोषी ठहराए गए इस्लामी कट्टरपंथियों की रिहाई के बाद भारत द्वारा बॉर्डर पर कंटीले तारों को लगाने की कोशिश का बांग्लादेश सरकार द्वारा कड़ा विरोध दर्शा रहा है कि पाकिस्तान की तरह बांग्लादेश भी भारत में अस्थिरता, अशांति एवं अराजकता फैलाना चाहता है। बांग्लादेश बाड़ लगाने के समझौते का सम्मान करने के बजाय उसकी समीक्षा करने की बात करके उसमें रौड़ा अटकाना चाह रहा है। वह उन स्थानों पर कंटीले तारों वाली बाड़ लगाने का खास तौर पर विरोध कर रहा है, जहां से बड़े पैमाने पर घुसपैठ और तस्करी होती है और यही से आतंकवादी गतिविधियों को संचालित करने की संभावनाएं हैं। इसके कुछ पुष्ट प्रमाण भी मिले है। इस संदर्भ में बांग्लादेश वैसे ही कुतर्क एवं बेतूके तथ्य प्रस्तुत कर रहा है, जैसे सीमा सुरक्षा के भारत के प्रयत्नों पर पाकिस्तान करता रहता है। हैरानी नहीं कि यह बांग्लादेश से पाकिस्तान की हालिया नजदीकी किसी बड़ी दुर्घटना या आतंकी हमले का सबब बन जाये। भारत इसकी अनदेखी नहीं कर सकता। भारत को यह देखना होगा कि कहीं ये दोनों देश मिलकर उसके खिलाफ कोई ताना-बाना तो नहीं बुन रहे हैं? निश्चित रूप से पिछले दिनों बांग्लादेश से रिश्तों में जिस तरह से अविश्वास एवं कडवाहट उपजी है, उसके चलते भारत अपनी सुरक्षा चिंताओं को नजरअंदाज नहीं कर सकता। भारत के लिए यही उचित है कि वह पाक-बांग्लादेश के संभावित गठजोड़ से सावधान रहे। भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिये कदम उठाने ही चाहिए। बीएसएफ और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश यानी बीजीबी में कई बार बातचीत के बाद बाड़बंदी मुद्दे पर सहमति बन चुकी है। लेकिन बांग्लादेश भारत की सदाशयता एवं उदारता के बावजूद टकराव के मूड में नजर आता है। ■

चिंताजनक

सुंदरवन की बाघ पीड़ित विधवा महिलायें

देवेश चतुर्वेदी

सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान एक विशाल तटीय मैंग्रोव वन है जो भारत एंव बंग्लादेश के बीच साझा है। सुंदरवन का नाम सुंदरी यानि हेरिटिएरा माइनर नामक मैंग्रोव पौधे से पड़ा है। सुंदरबन को उसके अद्वितीय मैंग्रोव वनों के लिए 1987 में यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया हुआ है। सुंदरवन नैसर्गिक सुन्दरता एवं वन्य जीव की वजह से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह जंगल दुनिया के सबसे बड़े डेल्टा में स्थित है जो गंगा पदमा और ब्रह्मपुत्र नामक तीन नदियों द्वारा निर्मित है। सुंदरवन दुनिया का एकमात्र मैंग्रोव टाइगर लैंड है। यहाँ इंसान एवं जानवर एक दूसरे के बहुत समीप जीवन व्यतीत करते हैं। जंगलों के बीच बनी बस्तियों में हजारों ग्रामीण रहते हैं जो लकड़ी और शहद इकट्ठा करके एवं मछली पकड़ कर अपनी आजीविका चलाते हैं। यहाँ सैकड़ों आदमखोर बाघ घूमते हैं इसलिए इस जंगल में मानव एवं पशु के बीच संघर्ष निरंतर जारी रहता है। जिसका भयावह नतीजा है यहाँ पर बसा विधवा पारा अर्थात विधवा महिलाओं की बस्ती जहाँ बाघों द्वारा मारे जाने वाले व्यक्तियों की विधवा पत्नियां रहती हैं। इस जंगल में मनुष्य एवं जीवों के बीच संघर्ष दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है क्योंकि आवास की कमी बढ़ती आबादी एवं उपजाऊ भूमि यहाँ लोगों को बस जाने को आकर्षित कर रहे हैं। यहाँ प्रति वर्ष लगभग 80 से 100 लोग बाघ के शिकार हो जाते हैं। कई बार लोगों के शव तक नहीं मिलते हैं एवं इन्हें लापता व्यक्ति घोषित कर दिया जाता है। सुंदरवन क्षेत्र में लगभग 3000 बाघ विधवाएं रहती हैं जिनके पति बाघों द्वारा मारे जा चुके हैं। सुंदरवन के जिस क्षेत्र में बाघ विधवाएं रहती हैं उसको विधवा पारा एवं उनके पतियों को बाघों द्वारा मारे जाने के कारण उन्हें बाघ विधवा कहकर संबोधित किया जाता है। समाज के अंधविश्वासी लोग हमेशा महिलाओं को दोषी ठहराने के तरीके खोज ही लेते हैं। यहाँ भी समाज में बाघ विधवा होना शापित माना जाता रहा है अंतत: इन्हें भी अपने पतियों के मौत का दोषी एवं अशुभ माना जाता है। इन्हें झींगा, केकड़ा एवं मछली पकड़ने जैसे पारंपरिक मत्स्य व्यवसाय करने से रोका जाता है। जीवन यापन के साधनों के अभाव में अनेक महिलाएं कोलकाता की तरफ पलायन करके फुटपाथ पर भीख मांगकर आपना जीवन व्यतीत करने लगती हैं या वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर कर दी जाती है। विडंबना यह है कि बाघ विधवाओं के चेहरे पर बेबसी साफ झलकती है फिर भी वे अपनी इस दयनीय अवस्था के लिए समाज को नहीं बल्कि अपने भाग्य को ही दोषी मानती हैं। आवश्यकता है कि समाज के हर वर्ग के व्यक्तियों को मिलकर धार्मिक अंधविश्वासों को दूर करने के प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा नहीं है कि बाघ विधवाओं के लिए कुछ भी नहीं हो रहा है कई गैर सरकारी संगठन बाघ विधवाओं के लिए काम कर रहे हैं एवं उन्हें वैकल्पिक आजीविका प्रदान करने का प्रयास कर रहे हैं। पर अभी भी जरूरतमंद विधवाओं के लाभ के लिए एवं उनके जीवन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए और अधिक प्रयास की आवश्यकता है। बाघ पीड़ित परिवारों की महिलाओं एवं बच्चों को जीवनयापन, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की व्यवस्था करना अत्यन्त आवश्यक है। बाघों के शिकार हुए अनेकों मामलों में शव नहीं मिलते ऐसी स्थिति में इनके विधवाओं को सरकार से मुआवजा मिलना अत्यन्त कठिन हो जाता है। ऐसे पीड़ित परिवारों के सदस्यों को मुआवजा ठीक से सही वक़्त पर मिले ऐसी व्यवस्था करना बहुत जरूरी है। सुंदरवन के डेल्टाई गाँव में ऐसी सैकड़ों विधवाएं हैं जो अपने अधिकारों के बारे में कुछ भी नहीं जानती हैं उन्हें इस बात से जागरूक कराया जाना चाहिए। सुंदरवन की इन विधवाओं को मधुमक्खी पालन, अगरबत्ती बनाना, रसोई, बागबानी, मुर्गी पालन, सिलाई, हस्तशिल्प आदि परियोजनाओं की व्यवस्था की जाने की और भी आवश्कता है जिससे वह मानव तस्करी एवं वेश्यावृत्ति के जाल में फंसने से दूर रह सकें। सुंदरवन में अच्छे विद्यालय, अस्पताल आदि की व्यवस्था मुफ्त में की जानी चाहिए ताकि उनके दैनिक जीवन स्तर में सुधार हो सके।

मुफ्त की होड़ में दिल्ली के बुनियादी मुद्दे गायब?

एडीटोरियल टीम

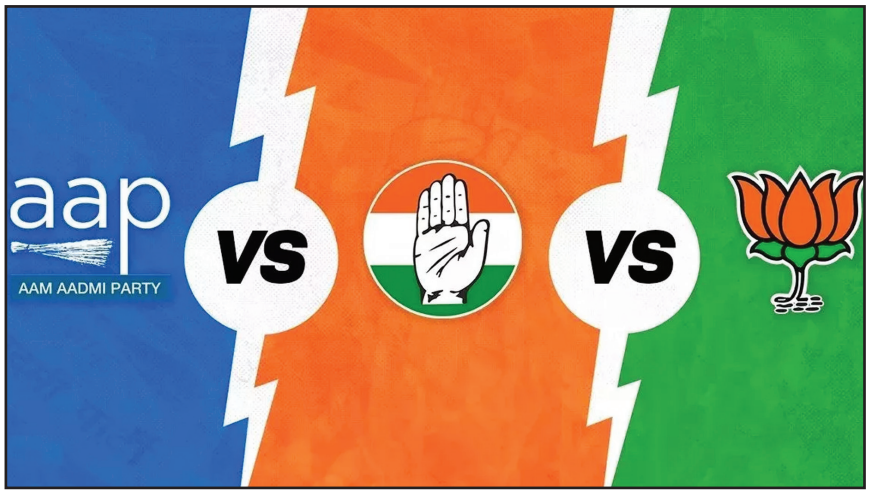

कांग्रेस, आम आदमी पार्टी एवं भारतीय जनता पार्टी -तीनों दलों ने अपने-अपने घोषणापत्र जारी किए हैं लेकिन उसमें दिल्ली से जुड़े जरूरी एवं बुनियादी मुद्दों के स्थान पर नगद एवं मुफ्त की सुविधाओं के ही अंबार लगे हैं। दिल्ली चुनाव में अधिकांश बहस तरह-तरह की मुफ्त सुविधाओं की अप्रासंगिक और अवांछित विषयों पर केंद्रित है। सड़क से लेकर सीवर तक, पर्यावरण से लेकर विकास तक दिल्ली के बुनियादी मुद्दे की जगह मुफ्त की सुविधाओं की होड़ ने दिल्ली के चुनाव को जिन त्रासद दिशाओं में धकेला है, वह न केवल दिल्ली बल्कि राष्ट्रीय राजनीति के लिये एक चिन्ता का बड़ा सबब बन रहा है। कांग्रेस, आम आदमी पार्टी एवं भारतीय जनता पार्टी -तीनों दलों ने अपने-अपने घोषणापत्र जारी किए हैं लेकिन उसमें दिल्ली से जुड़े जरूरी एवं बुनियादी मुद्दों के स्थान पर नगद एवं मुफ्त की सुविधाओं के ही अंबार लगे हैं। दिल्ली चुनाव में अधिकांश बहस तरह-तरह की मुफ्त सुविधाओं की अप्रासंगिक और अवांछित विषयों पर केंद्रित है। जल्दी ही दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे देश की राजधानी के चुनाव में इससे बेहतर की उम्मीद थी। चूंकि जरूरी मुद्दें नहीं उठ रहे हैं इसलिए भाषा भी निम्नस्तरीय बनी हुई है, दोषारोपण एवं छिद्रान्वेषण ही हो रहा है।

राजनीतिक दलों द्वारा अप्रासंगिक मुद्दों पर बात करने की एक खास वजह चुनावों की प्रक्रिया में मुफ्त की सुविधाएं एवं नगद राशि का बढ़ता आकर्षण है। भाजपा दिल्ली को विकसित एवं अत्यंत आधुनिक राजधानी बनाना चाहती है तो उसके लिए यह अवसर था कि वह अपनी भावी योजनाओं और भविष्य के खाके पर बात करती, लेकिन वह भी महिलाओं एवं मतदाताओं को आकर्षित करने के लिये बढ़-चढ़कर मुफ्त संस्कृति का सहारा ले रही है। कांग्रेस के लिए यह मौका था कि वे उन क्षेत्रों को रेखांकित करती जिनमें आप सरकार अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकी। वे मतदाताओं के समक्ष बेहतर विकल्प भी प्रस्तुत कर सकती थी। कांग्रेस को चाहिए था कि वह शीला दीक्षित के दौर में हुए दिल्ली के विकास को चुनावी मुद्दा बनाती, दिल्ली को पेरिस बनाने की बात को बल दिया जाता, लेकिन उसका प्रचार अभियान मुफ्त की सुविधओं के इर्दगिर्द ही घूम रहा है, जो एक विडम्बना एवं त्रासदी ही है। यह दुर्भाग्य की बात है कि दिल्ली चुनाव में ऐसा कुछ नहीं हो रहा है जो दिल्ली की बड़ी समस्याओं का समाधान करता हो। दिल्ली के मतदाताओं को मोटे तौर पर व्यक्तिगत हमले सुनने को मिल रहे हैं और ऐसे मुद्दों पर बात हो रही है जो दिल्ली को आगे ले जाने वाले एवं विकसित राजधानी बनाने वाले नहीं हैं। भारत को तेज आर्थिक विकास की आवश्यकता है, दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर देश की राजधानी के चुनाव को इसके लिए पूंजी, पर्यावरण और ऊर्जा की टिकाऊ वृद्धि सुनिश्चित करने पर केंद्रित रहना चाहिए। इससे जुड़ा एक मसला रोजगार तैयार करने का है। सबसे अहम मुद्दा दिल्ली का विकास एवं प्रदूषण मुक्त परिवेश का है। लेकिन सभी राजनीतिक दल इन मुद्दों से हटकर फ्री की सुविधाओं पर ही केन्द्रित है, भला दिल्ली में अच्छे दिन कैसे आयेंगे एवं विकास की तस्वीर कैसे बनेगी? कभी-कभी लगता है समय का पहिया तेजी से चल रहा है जिस प्रकार से घटनाक्रम चल रहा है, वह और भी इस आभास की पुष्टि करा देता है। पर समय की गति न तेज होती है, न रुकती है। हां चुनाव घोषित हो जाने से तथा प्रक्रिया प्रारंभ हो जाने से जो क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं हो रही हैं उसने ही सबके दिमागों में सोच की एक तेजी ला दी है। प्रत्याशियों के चयन व मतदाताओं को रिझाने के कार्य में तेजी आ गई है, लेकिन जनता से जुड़े जरूरी मुद्दों पर एक गहरा मौन पसरा है। न गरीबी मुद्दा है, न बेरोजगारी मुद्दा है। महंगाई, बढ़ता भ्रष्टाचार, बढ़ता प्रदूषण, राजनीतिक अपराधीकरण एवं दिल्ली का विकास जैसे ज्वलंत मुद्दे नदारद हैं। दिल्ली की मानसिकता घायल है तथा जिस विश्वास के धरातल पर उसकी सोच ठहरी हुई थी, वह भी हिली है। पुराने चेहरों पर उसका विश्वास नहीं रहा। अब प्रत्याशियों का चयन कुछ उसूलों के आधार पर होना चाहिए न कि मुफ्त की संस्कृति और जीतने की निश्चितता के आधार पर। मतदाता की मानसिकता में जो बदलाव अनुभव किया जा रहा है उसमें सूझबूझ की परिपक्वता दिखाई दे रही है लेकिन फिर भी अनपढ़ एवं गरीब मतदाता फ्री की सुविधाओं पर सोचता है और अक्सर उसी आधार पर वोट देता है। जबकि एक बड़ा मतदाता वर्ग ऐसा भी है जो उन्नत सड़के, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं को भी बेहतर देखना चाहता है। उसके लिये यमुना में बढ़ता प्रदूषण भी चिन्ता का एक कारण है। समय पर जल आपूर्ति न होना भी उसकी समस्याओं में शामिल है। चूंकि मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग योग्यता और व्यापक जनहित के मुद्दे पर नहीं करता, इसलिए वह मुफ्त की संस्कृति में डूबा है। इसलिये उसके जीवन स्तर में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं आता है, विकास तो बहुत पीछे रह जाता है। सब दल और उनके नेता सत्ता तक येन-केन-प्रकारेण पहुंचना चाहते हैं, लेकिन जनता को लुभाने के लिये उनके पास बुनियादी मुद्दों का अकाल है। जबकि दिल्ली अनेक समस्याओं से घिरी है, लेकिन इन समस्याओं की ओर किसी भी राजनेता का ध्यान नहीं है। बेरोजगारी एक विकट समस्या है, पर क्या कारोबार और निजी उद्यमों को बढ़ाए बिना केवल सरकारी नौकरियों के सहारे दिल्ली के युवाओं को रोजगार दिया जा सकता है? क्या सरकारी नौकरियां ही रोजगार हैं? क्या आप अपने कारोबार में किसी को उसकी उत्पादकता की परवाह किए बिना नौकरी पर रखना चाहेंगे? मगर सरकारी नौकरियों में यही होता है। क्या यह आम जनता के करों के पैसे का सही उपयोग है? जनता के मतों का ही नहीं, उनकी मेहनत की कमाई पर लगे करों का भी जमकर दुरुपयोग हो रहा है। राजनेताओं द्वारा चुनाव के दौरान मुफ्त बांटने की संस्कृति ने जन-धन के दुरुपयोग का एक और रास्ता खोल दिया है। हमारे चुनावी लोकतंत्र की सबसे बड़ी विडम्बना यही है कि बुनियादी मुद्दों की चुनावों में कोई चर्चा ही नहीं होती। मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, मुफ्त शिक्षा, मुफ्त चिकित्सा, महिलाओं के खातों में नगद सहायता पहुंचाने से लेकर कितनी तरह से मतदाता को लुभाने एवं लूटने के प्रयास होते हैं। न हवा शुद्ध, न पानी शुद्ध, सड़कों पर गड्ढे- इनके कारणों की कोई चर्चा नहीं। ■

बजट 2025: सर्वसमावेशी और दूरदर्शी बजट से भारत के निर्माण को मिलेगी गति

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मुताबिक, यह बजट भारत की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं का बजट है। यह हर भारतीय के सपनों को पूरा करने वाला बजट है। इसके माध्यम से उन्होंने युवाओं के लिए कई क्षेत्र खोले हैं।

आम बजट 2025 एक सर्वसमावेशी और दूरदर्शी बजट है। यह कई मायने में सर्वव्यापी और सर्वस्पर्शी भी है। खासकर ताजा बजट प्रस्तावों के माध्यम से मध्यम वर्ग को जो भारी कर राहत प्रदान किया गया है और आयकर छूट सीमा को बढ़ाकर 12 लाख रुपया तक कर दिया गया है, उससे अर्थव्यवस्था को विभिन्न कोणों से मजबूती मिलने के आसार प्रबल हैं। कुल मिलाकर यह आम आदमी का बजट है, जो गरीबों, युवाओं, अन्नदाता किसानों और नारी शक्ति को आर्थिक मजबूती प्रदान करता है।

अजय शर्मा

सच कहा जाए तो यह आम बजट विकसित भारत यानी हर क्षेत्र में श्रेष्ठ भारत के निर्माण की दिशा में मोदी सरकार की दूरदर्शिता का ब्लूप्रिंट है, जिसमें किसानों, गरीबों के साथ-साथ मध्यम वर्ग पर भी ध्यान दिया गया है। वहीं, महिला और बच्चों की शिक्षा, उनके पोषण व स्वास्थ्य पर भी फोकस किया गया है। इस बजट में स्टार्टअप, इनोवेशन और इन्वेस्टमेंट तक, यानी कि अर्थव्यवस्था की समुन्नति के हर क्षेत्र को समाहित किया गया है। इस प्रकार यह बजट मोदी सरकार के आत्मनिर्भर भारत का व्यापक रोडमैप है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मुताबिक, यह बजट भारत की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं का बजट है। यह हर भारतीय के सपनों को पूरा करने वाला बजट है। इसके माध्यम से उन्होंने युवाओं के लिए कई क्षेत्र खोले हैं। जिससे आम नागरिक विकसित भारत के मिशन को आगे बढ़ाने जा रहा है। यह बजट एक फोर्स मल्टीप्लायर है, जो बचत, निवेश, खपत और विकास को तेजी से बढ़ाएगा।

आमतौर पर बजट का फोकस इस बात पर होता है कि सरकारी खजाना कैसे भरा जाएगा, लेकिन यह बजट उसके ठीक उलट है। यह बजट देश के नागरिकों की जेब कैसे भरेगी, देश के नागरिकों की बचत कैसे बढ़ेगी और देश के नागरिक विकास में कैसे भागीदार बनेंगे... इस बात की चिंता करता है। इस बजट में सुधार हेतु कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। विशेष कर यह बजट देश के विकास में सिविल न्यूक्लियर एनर्जी का बड़ा योगदान सुनिश्चित करेगा। यूँ तो बजट में हर तरह से रोजगार के सभी क्षेत्रों को प्राथमिकता दी गई है, फिर भी मैं उन सुधारों की चर्चा करना उचित समझता हूं जो आने वाले समय में बड़ा बदलाव लाने वाले हैं। खासकर इंफ्रास्ट्रक्चर का दर्जा देने से भारत में बड़े जहाजों के निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। हम सभी जानते हैं कि शिप बिल्डिंग निर्माण सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला क्षेत्र है। वहीं, देश में पर्यटन विकास की बहुत संभावनाएं हैं। इसलिए पहली बार होटलों को इंफ्रास्ट्रक्चर के दायरे में लाकर 50 महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर होटल बनाए जाएंगे। इससे आतिथ्य क्षेत्र को ऊर्जा मिलेगी, जो रोजगार का बहुत बड़ा क्षेत्र है।

वहीं, इस बजट में एक करोड़ पांडुलिपियों के संरक्षण के लिए ज्ञान भारत मिशन शुरू किया गया है। इसके तहत भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रेरित एक राष्ट्रीय डिजिटल रिपोजिटरी बनाई जाएगी, यानी तकनीक का भरपूर उपयोग किया जाएगा। वहीं, इस बजट में किसानों के लिए की गई घोषणा कृषि क्षेत्र और पूरी ग्रामीण अर्थव्यवस्था में एक नई क्रांति का आधार बनेगी। किसान क्रेडिट कार्ड की सीमा बढ़ाकर 5 लाख रुपये की जाएगी, जिससे उन्हें और मदद मिलेगी। बता दें कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 1 फरवरी, 2025, दिन शनिवार को संसद में बजट पेश किया, जो उनका लगातार 8वां बजट था। यह बजट आर्थिक सर्वेक्षण के अनुरूप रहा। क्योंकि उन्होंने मिडिल क्लास को राहत देते हुए न्यू टैक्स रिजीम के तहत 12 लाख रुपये सालाना तक की इनकम को आयकर के दायरे से बाहर रखने का ऐलान किया। इससे नौकरीपेशा वर्ग के करोड़ों लोगों को फायदा होगा। वहीं, उन्होंने किसान और महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत करने पर जोर देते हुए कहा कि देश तेज गति से आगे बढ़ रहा है। हम दुनिया की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था हैं। स्वास्थ्य और रोजगार पर हमारा खास ध्यान है। युवाओं को रोजगार देना सरकार की प्राथमिकता है। इस बजट में प्रस्तावित विकास उपाय 10 व्यापक क्षेत्रों में हैं, जिनमें गरीबों, युवाओं, किसानों और महिलाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। केंद्रीय वित्त मंत्री ने यह भी कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से बढ़ रही है। पिछले 10 सालों के हमारे विकास ट्रैक रिकॉर्ड और संरचनात्मक सुधारों ने दुनियाभर का ध्यान आकर्षित किया है। इस दौरान भारत की क्षमता को लेकर विश्वास बढ़ा है। इसी कड़ी में अब बिहार में मखाना बोर्ड का गठन किया जाएगा। मखाना के उत्पादन, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और विपणन को बेहतर बनाने के लिए मखाना बोर्ड की स्थापना की जाएगी। इस कार्य में लगे लोगों को एफपीओ के रूप में संगठित किया जाएगा। वित्त मंत्री ने कहा, स्टार्टअप के लिए लोन गारंटी शुल्क कम करेंगे। एमएसएमई के लिए लोन 5 करोड़ से बढ़ाकर 10 करोड़ कर दिया गया है। किसान क्रेडिट कार्ड की सीमा 3 लाख से 5 लाख की गई है। डेयरी और फिशरी के लिए अब पांच लाख तक का लोन दिया जाएगा। इससे इस वर्ष का बजट मेक इन इंडिया को आगे बढ़ाने, एमएसएमई को समर्थन देने, रोजगार आधारित विकास को सक्षम करने, लोगों की अर्थव्यवस्था और नवाचार में निवेश करने, ऊर्जा आपूर्ति को सुरक्षित करने पर केंद्रित है। यह बजट सरकार की राजस्व और व्यय रणनीति के लिए एक सामान्य रोड मैप प्रदान करता है। बजट 2025 युवाओं, महिलाओं और किसानों पर केंद्रित है।

वित्त मंत्री ने उल्लेख किया कि यह बजट सरकारी प्रयासों को जारी रखता है- विकास में तेजी लाने के लिए, सुरक्षित समावेशी विकास के लिए, निजी क्षेत्र के निवेश को बढ़ावा देने के लिए, घरेलू भावनाओं को ऊपर उठाने के लिए, भारत के बढ़ते मध्यम वर्ग की खर्च करने की शक्ति को बढ़ाने के लिए। आम बजट में जिन विषयों पर फोकस किया गया, उनमें मेक इन इंडिया को आगे बढ़ाना, एमएसएमई को समर्थन रोजगार आधारित विकास को सक्षम बनाना प्रमुख हैं। वहीं, लोगों की अर्थव्यवस्था और नवाचार में निवेश करना, ऊर्जा आपूर्ति सुरक्षित करना और निर्यात का समर्थन करना भी शामिल हैं। इस बजट में नवप्रवर्तन का पोषण व पीएम धन्य-धान योजना की घोषणा की गई है। वहीं, स्टार्टअप की सीमा 10 करोड़ से बढ़ाकर 20 करोड़ की गई। इस बजट में 5 नए परमाणु रियक्टर बनाने की घोषणा क्रांतिकारी कदम है। वहीं, मुद्रा योजना में होम स्टे के लिए योजना, सभी वित्तीय और गैर-वित्तीय परिसंपत्तियों पर दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ कर को 10% से बढ़ाकर 12.5% कर दिये जाने का सबको लाभ मिलेगा। वहीं, कुछ वित्तीय परिसंपत्तियों पर पूंजीगत लाभ पर छूट की सीमा बढ़ाकर 1.25 लाख प्रति वर्ष कर दी गई। जबकि कुछ वित्तीय परिसंपत्तियों पर अल्पकालिक पूंजीगत लाभ कर को 15% से बढ़ाकर 20% कर दिया गया। वहीं, वायदा और विकल्प पर प्रतिभूति लेनदेन कर बढ़ा दिया गया। इसके अलावा, पांच वर्षों में एक करोड़ युवाओं को 500 शीर्ष कंपनियों में इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करने के लिए एक योजना की घोषणा की गई। जिसकी हर कोई सराहना कर रहा है।

इस बजट में प्रत्येक प्रशिक्षु को 12 महीनों के लिए वास्तविक जीवन के कारोबारी माहौल से परिचित कराया जाएगा और उन्हें 5,000 का भत्ता और 6,000 की एकमुश्त सहायता मिलेगी। वहीं, श्रमिकों, महिलाओं और निम्न आय वर्ग के लिए किफायती आवास यानी सरकार ने लोगों के सिर पर छत सुनिश्चित करने के लिए कई योजनाओं की घोषणा की है। वहीं, औद्योगिक श्रमिकों के लिए, व्यवहार्यता अंतर निधि और प्रमुख उद्योगों की प्रतिबद्धता के साथ सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से छात्रावास-प्रकार के आवास के साथ किराये के आवास की सुविधा दी जाएगी। कार्यबल में अधिक महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, उद्योग के सहयोग से कामकाजी महिलाओं के छात्रावास स्थापित किए जाएंगे। सरकार क्षेत्रीय और मंत्रिस्तरीय लक्ष्यों के साथ निर्यात सहायता मिशन शुरू करेगी। मिशन को वाणिज्य, एमएसएमई और वित्त मंत्रालय संयुक्त रूप से संचालित करेंगे। निर्यात सहायता मिशन विदेशी बाजारों में गैर-टैरिफ उपायों से निपटने के लिए निर्यात ऋण, सीमा पार फैक्टरिंग समर्थन और एमएसएमई को समर्थन तक आसान पहुंच की सुविधा प्रदान करेगा।

कुल मिलाकर बीजेपी और उसके सहयोगी दलों के नेता जहां इस बजट की तारीफ कर रहे हैं और इसे लोक कल्याणकारी बता रहे हैं, वहीं विपक्ष के नेता इसकी आलोचना कर रहे हैं। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने बजट पर तंज कसते हुए कहा कि, वित्त मंत्री ने 4 इंजनों की बात की। वे हैं- कृषि, एमएसएमई, निवेश और निर्यात। ये इतने सारे इंजन हैं कि बजट पूरी तरह से पटरी से उतर गया है। उन्होंने आगे कहा, ऐसा लगता है कि बजट में बिहार को घोषणाओं का खजाना मिल गया है। यह स्वाभाविक है क्योंकि साल के अंत में वहां चुनाव होने हैं। लेकिन एनडीए के दूसरे स्तंभ यानी आंध्र प्रदेश की इतनी बेरहमी से अनदेखी क्यों की गई ? ■

आखिर कौन लागू करवाएगा दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में आचार संहिता?

बता दें कि भारतीय नौसेना ने समान विचारधारा वाले देशों के साथ सहयोगात्मक ढांचे के तहत जहाजों की आवाजाही के साथ-साथ क्षेत्र में अन्य महत्वपूर्ण विकास पर नजर रखने के लिए वर्ष 2018 में गुरुग्राम में इन्फार्मेशन फ्यूजन सेंटर की स्थापना की थी।

संजय पांडे

दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में चीनी दबदबे को नियंत्रित करने के लिए एक आदर्श आचार संहिता लागू करने की मांग सही है, लेकिन वहां पर इसे लागू कौन करवाएगा, इस बात का उत्तर भारत समेत विभिन्न आसियान देशों के पास नहीं है। ये तो सिर्फ वकालत कर रहे हैं कि दक्षिण चीन सागर ऐसा होना चाहिए। जबकि चीन अपनी हठधर्मिता के चलते सैन्य कार्रवाई करने पर उतारू है। इसी दृष्टि से वह लगातार अपनी तैयारी पुख्ता करता जा रहा है। लेकिन उसे रोकने में संयुक्त राष्ट्र संघ भी यहां असहाय प्रतीत हो रहा है। देखा जाए तो चाहे चीन विरोधी अमेरिका हो या चीन समर्थक रूस या फिर इनके-इनके समर्थक विभिन्न विकसित और विकासशील देश, सबकी नीति इस मामले में अभी तक ढुलमुल ही रही है। इसलिए भारत की भूमिका इस मामले में भी अहम और निर्णायक बताई जा रही है। क्योंकि भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न देशों के बहुत पुराने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध भी हैं। वहीं, वैश्विक दुनियादारी में चीन को संतुलित रखने के लिए भी भारत और आसियान देशों को एक-दूसरे की जरूरत है। इसलिए आशियान देशों के साथ भारत की निकटता जगजाहिर है।

समझा जाता है कि भारत ही अमेरिका और रूस दोनों देशों पर दबाव डालकर आसियान देशों के दक्षिण चीन सागर सम्बन्धी दूरगामी हितों की रक्षा कर सकता है। जानकारों की मानें तो चीन की विस्तारवादी नीति से न केवल भारत बल्कि आशियान देशों के विभिन्न हित प्रभावित हो रहे हैं। उधर, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका की चिंता भी किसी से छिपी हुई नहीं है। हालांकि, इन देशों में अमेरिका के बाद भारत ही एक ऐसा मुल्क है जो चीन की बढ़ती महत्वाकांक्षा को नियंत्रित कर सकता है। इसी नजरिए से क्वाड देशों में भी भारत की भागीदारी प्रमुख है। इधर भारत-चीन सम्बन्धों में भी तू डाल-डाल, मैं पात-पात वाली कहावत चरितार्थ होती है। यही वजह है कि गत 25-26 जनवरी 2025 को भारत ने चीन के खिलाफ एक और बड़ी चाल चलते हुए, दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में आचार संहिता लागू करने का आह्वान किया है। वहीं, इसके दूरगामी वैश्विक मायने को समझते हुए इंडोनेशिया जैसे प्रभावशाली देश ने भी भारत का साथ दिया है। उल्लेखनीय है कि इंडोनेशिया के राष्ट्रपति भारत के 76वें गणतंत्र समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए थे। इसी दौरान हुई विभिन्न बैठकों के क्रम में उपर्युक्त आशय की सहमति बनी है।

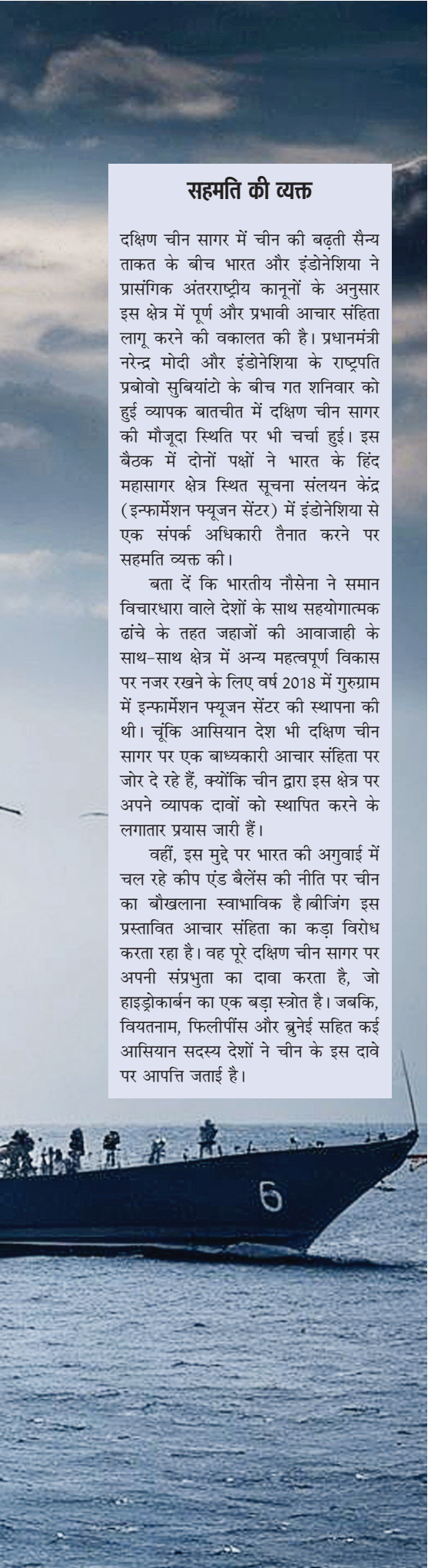

सहमति की व्यक्त

दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती सैन्य ताकत के बीच भारत और इंडोनेशिया ने प्रासंगिक अंतरराष्ट्रीय कानूनों के अनुसार इस क्षेत्र में पूर्ण और प्रभावी आचार संहिता लागू करने की वकालत की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांटो के बीच गत शनिवार को हुई व्यापक बातचीत में दक्षिण चीन सागर की मौजूदा स्थिति पर भी चर्चा हुई। इस बैठक में दोनों पक्षों ने भारत के हिंद महासागर क्षेत्र स्थित सूचना संलयन केंद्र (इन्फार्मेशन फ्यूजन सेंटर) में इंडोनेशिया से एक संपर्क अधिकारी तैनात करने पर सहमति व्यक्त की।

बता दें कि भारतीय नौसेना ने समान विचारधारा वाले देशों के साथ सहयोगात्मक ढांचे के तहत जहाजों की आवाजाही के साथ-साथ क्षेत्र में अन्य महत्वपूर्ण विकास पर नजर रखने के लिए वर्ष 2018 में गुरुग्राम में इन्फार्मेशन फ्यूजन सेंटर की स्थापना की थी। चूंकि आसियान देश भी दक्षिण चीन सागर पर एक बाध्यकारी आचार संहिता पर जोर दे रहे हैं, क्योंकि चीन द्वारा इस क्षेत्र पर अपने व्यापक दावों को स्थापित करने के लगातार प्रयास जारी हैं।

वहीं, इस मुद्दे पर भारत की अगुवाई में चल रहे कीप एंड बैलेंस की नीति पर चीन का बौखलाना स्वाभाविक है।बीजिंग इस प्रस्तावित आचार संहिता का कड़ा विरोध करता रहा है। वह पूरे दक्षिण चीन सागर पर अपनी संप्रभुता का दावा करता है, जो हाइड्रोकार्बन का एक बड़ा स्त्रोत है। जबकि, वियतनाम, फिलीपींस और ब्रुनेई सहित कई आसियान सदस्य देशों ने चीन के इस दावे पर आपत्ति जताई है।

गौरतलब है कि एक ओर दक्षिण चीन सागर में जहां चीन अपनी सैन्य ताकत में निरंतर इजाफा करने में जुटा हुआ है, जिससे आसपास के छोटे देश भयभीत हैं। वहीं अब भारत ने चीन के खिलाफ अपनी चाल चलते हुए दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में आचार संहिता लागू करने का आह्वान किया है। सुकून की बात यह है कि भारत को इस मुद्दे पर इंडोनेशिया जैसे महत्वपूर्ण देश का भी साथ मिल गया है। जबकि दूसरी तरफ चीन इस क्षेत्र में आचार संहिता का खुलकर विरोध करता है। इसलिए दक्षिण चीन सागर से जुड़े हुए विभिन्न प्रभावित देशों के साथ-साथ भारत और अमेरिका की चिंताएं स्वाभाविक हैं। बता दें कि अक्टूबर 2024 में भी जब पीएम मोदी ने ईस्ट एशिया सम्मेलन में हिस्सा लिया तो उन्होंने चीन पर इस बाबत निशाना साधा था। इससे एक दिन पहले आसियान-भारत सालाना सम्मेलन में भी उन्होंने चीन की तरफ इशारा करते हुए हिंद प्रशांत क्षेत्र और साउथ चाईना सी को लेकर जो सारी बातें कहीं, वह इस क्षेत्र में आक्रामक रवैया अपना रहे चीन को नागवार गुजर सकती है। तब पीएम मोदी ने आसियान-भारत सालाना सम्मेलन में दक्षिण पूर्वी एशियाई क्षेत्र के देशों के भौगोलिक संप्रभुता को समर्थन देकर चीन की तरफ इशारा किया था। वहीं, ईस्ट एशिया सम्मेलन में भी उन्होंने हिंद प्रशांत क्षेत्र और साउथ चाईना सी को लेकर दो टूक चिताएं जताई। मोदी ने समूचे हिंद प्रशांत क्षेत्र को कानून सम्मत बनाते हुए यहां की समुद्री गतिविधियों को संयुक्त राष्ट्र के संबंधित कानून (अनक्लोस) से तय होने की मांग की और साउथ चाईना सी के संदर्भ में एक ठोस व प्रभावी आचार संहिता बनाने की भी बात कही। बता दें कि आसियान के सभी दस सदस्य देश भी इसकी मांग कर रहे हैं। वहीं, एक दिन पहले चीन के प्रधानमंत्री ली शियांग के साथ बैठक में आसियान नेताओं ने इन मुद्दों को जोरदार तरीके से उठाया था। इसके साथ ही भारतीय प्रधानमंत्री ने दुनिया के दूसरे क्षेत्रों में चल रहे तनाव के संदर्भ में कहा, विश्व के अलग-अलग क्षेत्रों में चल रहे संघर्षों का सबसे नकारात्मक प्रभाव ग्लोबल साउथ के देशों पर हो रहा है। सभी चाहते हैं कि चाहे यूरेशिया हो या पश्चिम एशिया, जल्द से जल्द शांति और स्थिरता की बहाली हो। तब पीएम मोदी ने यहां तक कहा था, मैं बुद्ध की धरती से आता हूं और मैंने बार-बार कहा है कि यह युद्ध का युग नहीं है। समस्याओं का समाधान रणभूमि से नहीं, बल्कि सकारात्मक रणनीति से निकल सकता है। संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का आदर करना आवश्यक है। वहीं, मानवीय दृष्टिकोण रखते हुए, डायलॉग और कूटनीति को भी प्रमुखता देनी होगी। विश्वबंधु के दायित्व को निभाते हुए, भारत इस दिशा में हर संभव योगदान करता रहेगा। तब मोदी ने आतंकवाद को भी वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती बताते हुए मानवता में विश्वास रखने वाली ताकतों को एकजुट होकर काम करने का आह्वान किया। बता दें कि इस सालाना आसियान सम्मेलन में शामिल सभी नेताओं में सबसे ज्यादा बार (नौ बार) पीएम मोदी ने ही हिस्सा लिया है। यह आसियान के मामलों में भारत की बढ़ती भूमिका को भी बताता है। वहीं, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गत रविवार की शाम इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो के सम्मान में डिनर आयोजित किया। इस दौरान इंडोनेशियाई राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो ने कुछ ऐसा कहा, जिसे सुनकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत सभी गणमान्य लोग खिलखिलाकर हंस पड़े। दरअसल, इंडोनेशियाई राष्ट्रपति ने भारत और इंडोनेशिया के बीच प्राचीन संबंधों की बात कहते हुए कहा कि हमारी भाषा के कई अहम शब्द संस्कृत भाषा से आते हैं। बकौल इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो, भारत और इंडोनेशिया के आपसी संबंधों का इतिहास बेहद पुराना है। दोनों देशों की सभ्यताओं में भी गहरा जुड़ाव रहा है, यहां तक कि हमारी भाषा के कई अहम शब्द संस्कृत भाषा के हैं। हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में भी प्राचीन भारतीय सभ्यता का प्रभाव है। यहां तक कि हमारे जीन्स यानी डीएनए में भी समानता है। इंडोनेशियाई राष्ट्रपति ने यहां तक कहा कि कुछ हफ्ते पहले ही मैंने अपनी जेनेटिक्स सीक्वेंसिंग और डीएनए टेस्ट कराया। मुझे बताया गया कि मेरा डीएनए भारतीय है। सभी जानते हैं कि जैसे ही मैं भारतीय संगीत सुनता हूं, तभी मैं थिरकना शुरू कर देता हूं। वहीं, मासूमियत पूर्वक सुबियांतो ने आगे कहा कि मुझे यहां (भारत) आने पर गर्व है। मैं कोई खांटी राजनेता नहीं हूं, न ही अच्छा कूटनीतिकार हूं, मैं जो भी कहता हूं, दिल से कहता हूं। मुझे यहां आए हुए कुछ ही दिन हुए हैं, लेकिन मैंने पीएम मोदी के नेतृत्व और उनके समर्पण से काफी कुछ सीखा है। उनका गरीबी को दूर करने और कमजोर वर्ग की मदद करने के लिए जो समर्पण है, वह हमारे लिए प्रेरणा है। इंडोनेशिया ने भारत की समृद्धि, शांति के लिए कामना की और उम्मीद जताई कि भारत और इंडोनेशिया के संबंध आगे भी मजबूत होते रहेंगे। यही वजह है कि मोदी और सुबियांटो ने भारत-इंडोनेशिया के आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने के तरीकों पर भी चर्चा की। ताकि मजबूती पूर्वक दोनों देश अपने अंतर्राष्ट्रीय एजेंडे को आगे बढ़ा सकें। इस दौरान उन्होंने द्विपक्षीय लेन-देन के लिए स्थानीय मुद्राओं के उपयोग के लिए पिछले वर्ष हुए समझौता ज्ञापन के शीघ्र कार्यान्वयन के महत्व पर भी बल दिया। उनका मानना है कि द्विपक्षीय लेन-देन के लिए स्थानीय मुद्राओं के उपयोग से व्यापार को और बढ़ावा मिलेगा और दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच वित्तीय एकीकरण गहरा होगा। वहीं, मोदी और सुबियांटो ने आतंकवाद के सभी रूपों की कड़ी निंदा करते हुए भारत-इंडोनेशिया आतंकवाद विरोधी सहयोग बढ़ाने का संकल्प दोहराया और बिना किसी दोहरे मापदंड के इस खतरे से निपटने के लिए ठोस वैश्विक प्रयासों का आह्वान किया। दोनों नेताओं ने सभी देशों से संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों और उनके सहयोगियों के खिलाफ ठोस कार्रवाई करने का आह्वान किया। ■

कश्मीर से पंडितों के पलायन के

चार दशक

हिजबुल और अलगाववादियों का अप्रत्यक्ष समर्थन कर रहे फारुख अब्दुल्ला तब भी चुप रहे थे या कार्यवाही करनें का अभिनय मात्र कर रहे थे जब भाजपाई और कश्मीरी पंडितों के नेता टीकालाल टपलू की 14 सितम्बर 1989 को दिनदहाड़े हत्या कर दी गई थी।

डॉ. रामनरेश शर्मा

कश्मीर के सर्वाधिक नए जन सांख्यिकीय आंकड़ों पर नजर डाले तो स्वतंत्रता के समय वहां घाटी में 15% कश्मीरी पंडितों की आबादी थी जो आज 1त्न से नीचे होकर 0% की ओर बढ़ गई है। हाल ही के इतिहास में कश्मीर के ज.स. सांख्यिकी में यदि परिवर्तन का सबसे बड़ा कारक खोजें तो वह एक दिन, यानि 19 जनवरी 1990 के नाम से जाना जाता है। कश्मीरी पंडितों को उनकी मातृभूमि से खदेड़ देनें की इस घटना की यह भीषण और वीभत्स कथा 1989 में आकार लेनें लगी थी। पाकिस्तान प्रेरित और प्रायोजित आतंकवादी और अलगाववादी यहाँ अपनी जड़ें बैठा चुके थे। भारत सरकार आतंकवाद की समाप्ति में लगी हुई थी तब के दौर में वहां रह रहे ये कश्मीरी पंडित भारत सरकार के मित्र और इन आतंकियों और अलगाववादियों के दुश्मन और खबरी सिद्ध हो रहे थे। इस दौर में कश्मीर में अलगाववादी समाज और आतंकवादियों ने इस शांतिप्रिय हिन्दू पंडित समाज के विरुद्ध चल रहे अपनें धीमे और छदम संघर्ष को घोषित संघर्ष में बदल दिया। इस भयानक नरसंहार पर फारुक अब्दुल्ला की रहस्यमयी चुप्पी और कश्मीरी पंडित विरोधी मानसिकता केवल इस घटना के समय ही सामने नहीं आई थी। तब के दौर में तत्कालीन मुख्यमंत्री फारुख अब्दुल्ला अपने पिता शेख अब्दुल्ला के कदमों पर चलते हुए अपना कश्मीरी पंडित विरोधी आचरण कई बार सार्वजनिक कर चुके थे। 19 जनवरी 1990 के मध्ययुगीन, भीषण और पाशविक दिन के पूर्व जमात-ए-इस्लामी द्वारा कश्मीर में अलगाववाद को समर्थन करने और कश्मीर को हिन्दू विहीन करनें के उद्देश्य से हिज्बुल मुजाहिदीन की स्थापना हो गई थी। इस हिजबुल मुजाहिदीन नें 4 जनवरी 1990 को कश्मीर के स्थानीय समाचार पत्र में एक एक विज्ञप्ति प्रकाशित कराई जिसमें स्पष्टत: सभी कश्मीरी पंडितों को कश्मीर छोड़ने की धमकी दी गई थी। इस क्रम में उधर पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री बेनजीर नें भी टीवी पर कश्मीरियों को भारत से मुक्ति पानें का एक भड़काऊ भाषण दे दिया। घाटी में खुले आम भारत विरोधी नारे लगनें लगे। घाटी की मस्जिदों में अजान के स्थान पर हिन्दुओं के लिए धमकियां और हिन्दुओं को खदेड़ने या मार-काट देने के जहरीले आव्हान बजनें लगे। एक अन्य स्थानीय समाचार पत्र अल-सफा ने भी इस विज्ञप्ति का प्रकाशन किया था।

इस भड़काऊ, नफरत, धमकी, हिंसा और भय से भरे शब्दों और आशय वाली इस विज्ञप्ति के प्रकाशन के बाद कश्मीरी पंडितों में गहरें तक भय, डर घबराहट का संचार हो गया। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि तब तक कश्मीरी पंडितों के विरोध में कई छोटी बड़ी घटनाएं वहां सतत घट ही रही थी और कश्मीरी प्रशासन और भारत सरकार दोनों ही उन पर नियंत्रण नहीं कर पा रहे थे। 19 जनवरी 1990 की भीषणता को और कश्मीर और भारत सरकार की विफलता को

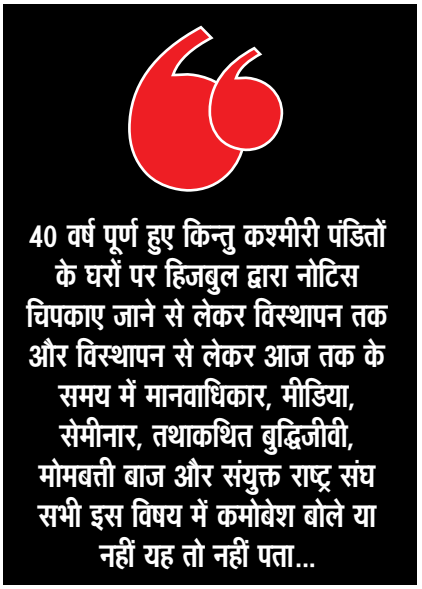

इससे स्पष्ट समझा जा सकता है कि पूरी घाटी में कश्मीरी पंडितों के घर और दुकानों पर नोटिस चिपका दिए गए थे कि 24 घंटो के भीतर वे घाटी छोड़ कर चले जाएँ या इस्लाम ग्रहण कर कड़ाई से इस्लाम के नियमों का पालन करें। घरों पर धमकी भरें पोस्टर चिपकाने की इस बदनाम घटना से भी भारत और कश्मीरी सरकारें चेती नहीं और परिणाम स्वरुप पूरी घाटी में कश्मीरी पंडितों के घर धूं-धूं जल उठे। तत्कालीन मुख्यमंत्री फारुक अब्दुल्ला इन घटनाओं पर रहस्यमयी आचरण अपनाए रहे, वे कुछ करनें का अभिनय करते रहे और कश्मीरी पंडित अपनी ही भूमि पर ताजा इतिहास की सर्वाधिक पाशविक- बर्बर-क्रूरतम गतिविधियों का खुले आम शिकार होते रहे, घाटी में पहले से फैली अराजकता चरम पर पहुँच गई। कश्मीरी पंडितों के सर काटे गए, कटे सर वाले शवों को चौक-चौराहों पर लटकाया गया। बलात्कार हुए, कश्मीरी पंडितों की स्त्रियों के साथ पाशविक-बर्बर अत्याचार हुए। गर्म सलाखों शरीर में दागी गई और इज्जत आबरू के भय से सैकड़ों कश्मीरी पंडित स्त्रियों ने आत्महत्या करनें में ही भलाई समझी। बड़ी संख्या में कश्मीरी पंडितों के शवों का समुचित अंतिम संस्कार भी नहीं होनें दिया गया था, कश्यप ऋषि के संस्कारवान कश्मीर में संवेदनाएं समाप्त हो गई और पाशविकता-बर्बरता का वीभत्स नंगा नाच दिखा था। जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट और हिजबुल मुजाहिदीन ने जाहिर और सार्वजनिक तौर पर इस हत्याकांड का नेतृत्व किया था। ये सब एकाएक नहीं हुआ था, हिजबुल और अलगाववादियों का अप्रत्यक्ष समर्थन कर रहे फारुख अब्दुल्ला तब भी चुप रहे थे या कार्यवाही करनें का अभिनय मात्र कर रहे थे जब भाजपाई और कश्मीरी पंडितों के नेता टीकालाल टपलू की 14 सितम्बर 1989 को दिनदहाड़े हत्या कर दी गई थी।

अलगाववादियों को कश्मीर प्रशासन का ऐसा वरद हस्त प्राप्त रहा कि बाद में उन्होंने कश्मीरी पंडित और श्रीनगर के न्यायाधीश एन. गंजू की भी हत्या की और प्रतिक्रिया होनें पर 320 कश्मीरी स्त्रियों, बच्चों और पुरुषों की हत्या कर दी थी। ऐसी कितनी ही हृदय विदारक, अत्याचारी और बर्बर घटनाएं कश्मीरी पंडितों के साथ घटती चली गई और दिल्ली सरकार लाचार देखती भर रही और उधर श्रीनगर की सरकार तो जैसे खुलकर इन आततायियों के पक्ष में आ गई थी। इस पृष्ठभूमि में हिजबुल और जेकेएलएफ का दुस्साहस बढ़ना स्वाभाविक ही था और वह निर्णायक तौर पर कश्मीरी पंडितों की दुकानों-घरों पर 24 घंटे में घाटी छोड़ देनें या मार दिए जानें की धमकी के नोटिस चस्पां करनें की हद तक बढ़ गया। इसके बाद जो हुआ वह एक दुखद, क्षोभजनक, वीभत्स, दर्दनाक और इतिहास को दहला देनें वाले काले अध्याय के रूप में सामनें आया। अन्ततोगत्वा वही हुआ जो वहां के अलगाववादी, आतंकवादी हिजबुल और जेकेएलएफ चाहते थे। कश्मीरी पंडित पूर्व की घटनाओं, घरों पर नोटिस चिपकाए जानें और बेहिसाब कत्लेआम से घबराकर 19 जन. 1990 को हिम्मत हार गए। फारुख अब्दुल्ला के कुशासन में आतंकवाद और अलगाववाद चरम पर आकर विजयी हुआ और इस दिन साढ़े तीन लाख कश्मीरी पंडित अपनें घरों, दुकानों, खेतों, बागों और संपत्तियों को छोड़कर विस्थापित होकर दर-दर की ठोकरें खानें को मजबूर हो गए। कई कश्मीरी पंडित अपनों को खोकर गए, अनेकों अपनों का अंतिम संस्कार भी नहीं कर पाए और हजारों तो यहाँ से निकल ही नहीं पाए और मार-काट डाले गए। विस्थापन के बाद का जो दौर आया वह भी किसी प्रकार से आततायियों द्वारा दिए गए कष्टों से कम नहीं रहा कश्मीरी पंडितों के लिए। वे सरकारी शिविरों में नारकीय जीवन जीनें को विवश हुए। हजारों कश्मीरी पंडित दिल्ली, मेरठ, लखनऊ जैसे नगरों में सनस्ट्रोक से इसलिए मृत्यु को प्राप्त हो गए क्योंकि उन्हें गर्म मौसम में रहनें का अभ्यास नहीं था।

40 वर्ष पूर्ण हुए किन्तु कश्मीरी पंडितों के घरों पर हिजबुल द्वारा नोटिस चिपकाए जानें से लेकर विस्थापन तक और विस्थापन से लेकर आज तक के समय में मानवाधिकार, मीडिया, सेमीनार, तथाकथित बुद्धिजीवी, मोमबत्ती बाज और संयुक्त राष्ट्र संघ सभी इस विषय में कमोबेश बोले या नहीं यह तो नहीं पता किन्तु इन कश्मीरी पंडितों की समस्या का कोई ठोस हल अब तक नहीं निकला यह समूचे विश्व को पता है ये सच से मूंह मोड़ने और शुतुरमुर्ग होने का ही परिणाम है कि कश्मीरियों के साथ हुई इस घटना को शर्मनाक ढंग से स्वेच्छा से पलायन बताया गया! इस घटना को राष्ट्रीय मनावाधिकार आयोग ने सामूहिक नर संहार माननें से भी इंकार किया, ये घोर अन्याय और तथ्यों की असंवेदी अनदेखी है! नरेन्द्र मोदी सरकार कश्मीरी पंडितों के पुनर्वास हेतु प्रतिबद्ध है और वह इस प्रतिबद्धता को दोहराती रही है। ■

क्या अमेरिका के स्वर्णिम दौर में शेष विश्व को मिल पाएगी

तीसरे विश्वयुद्ध से मुक्ति

वहीं, ग्रीन लैंड द्वीप को खरीदने, पनामा नहर पर पुनः अमेरिकी प्रभुत्व स्थापित करने, मेक्सिको के समीप दीवार खड़ा करने, कनाडा को अमेरिका में मिलाने आदि को लेकर जो अमेरिकी सक्रियता दिखी है, उससे अमेरिकी-यूरोपीय महाद्वीपों में हलचल स्वाभाविक हैं।

मधुसूदन भट्ट

दुनियावी चक्रव्यूह में निरंतर घिरते जा रहे अमेरिका ने जब यौद्धिक चंद्रायण व्रत की बात कही तो सहसा विश्वास नहीं हुआ! वहीं, दुनिया के थानेदार की मजबूरी, दूरदर्शिता और खुदगर्जी भी स्पष्ट महसूस हुई। क्योंकि लगातार किसी न किसी सांसारिक संघर्ष में उलझकर थक-हार चुके देश अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी विक्ट्री रैली में विक्ट्री स्पीच देते हुए जो कुछ संकेत दिया, उसका सार-सत्य यही है कि अपने लोगों के बेहतर भविष्य के लिए अमेरिका अब तीसरा विश्व युद्ध नहीं लड़ना चाहता है और इसकी बची-खुची संभावनाओं को भी जल्द खत्म करने की हिमायत करेगा।

इसलिए सवाल उठ रहा है कि क्या अमेरिका के स्वर्णिम दौर में शेष विश्व को तीसरे विश्वयुद्ध से मुक्ति मिल पाएगी? या फिर यह किसी अन्य देश यथा-चीन या रूस के मार्फत अन्य देशों पर थोपी जाएगी, जिससे प्रथम विश्वयुद्ध की भांति अमेरिका दूर रहेगा। यूं तो दूसरे विश्वयुद्ध के शुरुआती चरण में भी अमेरिका इस महायुद्ध से दूर ही रहा था, लेकिन जब मजबूरी वश उसमें शामिल हुआ तो युद्ध के परिणामों को अपने गुट पक्ष में बदल दिया। वहीं, उसकी मौजूदा साफगोई से भी इसी बात का पता चलता है कि अभी भले ही वह तीसरा विश्वयुद्ध नहीं लड़ना चाहता हो, लेकिन यदि उस पर तीसरा विश्वयुद्ध थोपा गया तो इसके भी परिणाम बदलने की क्षमता उसमें है और रही-सही कसर को पूरा करने के लिए ही वह मेक अमेरिका ग्रेट अगेन पर फोकस करना चाहता है। कहा भी गया है कि अग्र सोची, सदा सुखी। इसलिए डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका ने अपना नया रास्ता चुन लिया है। अब शेष विश्व को यह तय करना है कि वह आगे क्या करेगा। इस नजरिए से भारत की राह भी स्पष्ट है। जो अमेरिका से अब एक हद तक मिलती जुलती है। कहना न होगा कि समकालीन विश्व में कभी जल के सवाल पर, कभी तेल के प्रश्न पर, कभी रूसी कीप एंड बैलेंस की नीतियों से, तो कभी चीनी विस्तारवादी रणनीतियों से और कभी दुनिया के देशों पर शासन करने की इस्लामिक देशों की सामूहिक महत्वाकांक्षा से अभिप्रेरित तृतीय विश्वयुद्ध की अमूमन दस्तक देता रहता है। जानकार बताते हैं कि यूएसए और यूएसएसआर के बीच शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भले ही अमेरिका ने दुनिया की थानेदारी की, लेकिन अमेरिकी नेतृत्व वाले नाटो को अब जिस तरह से रूस और चीन मिलकर ब्रिक्स देशों के मार्फत घेर रहे हैं, उससे तीसरा विश्वयुद्ध अवश्यम्भावी प्रतीत होता है। आपने देखा होगा कि कभी मिडिल-ईस्ट देशों में, तो कभी क्वाड देशों के अगुवा के तौर पर अमेरिका की भूमिका अक्सर संदेह के घेरे में रही है। वहीं, रूस-यूक्रेन विवाद के युद्ध में तब्दील हो जाने के बाद अमेरिकी दुविधा को लेकर और उसकी नवपरिवर्तित आर्थिक नीतियों को लेकर यूरोपीय संघ के कुछ देशों, यथा- जर्मनी-फ्रांस-इंग्लैंड आदि के द्वारा जिस तरह से उसके नेतृत्व पर सवाल उठाए जाने लगे हैं, इससे अमेरिकी चिंता बढ़नी स्वाभाविक है।

वहीं, ग्रीन लैंड द्वीप को खरीदने, पनामा नहर पर पुनः अमेरिकी प्रभुत्व स्थापित करने, मेक्सिको के समीप दीवार खड़ा करने, कनाडा को अमेरिका में मिलाने आदि को लेकर जो अमेरिकी सक्रियता दिखी है, उससे अमेरिकी-यूरोपीय महाद्वीपों में हलचल स्वाभाविक हैं।

यदि एशिया महाद्वीप की बात करें तो यहां चीन-रूस की जोड़ी अमेरिका पर हावी है। भारत को साथ लेकर अमेरिका यहां संतुलन साधना चाहता है, लेकिन भारत-रूस की पुरानी मित्रता यहां आड़े आ जाती है। वहीं, अफगानिस्तान-पाकिस्तान-बंगलादेश-म्यांमार-श्रीलंका आदि भारत के पड़ोसी देशों को लेकर और जम्मूकश्मीर से तिब्बत तक के विवादों को सुलझाने की दिशा में अमेरिका की क्षुद्र रणनीतियों की वजह से भारत भी उस पर पूरी तरह से भरोसा नहीं कर पा रहा है।

वहीं, उत्तर कोरिया, ताइवान, दक्षिण कोरिया, जापान, दक्षिण चीन सागर से जुड़े देशों और आशियान देशों के प्रति अमेरिका की जो ढुलमुल रणनीति रही है, उससे भी भारत चिंतित रहता है। या फिर अरब देशों पर आधिपत्य को लेकर जो अमेरिकी रणनीति रही है, उससे भी भारत परेशान रहता है। भारत इजरायल के निकट है, लेकिन अरब देशों को भी नाराज करने की स्थिति में वह नहीं है। जबकि ईरान से लेकर यूक्रेन तक में अमेरिका के नेतृत्व वाले नाटो की जो भूमिका रही है, सीरिया से लेकर यूक्रेन तक जो अमेरिकी रणनीति रही है, इससे भारतीय कूटनीति भी प्रभावित होती आई है। यही वजह है कि यदि अमेरिका अपनी पुरानी शस्त्र व्यापार कूटनीति पर अडिग रहता है तो तीसरा विश्वयुद्ध अवश्यम्भावी है। वहीं, इधर देखा जा रहा है कि जर्मनी-फ्रांस, भारत-जापान, ईरान-तुर्किये, ऑस्ट्रेलिया-ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका-इंग्लैंड, कनाडा-मैक्सिको आदि पर नाटो का प्रभाव जहां कम हुआ है, वहीं ब्रिक्स देशों के नेतृत्वकर्ता चीन-रूस का रणनीतिक दबाव बढ़ा है। ऐसे में अमेरिकी महत्वाकांक्षाओं को काबू में रखने में ही अमेरिका की भलाई है। शायद दुनिया के विभिन्न देशों की बढ़ती वैश्विक महत्वाकांक्षाओं के चलते ही अमेरिका ने अब अपने को कछुए की भांति निज कवच में ही महफूज रहने की रणनीति अपना ली है, जो उसका दूरदर्शिता भरा कदम है।

वहीं, अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने रूस-यूक्रेन युद्ध, इजरायल-फिलिस्तीन युद्ध, चीन-ताइवान विवाद आदि के बाद सम्भावित तीसरे विश्व युद्ध की अलग-अलग उठ रही शंकाओं/संभावनाओं को हतोत्साहित करने के लिए अपनी ओर से जो प्रतिबद्धता जताई है, वह काबिलेतारीफ है। अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने के बाद दिए अपने भाषण में ट्रंप ने कहा कि अमेरिका का स्वर्णिम काल अभी से शुरू हो गया है। हम अपनी संप्रभुता बनाए रखेंगे। दुनिया हमारा इस्तेमाल नहीं कर सकेगी। अमेरिका में अब घुसपैठ नहीं होगी। इस दौरान एक बार फिर ट्रंप ने मेक अमेरिका ग्रेट अगेन का नारा दोहराया।

इस दौरान ट्रंप ने साफ कहा कि अमेरिका में अब सेंसरशिप नहीं होगी। आज की तारीख अमेरिकियों के लिए आजादी का दिन है। अब हमारे देश का कोई भी इस्तेमाल नहीं कर पाएगा। जो भी इस देश का इस्तेमाल करेगा उसे सबक सिखाया जाएगा। ट्रंप ने अपने ऊपर चुनाव प्रचार के दौरान हुए हमले का जिक्र करते हुए कहा कि वह इसलिए ही बच गए क्योंकि उन्हें अमेरिका को बहुत आगे ले जाना है। ट्रंप ने आगे यह भी कहा कि, आज से, हमारा देश फिर से समृद्ध होगा और पूरी दुनिया में हमारा सम्मान किया जाएगा। हम किसी देश को खुद का अब और फायदा उठाने की अनुमति नहीं देंगे। हमारी संप्रभुता को दोबारा हासिल किया जाएगा। हमारी सुरक्षा बहाल की जाएगी।

हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता एक ऐसा राष्ट्र बनाना होगा जो गौरवान्वित, समृद्ध और स्वतंत्र हो। इसके अलावा, राष्ट्रपति ट्रंफ ने कहा, हम अपनी दक्षिणी सीमा पर नेशनल इमरजेंसी की घोषणा करते हैं। उन्होंने मेक्सिको के साथ लगती अमेरिका की दक्षिणी सीमा पर घुसपैठ को रोकने के लिए सेना भेजने का भी ऐलान किया और कहा कि अवैध प्रवासियों को वहीं छोड़कर आएंगे जहां से वो आए हैं। दुनियादारी पर ट्रंप ने दो टूक कहा कि, अंतरिक्ष में अमेरिका का परचम लहराएगा। मेरी शपथ से पहले इजराइली बंधक छूटे। मिडिल ईस्ट में शांति बहाली के लिए कोशिश करेंगे। मेक्सिको की खाड़ी का नाम बदलकर अमेरिका की खाड़ी करेंगे। अमेरिका के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। मंगल ग्रह पर अंतरिक्ष यात्री भेजेंगे। सेना अपने मिशन के लिए आजाद होगी। डोनाल्ड ट्रंप ने फिर कहा, दूसरे की जंग में अमेरिका सेना नहीं जाएगी। मैं चाहता हूं कि दुनिया मुझे शांति दूत के तौर पर जाने। वहीं, चीन को चुनौती देते हुए उन्होंने कहा कि पनामा कैनाल से चीन का अधिपत्य खत्म करेंगे। पनामा कैनाल को वापस लेंगे। ट्रंप ने यह भी कहा कि, मैं देशों को जोड़ने की कोशिश करूंगा। शांति स्थापित करना मेरी प्राथमिकता है। विरोधियों के खिलाफ बदले की कार्रवाई नहीं होगी। अमेरिका सैनिकों के अधिकार बढ़ाए जाएंगे। मैं युद्ध रोकने की कोशिश करूंगा। वहीं, ट्रंप ने आगे कहा कि दूसरे देशों पर टैक्स और टैरिफ बढ़ाएंगे। हम देश की कानून व्यवस्था को पटरी पर लाएंगे। अमेरिका के लोगों को बोलने की स्वतंत्रता होगी। अमेरिका के दुश्मनों को हराकर रहेंगे। उन्होंने अमेरिका में ड्रग तस्करों को आंतकी घोषित करने का भी ऐलान कर दिया है। उन्होंने कहा, अमेरिकी न्याय विभाग का क्रूर और अनुचित हथियारीकरण खत्म हो जाएगा। उन्होंने अमेरिका को लेकर अपनी नीतियों का भी खाका देश और दुनिया के सामने रख दिया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका फिर से मैन्युफैक्चरिंग हब बनेगा। अमेरिका से तेल और गैस का निर्यात बढ़ेगा। ट्रंप ने कहा, मेक्सिको बॉर्डर पर दीवार बनाने का काम होगा। संगठिक अपराध के खिलाफ आज से ही काम शुरू होगा। हम महंगाई कम करने के लिए काम करेंगे। लोगों ने मुझे बदलाव के लिए चुना है। इसलिए अब अमेरिका में तेजी से बदलाव आएगा। सारी व्यवस्था आज बदलने वाली है। उन्होंने आरोप लगाया कि, बाइडेन ने समाज का ताना-बाना तोड़ा। वो ग्लोबल इंवेंट्स को हैंडल नहीं कर पाए। बाइडेन के राज में अपराधियों को शरण मिली। सीमाओं की सुरक्षा पर वो कुछ नहीं कर सके। बाइडेन ने न्यायापालिका का गलत इस्तेमाल किया। इसलिए ट्रंफ ने लोगों को आश्वासन दिया कि ट्रंप शासन में अमेरिका फर्स्ट पर फोकस होगा। हमारा मकसद सम्रद्ध अमेरिका बनाना है। हमारी संप्रभुता बरकरार रहेगी। इस प्रकार से ट्रंप ने शपथ लेते ही अमेरिका के अंदर और अमेरिका से बाहर के लिए अपनी नीतियां खुलकर सामने रख दी हैं। राष्ट्रपति ट्रंफ ने ठीक ही कहा है कि, मैं यूक्रेन में जंग खत्म कराऊंगा, मिडिल ईस्ट में अराजकता को बंद करूँगा और तीसरे विश्वयुद्ध को होने से भी रोक दूंगा। आपको शायद पता नहीं है कि हम इसके कितने करीब हैं। वहीं, राष्ट्रपति ट्रंप ने जिस तरह से इजरायल-हमास के बीच जंग थमने का भी श्रेय लिया और इसे ट्रंफ इफेक्ट बताया, उससे उनकी संगठित ताकत का भी एहसास होता है। उन्होंने स्पष्ट लहजे में कहा कि मेरे चुनाव जीतने के महज तीन महीने के भीतर ही गाजा में सीज फायर हो गया। इसी तरह से यूक्रेन में जारी जंग और मध्य-पूर्व (मिडिल ईस्ट) के देशों में फैली अराजकता भी रोकी जाएगी। अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्पष्ट कहा कि अमेरिका के सामने आने वाले हर संकट को दूर करने के लिए वह ऐतिहासिक तेजी और ताकत के साथ काम करेंगे। साथ ही साथ अमेरिका को महान और मजबूत बनाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे। बता दें कि अमेरिका की राजनीति में व्हाइट हाउस छोड़ने के 4 साल बाद वापसी कर पाना लगभग असंभव माना जाता है, लेकिन डोनाल्ड ट्रंप इस नामुमकिन लक्ष्य को मुमकिन बनाकर इतिहास रच दिया है। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति पद की दोबारा शपथ ग्रहण कर पूर्व राष्ट्रपति ग्रोवर क्लीवलैंड के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। उल्लेखनीय है कि ग्रोवर क्लीवलैंड पहले अमेरिकी राष्ट्रपति थे, जिन्होंने व्हाइट हाउस से 4 साल बाहर होने के बाद जोरदार वापसी का 131 साल पहले रिकॉर्ड बनाया था। ग्रोवर क्लीवलैंड 1885 से 1889 और 1893-1897 तक अमेरिका के दो बार राष्ट्रपति रहे। उनके बाद डोनाल्ड ट्रंप दूसरे ऐसे नेता हैं, जिन्होंने 4 साल के अंतराल के बाद सत्ता में वापसी की है वहीं, जब अमेरिकी पूंजीवादी लोकतंत्र ने मशहूर कारोबारी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के रूप में अपना अगला मुकाम तय कर लिया है, तो फिर सहज ही सवाल पैदा हुआ कि अब शेष विश्व का क्या होगा, क्या उनको भी देर-सबेर चुनिंदे पूंजीवादियों की शरण में ही जाना पड़ेगा, यक्ष प्रश्न बना हुआ है। ■

With Best Compliments from

ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

सिरफिरे ट्रूडो तो गए

क्या अब भारत-कनाडा संबंध सुधरेंगे

राजनयिक मर्यादाओं और अंतरराष्ट्रीय मर्यादाओं को ताक पर रखने वाले और खालिस्तानी समर्थक कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने सत्ताधारी लिबरल पार्टी के नेता पद और प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है या उन्हें ऐसा करने पर मजबूर कर दिया गया। ट्रूडो एक नंबर के गैर-जिम्मेदार प्रधानमंत्री के रूप में याद रखे जाएंगे। वे खुलकर खालिस्तानी तत्वों का समर्थन करने के अलावा भारत के आतंरिक मामलों में भी लगातार हस्तक्षेप करते रहे।

हरिश्चन्द्र शर्मा

ट्रूडो ने खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत की संलिप्तता का बिना किसी सबूत के बेशर्मी से आरोप भी लगाया। ट्रूडो के प्रधानमंत्रित्व काल में कनाडा में खालिस्तानी तत्व अति सक्रिय हो गए और खुलकर भारत विरोधी उत्पात मचाया। ये भारत को फिर से खालिस्तान आंदोलन की आग में झोंकना चाहते थे। कनाडा की ओंटारियो विधानसभा ने 2017 में 1984 के सिख विरोधी दंगों को सिख नरसंहार और सिखों का राज्य प्रायोजित कत्लेआम करार देने वाला एक प्रस्ताव भी पारित किया था। ये सब गंभीर आरोप के मामले थे। इस तरह की हरकतों से साफ था कि कनाडा में भारत के शत्रुओं को ट्रूडो सरकार का खुला समर्थन मिला हुआ था। कनाडा में खालिस्तानियों के जड़े जमाने का सबसे पहले सुबूत मिला था कनिष्क विमान हादसे के रूप में। मांट्रियाल से नई दिल्ली जा रहे एयर इंडिया के विमान कनिष्क को 23 जून 1985 को आयरिश हवाई क्षेत्र में उड़ते समय, 9,400 मीटर की ऊंचाई पर, बम से उड़ा दिया गया था और वह अटलांटिक महासागर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। उस भयानक हादसे में 329 लोग मारे गए थे, जिनमें से अधिकांश भारतीय मूल के कनाडाई नागरिक ही थे। ट्रूडो को भारत सरकार ने बार-बार कहा कि वे अपने देश में खालिस्तानियों को कसे। पर मजाल है कि ट्रूडो ने कोई इस संबंध में कोई कदम उठाया हो। भारत-कनाडा संबंधों ने सितंबर 2023 में गंभीर मोड़ ले लिया था, जब ट्रूडो ने दावा किया था कि कनाडाई सुरक्षा एजेंसियों के पास भारतीय सरकार के एजेंटों को निज्जर की हत्या से जोड़ने वाले विश्वसनीय सुबूत हैं। भारत ने उन दावों को बेतुका और राजनीति से प्रेरित बताया था। भारत मानता है कि निज्जर एक घोर आतंकवादी था। वह पंजाब में 2007 के सिनेमाघर बम विस्फोट और 2009 में सिख नेता रुलदा सिंह की हत्या में शामिल था। भारत के बार-बार अनुरोधों पर भी खालिस्तानियों को प्रत्यर्पित करने में कनाडा की विफलता ने इस धारणा को बढ़ावा दिया है कि कनाडा में भारत विरोधी ताकतों को खाद-पानी मिल रहा है।

जस्टिन ट्रूडो साल 2018 में भारत यात्रा पर आए थे। वे अमृतसर से लेकर आगरा और मुंबई से लेकर अहमदाबाद का दौरा करने के बाद जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिले तो मोदी जी ने कायदे से बता दिया था कि भारत धर्म के नाम पर कट्टरता तथा अपनी एकता, अखंडता और संप्रभुता के साथ समझौता नहीं करेगा। कनाडा में ट्रूडो की सरकार हिन्दुओं के हित सुरक्षित रखने में पूरी तरह से नाकाम रही। वहां पर मंदिरों को लगातार निशाना बनाया जाता रहा। कनाडा में मंदिरों पर हमलों की घटनाओं में आमतौर पर मंदिरों में तोड़फोड़, धार्मिक प्रतीकों को नुकसान पहुंचाना या स्प्रे पेंट करना शामिल होता है। कुछ मामलों में, धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाली सामग्री भी लिखी गई है। जाहिर है, कनाडा में हिंदू समुदाय इन हमलों से गंभीर रूप से चिंतित है। वे सरकार से इन हमलों की जांच करने और दोषियों को न्याय के कटघरे में लाने की मांग कर रहे हैं। कनाडा सरकार ने इन हमलों की औपचारिक निंदा तो की है और कहा है कि वह धर्म के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव को बर्दाश्त नहीं करेगी। लेकिन, कोई भी दोषी पकड़े नहीं गए। ये किसी को बताने की जरूरत नहीं है कि हमलों के पीछे खालिस्तानी शामिल थे। कहने को कनाडा एक बहुसांस्कृतिक देश है। सरकार सभी धर्मों के लोगों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध बताई जाती है। पर हकीकत में ट्रूडो के काल में वहां की सरकार खुलकर भारत और हिन्दू विरोधी बनकर उभरी।

आपको याद होगा कि ट्रूडो भारत के किसानों के हित में बेवजह बयानबाजी करने लगे थे। जब किसानों ने अपनी मांगों के हक में दिल्ली में डेरा जमाया हुआ था तब ट्रूडो भारतीय किसानों के पक्ष में बोल रहे थे। इस मामले में ट्रूडो को बोलने का हक किसने दिया था। ट्रूडो कह रहे थे कि कनाडा दुनिया में कहीं भी किसानों के शांतिपूर्ण प्रदर्शन के अधिकारों की रक्षा के लिए खड़ा रहेगा। क्या कनाडा को हमारे घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करने का किसी ने अधिकार दिया था? एक बात साफ है कि किसी देश को दूसरे देश के आंतरिक मामलों में तभी बोलना चाहिए जब मानवाधिकारों का हनन हो रहा हो। सभी देशों को मानवाधिकारों की रक्षा करने की जिम्मेदारी है और जब कोई देश ऐसा करने में विफल रहता है, तो अन्य देशों को हस्तक्षेप करने का अधिकार है। अगर बात मानवाधिकारों से हटकर हो तो किसी देश को दूसरे देश के आंतरिक मामलों में कभी भी नहीं बोलना चाहिए। प्रत्येक देश को अपनी सरकार चुनने का अधिकार है और अन्य देशों को इस चुनाव में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। उम्मीद है कि कनाडा में ट्रूडो की विदाई के बाद दोनों देशों के रिश्ते फिर से पटरी पर आने लगेंगे। भारत और कनाडा के बीच संबंधों का पुराना इतिहास है। कनाडा ने 1947 में भारत की स्वतंत्रता को मान्यता दी और दोनों देशों ने 1947 में ही आपसी राजनयिक संबंध स्थापित किए।

दोनों देश राष्ट्रमंडल के सदस्य हैं और साझा मूल्यों और लोकतांत्रिक सिद्धांतों को साझा करते हैं। भारत और कनाडा के बीच द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि हुई है, जिसमें ऊर्जा, कृषि, प्रौद्योगिकी और सेवाओं जैसे क्षेत्र शामिल हैं। दोनों देश व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) पर भी बातचीत कर रहे हैं, ताकि व्यापार और निवेश को और बढ़ावा दिया जा सके। इसके अलावा, कनाडा में भारतीय छात्रों की एक बड़ी संख्या है, और दोनों देशों के बीच शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ रहा है। दोनों देशों के बीच विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवाचार और अनुसंधान में सहयोग बढ़ रहा है। दोनों देश संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जलवायु परिवर्तन, सतत विकास और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर सहयोग करते हैं। ऐसी स्थिति में आपसी तनावपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देना तो दोनों देशों के लिये नुकसानदायक ही होगा। ■

दुनिया की सबसे बेहतरीन है ये 5 यूनिवर्सिटी

एक बार यहां से AI कोर्स कर लिया, मिलेगा करोड़ों का पैकेज

विनय शर्मा

आज के समय में दुनिया भर में एआई की काफी डिमांड हो रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इंजीनियर्स की नौकरी में लोगों को करोड़ों का पैकेज मिलता है। लेकिन एआई इंजीनियर बनने के लिए आपको सही संस्थान से पढ़ाई करना जरुरी है। टेक्नोलॉजी के युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की सबसे ज्यादा चर्चा रहती है। अब तो एआई का इस्तेमाल मोबाइल फोन से लेकर गाड़ियों तक में इसका शुरू हो गया है। इसी के चलते एआई इंजीनियर्स की डिमांड बढ़ती जा रही है। अमेरिका जैसे देशों में एआई इंजीनिर्स की सैलरी 1.08 लाख डॉलर(लगभग 93 लाख रुपये) से लेकर 2.13 लाख डॉलर (लगभग 1.83 करोड़ रुपये) तक है। यूएस न्यूज एंड वर्ल्ड रिपोर्ट ने एक रैंकिंग तैयारी की है, जिसमें बताया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की पढ़ाई के लिए दुनिया की टॉप 5 यूनिवर्सिटीज बताई है। आइए आपको बताते हैं।

सिंघुआ यूनिवर्सिटी

अगर आप भी एआई इंजीनियरिंग की पढ़ाई करना चाहती है। चीन की राजधानी बीजिंग में स्थित सिंघुआ यूनिवर्सिटी में तीन हजार से ज्यादा विदेशी छात्र पढ़ाई कर रहे हैं। एआई कोर्स के लिए सिंघुआ यूनिवर्सिटी दुनिया का नंबर वन संस्थान है। इसके सबसे डिमांड वाले कोर्सेज में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) है, जो कंप्यूटर साइंस, ऑटोमेशन और इलेक्ट्रॉनिक कम्युनिकेशन जैसे विषयों के बारे में भी है।

नानयांग टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी

नानयांग टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी सिंगापुर में स्थित है। इसे दुनिया की सबसे बेहतरीन यूनिवर्सिटीज में से एक माना जाता है। इस यूनिवर्सिटी में बीएससी इन डाटा साइंस एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कोर्स काफी डिमाड में है। आपको बता दें कि, फॉर्ब्स ने इसे टॉप-10 सब्जेक्ट्स में भी शामिल किया हुआ है। एआई की पढ़ाई करने वाले छात्रों को थ्योरी के साथ-साथ प्रैक्टिकल भी सिखाया जाता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ इलेक्ट्रॉनिक साइंस एंड टेक्नोलॉजी ऑफ चाइना

यह यूनिवर्सिटी दुनिया के टॉप संस्थानों में से एक है। यूनिवर्सिटी ऑफ इलेक्ट्रॉनिक साइंस एंड टेक्नोलॉजी ऑफ चाइना में दुनियाभर से आए 35 हजार से ज्यादा छात्र पढ़ाई कर रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की पढ़ाई करने वाले छात्रों को ह्यूमन-कंप्यूटर इंटेरेक्शन, बिग डाटा एनालिटिक्स, मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग जैसे क्षेत्रों में स्पेलाइजेशन का ऑप्शन भी मिलता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी सिडनीयूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी सिडनी

ऑस्ट्रेलिया की इस यूनिवर्सिटी की स्थापना 1988 में हुई थी। इस यूनिवर्सिटी विदेश से कई छात्र पढ़ने आते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी सिडनीयूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी सिडनी सबसे बेहतरीन संस्थान में से एक है। यहां से पढ़ाई करने के बाद आपको आसानी से नौकरी मिल जाएगी।

नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर

यह यूनिवर्सिटी सिंगापुर देश के सबसे पुराने संस्थान में से एक है। इस यूनिवर्सिटी के 13 अंडरग्रेजुएट स्कूल, 4 ग्रेजुएट स्कूल, 60 बैचलर डिग्री हैं। यहां से आप मास्टर ऑफ कंप्यूटिंग इन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की पढ़ाई की जा सकती है, जो दुनिया में सबसे बेहतरीन है। ■

बसंत ऋतुः जानें इस मौसम में ऐसा क्या है खास

एडीटोरियल टीम

बसंत ऋतु में मौसम और प्रकृति में आने वाले खूबसूरत बदलाव से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है. बसंत पतझड़ के मौसम के बाद ठूंठ हो चुके पेड़-पौधों में फूल पत्तियों के खिलने का समय है, जनमें भंवरे और मधुमक्खियां अपने जीवन की धारा तलाशने पहुंचते हैं। यही कारण है कि बसंत को श्रृंगार की ऋतु व ऋतुओं का राजा कहा गया है। बसंत का वर्णन काव्य ग्रंथों, शास्त्रों व पुराणों में सुंदर सजीव वर्णन के रूप में मिलता है। यही कारण है कि साहित्य प्रेमी और कवि इस ऋतु के बदलाव को अपनी कलम से सजाते रहे हैं। इस मौसम को पीले रंग से भी जोड़ा गया है, जो समृद्धि का प्रतीक है। यही कारण है कि बसंत पंचमी यानी सरस्वती पूजा के दिन महिला व पुरुष पीले रंग के परिधान पहन कर बसंत का स्वागत करते हैं।

कवियों की नजर में बसंत ऋतु

बसंत को पुष्प समय, पुष्प मास, ऋतुराज, पिक नंद व काम जैसे नाम कवियों ने दिये हैं। इसका अभिप्राय भागवत गीता से मिलता है, जहां भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि ऋतुओं में मैं बसंत हूं। इसमें प्रकृति बोध के साथ मनुष्यत्व की नयी शुरुआत की छवि मिलती है। यही कारण है कि भारतीय साहित्य की सभी भाषाओं में बसंत का अस्तित्व है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, विद्यापति, अज्ञेय व नागार्जुन जैसे कवियों ने अपनी रचनाओं में बसंत को उकेरा है।

मौसम-ए-गुल का समय है बसंत

प्रेम और उन्माद के इस समय को कवियों ने मौसम-ए-गुल के रूप में भी चित्रित किया है। यह मौसम न ही सर्दी का और न ही गर्मी का होता है। दोनों मौसम के मेल के कारण ही इसे मौसम-ए-गुल कहा गया है। सम-मौसम में प्रकृति के साथ जीव-जंतु और मनुष्य से मनुष्य का जुड़ाव भी बढ़ता है। इस मौसम में फसलें पक कर तैयार हो जाती हैं, आम की डालियां मंजरी से भर जाती हैं और पौधे भी फूलों से लद जाते हैं। मॉडर्न कल्चर में प्रेम के बढ़ते व्यवहार के कारण ही युवा पीढ़ी इस समय को वेलेंटाइन वीक मनाती नजर आती है।

आज भी बसंत ऋतु का होता है इंतजार

बसंत ऋतु कवियों से लेकर आम लोगों को मोहित करती है। वृक्षों के कटाव और शहरी जीवन जीने की होड़ ने पर्यावरण को प्रभावित किया है, लेकिन आज भी कवि बसंत से नहीं बच सके हैं। आज के जन कवि तक पहुंचते-पहुंचते न इसका रूप बदला है, न ही चंचलता। कालिदास का अपना युग था। फिर भी ऋतुराज ने अपने प्रभाव में भेदभाव नहीं किया। आज भी अधिकतर कवि बसंत से अछूते नहीं रहे हैं। धर्म में आस्था और मन में विश्वास रखने वाले लोग बसंत पंचमी से अपने जीवन की नयी शुरुआत करते हैं। ऋतुओं का राजा बसंत नयी उम्मीद लेकर आता है। इस दिन ज्यादातर लोग शिक्षा संस्कार भी कराते हैं। छोटे बच्चे कलम कॉपी की पूजा करते हैं। मां सरस्वती का आशीर्वाद लेकर अपनी शिक्षा प्रारंभ करने का संकल्प भी लेते हैं। गायत्री मंदिर सहित अन्य मंदिरों में सरस्वती पूजा पर शिक्षा संस्कार पर विशेष पूजा की जाती है। बसंत पंचमी के आगमन से प्रकृति में बदलाव आने महसूस होने लगते हैं। पेड़ों पर नयी कोपलें, रंग-बिरंगे फूलों की खुशबू व पक्षियों की सुरीली आवाज गूंजने लगती है। खेतों में दूर-दूर तक सरसों के पीले फूल दिखते हैं और होली की उमंग भरी मस्ती दिखने लगती है। साथ ही इस ऋतु में प्रकृति खुद को संवारती है। मनुष्य के अलावा पशु-पक्षी उल्लास से भर जाते हैं। आम के पेड़ों पर मंजर भर आते हैं। मनुष्य के साथ पशु-पक्षियों में नयी ऊर्जा भर जाती है। ■

बसंत पंचमी में पीले रंग का महत्व

बसंत पंचमी से बसंत ऋतु की शुरुआत होती है। इसमें मौसम सुहावना हो जाता है। इस समय चारों ओर सरसों के पीले फूल दिखायी देते हैं। इसके अलावा सूर्य के उत्तरायण रहने से सूर्य की किरणों से पृथ्वी पीली हो जाती हैं. सब कुछ पीला-पीला होता है। मां सरस्वती को पीले रंग के फूल पसंद हैं। इस कारण से भी पीले रंग का महत्व काफी बढ़ जाता है। इसके अलावा पीले रंग को वैज्ञानिक तौर पर भी बहुत खास माना गया है। पीला रंग तनाव को दूर करता है और दिमाग को शांत रखता है। पीला रंग आत्मविश्वास भी बढ़ाता है।

आयुर्वेद में बसंत ऋतु का महत्व

आयुर्वेद में बसंत ऋतु का काफी महत्व है। इस ऋतु को ऊर्जस्कर माना गया है। इस समय शौंठ, नागरमोथा, त्रिफला चूर्ण, नीम के पत्ते को काली मिर्च के साथ पीस कर 21 दिन तक प्रयोग करने से अगले एक वर्ष तक खून साफ रहता है। इससे शरीर को चर्म रोग से निजात पाने में मदद मिलती है। बसंत ऋतु में कफ बनने की प्रवृत्ति बनी रहती है। ऐसे में त्रिकूट चूर्ण व सितोपलादि के इस्तेमाल से स्वास्थ्य लाभ जैसे खांसी, सर्दी, जुकाम के इलाज, पेट की समस्या व वजन घटाने में मदद मिलती है।

गुलाब की तरह खिल उठेगा आपका चेहरा

रोजाना अप्लाई करें ये फेस पैक

नीतू शर्मा

आज हम आपको सर्दियों में अपनी त्वचा को ग्लोइंग और खूबसूरत बनाकर रखना चाहते हैं। क्योंकि हम आपको कुछ ऐसे फेस पैक्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको सर्दियों के दिनों में लगाने से आप अपनी स्किन को ग्लोइंग बना सकते हैं। सर्दियों के मौसम में हम सभी को अपनी स्किन का सही से ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि सर्दियों के दिनों में हमारी स्किन रूखी होने के साथ बेजान होने लगती है। ऐसे में इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए अक्सर हम सब कई तरह के प्रोडक्ट का इस्तेमाल करने लगे। कई बार यह प्रोडक्ट्स काम करते हैं, लेकिन कई बार इन प्रोडक्ट्स का कोई भी असर हमारे चेहरे पर नहीं पड़ता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको सर्दियों में अपनी त्वचा को ग्लोइंग और खूबसूरत बनाकर रखना चाहते हैं। क्योंकि आज हम आपको कुछ ऐसे फेस पैक्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको सर्दियों के दिनों में लगाने से आप अपनी स्किन को ग्लोइंग बना सकते हैं।

दूध और ओट्स फेस पैक

अपने फेस को खूबसूरत और ग्लोइंग बनाए रखने के लिए आपको दूध और ओट्स के फेस मास्क का इस्तेमाल करना चाहिए। इस फेस मास्क को तैयार करने के लिए दो बड़े चम्मच ओट्स को तीन बड़े चम्मच दूध में भिगो दें। जब यह दोनों चीजें अच्छे से मिक्स हो जाएं, तो इससे अच्छी तरह से पूरे फेस पर अप्लाई कर लें। फिर आधे घंटे तक इसको फेस पर अप्लाई करें और बाद में अच्छे से धो लें। अगर आपको ड्राइ स्किन की समस्या है, तो यह फेस मास्क आपके लिए लाभकारी हो सकता है।

टमाटर और शहद फेस पैक

शहद और टमाटर का फेस पैक चेहरे के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। इस मास्क को तैयार करने के लिए एक चम्मच शहद और एक बड़ा टमाटर ले लें। इन दोनों चीजों को अच्छे से ब्लेंड कर लें। फिर इसको फेस पर अप्लाई कर लें। 15 मिनट लगाने के बाद चेहरा अच्छे से धो लें। इससे आपकी स्किन ड्राइ होने से बचेगी। वहीं आपको फेस भी ग्लो करने लगेगा। ■

वेट लॉस से लेकर डायबिटीज के लिए फायदेमंद है मेथी

डॉ. अजय त्रिवेदी

भारतीय किचन में कई ऐसी चीजें हैं, जो सेहत के लिए काफी फायदेमंद होती हैं। ऐसी ही एक चीज मेथी है। इसको अंग्रेजी में फेनुग्रीक कहा जाता है। आमतौर पर खाने में तड़का लगाने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है। आयुर्वेद में मेथी को एक औषधि बताया जाता है। इसके अलावा मेथी मांसपेशियों को ताकतवर बनाता है और स्टेमिना को भी दुरुस्त रखता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको मेथी के फायदे के बारे में बताने जा रहे हैं। साथ ही यह भी जानेंगे कि मेथी का सेवन किस तरह करना चाहिए और क्या अधिक मेथी का सेवन करना नुकसानदायक होता है।

मेथी में पाए जाने वाले पोषक तत्व

एक स्टडी के मुताबिक 100 ग्राम मेथी के बीज में 60 कार्बोहाइड्रेट, 23 ग्राम प्रोटीन, 25% डाइटरी फाइबर, 6 ग्राम फैट और 9 ग्राम पानी पाया जाता है। मेथी में फास्फोरस, मैग्नीशियम, पोटैशियम और कैल्शियम पाया जाता है। वहीं ताजे मेथी के पत्तों में करीब 86% पानी, 6% कार्बोहाइड्रेट, 4% प्रोटीन और करीब 1% फाइबर व फैट पाया जाता है।

मेथी को डाइट में शामिल करने के फायदे

खाने में तड़का लगाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मेथी के बीज सेहत के लिए फायदेमंद है। अगर आप रोजाना सुबह भीगी मेथी के बीज खा सकते हैं। इससे आप कई तरह की बीमारियों से बच सकते हैं।

डायबिटीज में फायदेमंद

बता दें कि मेथी के बीज में ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है। यह ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में सहायता करता है। जिन लोगों की डायबिटीज की समस्या होती है, उनको अपनी डाइट में मेथी जरूर शामिल करना चाहिए। मेथी की पत्तियां, पाउडर और बीज तीनों डायबिटीज के मरीजों के लिए फायदेमंद होता है। वहीं मेथी के बीज कोलेस्ट्रॉल लेवल को कंट्रोल करता है।

वेट लॉस में फायदेमंद

वहीं मेथी के बीज में घुलनशील फाइबर पाया जाता है और इससे पेट भरा हुआ महसूस होता है। इससे भूख कम लगती है और मेटाबॉलिज्म बेहतर होता है। इससे कैलोरी बर्न होती है और जो लोग वेट लॉस करना चाहते हैं, तो मेथी को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं।

आंत को रखती है दुरुस्त

मेथी के सेवन से पाचन से जुड़ी समस्याएं खत्म होती हैं। इसमें हाई फाइबर पाया जाता है, जो आंतों को साफ करता है। मेथी में एंटीऑक्सीडेंट गुए पाए जाते हैं। यह गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सिस्टम को भी हेल्दी बनाते हैं। जिन लोगों को एसिडिटी, कब्ज और पेट जैसी समस्याओं से परेशान रहते हैं, उनको नियमित रूप से मेथी का सेवन कर सकते हैं।

डाइट में कैसे शामिल करें मेथी

मेथी की चाय: आप मेथी की चाय का सेवन कर सकते हैं। इसके लिए मेथी के बीजों को गर्म पानी में भिगोएं और फिर जब इसका अर्क घुल जाए, तो छानकर इसका सेवन करें। स्वाद के लिए आप इसमें हल्का सा नमक भी मिला सकते हैं।

अंकुरित मेथी: सबसे पहले मेथी के बीजों को रातभर के लिए भिगो दें। फिर अब इनको धोकर एक सूती कपड़े से बांधकर रख दें। अगले दिन मेथी अंकुरित हो जाएगी और इसका खाली पेट खा सकते हैं। इसको आप सलाद या सैंडविच में भी डालकर खाया जा सकता है।

मेथी का पानी: मेथी के बीजों को रात भर पानी में भिगो दें और फिर सुबह खाली पेट इसका सेवन करें। यह सेहत को कई तरह से फायदा पहुंचाता है।

मेथी का पाउडर: मेथी के बीजों को सबसे पहले बारीक पीसकर उसका पाउडर बनाएं। फिर इसको भोजन या दही में मिलाकर खाएं। यह खाने में एक अनूठा स्वाद जोड़ सकता है।

मेथी का सूप: आप अपनी पसंद की सब्जियों के साथ मेथी के बीजों को उबालकर सूप तैयार करें। अब इसमें हल्का नमक डालकर रोजाना इसको पिएं।

मेथी खाने के नुकसान

- अधिक मेथी का सेवन करने से पाचन संबंधी समस्या हो सकती है। फाइबर की अधिक मात्रा पाई जाती है।
- मेथी की तासीर गर्म होती है, इससे सांस लेने में समस्या हो सकती है।
- इसके साथ ही मेथी से कुछ लोगों एलर्जी भी हो सकती है।
- मेथी अधिक खाने से दस्त, मतली और उल्टी जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं।
- त्वचा पर जलन, रेडनेस या रैशेज की समस्या हो सकती है।

PCOS और PCOD से दिलाती राहत

इसके अलावा मेथी पॉलीसिस्टिक ओवरियन डिजीज और पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम के लिए फायदेमंद है। यह अनियमित माहवारी, चेहरे पर अनचाहे बाल, पीरियड्स में ज्यादा दर्द, मुंहासे और स्ट्रेस जैसी समस्याओं से राहत दिलाती है।

सांस संबंधी बीमारी के लिए मेथी फायदेमंद

बता दें मेथी के बीज अस्थमा के मरीजों के लिए बेहद फायदेमंद होता है। क्योंकि इसमे बलगम साफ करने वाले गुण पाए जाते हैं। ■

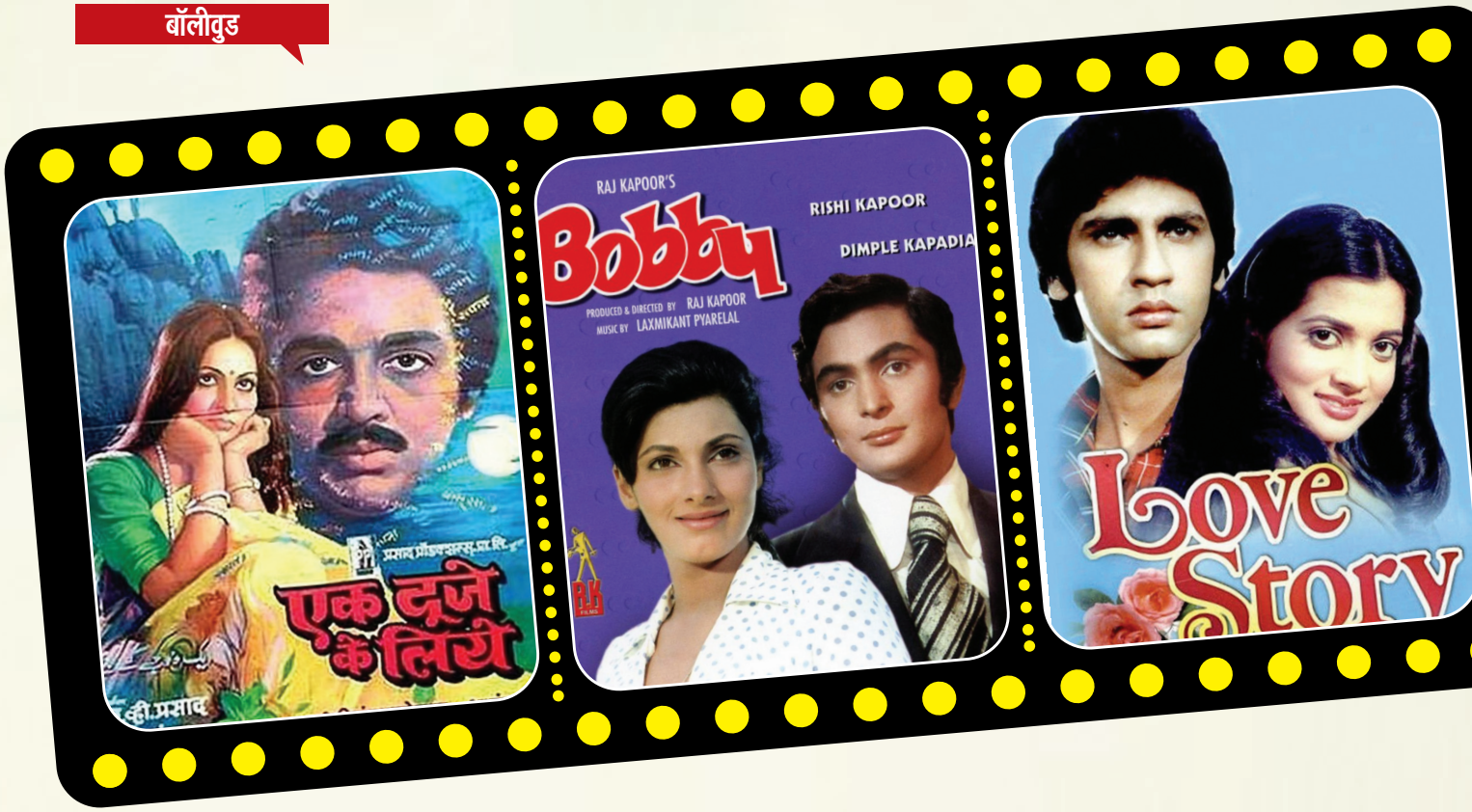

हिंदी सिनेमा के पर्दे पर तरुणाई की रूमानियतभरी अंगड़ाई ने धड़काए

किशोरवय सिने दर्शकों के दिल

फरवरी का महीना वैलेंटाइन डे नहीं बल्कि अब तो वीक की खुमारी में डूबा दिखाई देता है ये कुछ ही वर्षों के विस्तारित और प्रभावी हुए बाजारवाद की परिणति भी है, इसको लेकर टीन एजर्स में खासतौर से अच्छा-खासा क्रेज दिखाई देता है, लेकिन हिंदी सिनेमा तरुणाई की रूमानी अंगड़ाई से काफी समय पहले से ही सराबोर दिखता रहा है। टीन एजर्स की रूह और दिल को छू लेने वाली लव स्टोरीज पर हिंदी फिल्म उद्योग में काफी फिल्में बनी हैं जो कि हर दौर में काफी सराही भी गई हैं और बॉक्स ऑफिस पर व्यावसायिक रूप से हिट भी रही हैं। इन फिल्मों ने कई नवोदित फिल्मी सितारों को जबरदस्त स्टारडम दी है। खास यह भी कि उनकी इन फिल्मों को मौजूदा सिने प्रेमी दर्शकों द्वारा भी पसंद किया जाता है।

डॉ. महेश चंद्र धाकड़

प्रेम, संगीत और सिनेमा इनका गहरा वास्ता रहा है। हमारे हिंदी सिनेमा में अशोक कुमार-देविका रानी की प्रेम कहानी पर बनी फिल्म से लेकर फिल्म 'तड़प' तक अधिकांश हिंदी फिल्में प्रेम और संगीत के रंगों में रंगी नजर आती हैं। एक दौर था जब किसी भी नवोदित कलाकार को फिल्मी पर्दे पर प्रस्तुत करने के लिए प्रेम कहानी का ही सहारा लेना होता था। चाहे 'बाबी' फिल्म हो, चाहे 'एक दूजे के लिए', और फिर चाहे 'लव स्टोरी' हो या फिर चाहे फिल्म 'मैंने प्यार किया' ही क्यों न हो, यही चलन देखा गया है। इस चलन का अनुसरण करती प्रेम कहानियां फिल्मी पर्दे पर आज भी दिख रही हैं, इनमें कुछ प्रेम कहानियां किशोर उम्र के सुकोमल प्यार का एहसास करवाने वाली 'पपी लव स्टोरी' भी सिने प्रेमी दर्शकों को देखने को मिलती रही हैं।

सबको बखूबी याद है ये पपी लव स्टोरीज पर फिल्में बनाने का सिलसिला जब शुरू हुआ तो हिंदी सिनेमा के शोमैन कहे जाने वाले फिल्म निर्देशक राज कपूर ने सन 1973 में 16 साल की किशोरवय अभिनेत्री डिंपल कापड़िया के साथ अपने 21 साल के बेटे अभिनेता ऋषि कपूर को लेकर फिल्म 'बाबी' बनाई, जो सुपर-डुपर हिट भी रही थी, इस फिल्म ने ही असल में हिंदी सिनेमा में किशोर उम्र की प्रेम कहानियों का एक सुखद हृदयस्पर्शी दौर शुरू किया। इस फिल्म का गीत-संगीत भी जबर्दस्त लोकप्रिय हुआ था। आज भी याद आता है इस फिल्म का शैलेंद्र सिंह की आवाज में लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत से सजा, आनंद बक्षी का लिखा हुआ एक यह गीत जो दिल को छू लेता है –

मैं शायर तो नहीं मगर ऐ हंसीं
जब से देखा, मैंने तुझको, मुझको शायरी, आ गई!
मैं आशिक तो नहीं मगर ऐ हसीं
जब से देखा, मैंने तुझको, मुझको आशिकी, आ गई!
प्यार का नाम मैंने सुना था मगर
प्यार क्या है ये मुझको नहीं थी खबर
मैं तो उलझा रहा उलझनों की तरह
दोस्तों में रहा दुश्मनों की तरह
मैं दुश्मन तो नहीं मगर ऐ हंसीं
जब से देखा, मैंने तुझको, मुझको दोस्ती आ गई!
सोचता हूँ अगर मैं दुआ माँगता
हाथ अपने उठाकर मैं क्या माँगता
जब से तुझसे मुहब्बत मैं करने लगा
तब से ऐसे इबादत मैं करने लगा
मैं काफिर तो नहीं मगर ऐ हंसीं
जब से देखा, मैंने तुझको, मुझको बंदगी आ गई!

सन 1981 में के. बाल चंदर निर्देशित एक फिल्म आई थी **एक दूजे के लिए**, बताया जाता है कि दक्षिण भारतीय फिल्मों के मशहूर अभिनेता कमल हासन और हिंदी फिल्मों की लोकप्रिय अभिनेत्री रति अग्निहोत्री को लेकर बनाई गई फिल्म **'एक दूजे के लिए'** को देखकर मशहूर फिल्मकार राज कपूर ने टिप्पणी की थी कि एक अच्छी-खासी फिल्म का सत्यानाश कर दिया। इसमें राज कपूर का कहने का मतलब था कि फिल्म के अंत में उसके हीरो-हीरोइन की मौत को दर्शक कभी भी पचा नहीं पाएंगे और फिर हुआ भी ऐसा ही था। कुछ निराश प्रेमियों के आत्महत्या की दुखद खबरों के बाद इस फिल्म का क्लाइमैक्स निर्माता निर्देशक द्वारा बदलवा दिया गया, अंत में प्रेमी-प्रेमिका को जीवित दिखाया गया। इस फिल्म में लक्ष्मीकांत प्यारेलाल का संगीत था और आनंद बख्शी के गीत थे, इसके भी गीत संगीत ने भी जबर्दस्त धूम मचाई। उस जमाने में आनंद बख्शी का लिखा लता मंगेशकर और अनूप जलोटा की आवाज में ये गीत बहुत लोकप्रिय हुआ –

कोशिश करके देख ले दरिया सारे नदिया सारी
दिल की लगी नहीं बुझती, बुझती है हर चिंगारी
सोलह बरस की बाली उमर को सलाम
प्यार तेरी पहली नज़र को सलाम...!
दुनिया में सबसे पहले जिसने ये दिल दिया
दुनिया के सबसे पहले दिलबर को सलाम
दिल से निकलने वाले रस्ते का शुक्रिया
दिल तक पहुँचने वाली डगर को सलाम
प्यार तेरी पहली नज़र को सलाम...!
जिसमें जवान होकर, बदनाम हम हुए
उस शहर, उस गली, उस घर को सलाम
जिसने हमें मिलाया, जिसने जुदा किया
उस वक़्त, उस घड़ी, उस गज़र को सलाम
प्यार तेरी पहली नज़र को सलाम...!
मिलते रहे यहाँ हम, ये है यहाँ लिखा
उस लिखावट की जे-रो-जबर को सलाम
साहिल के रेत पे जो लहरा उठा ये दिल
सागर में उठने वाली हर लहर को सलाम
यूँ मस्त गहरी गहरी आँखों की झील में
जिसने हमें डुबोया उस भँवर को सलाम
घूँघट को छोड़ के जो, सर से सरक गयी
ऐसी निगोड़ी भाली चुनर को सलाम
उल्फ़त के दुश्मनों ने कोशिश हज़ार की
फिर भी नहीं झुकी जो, उस नज़र को सलाम
प्यार तेरी पहली नज़र को सलाम...!

किशोर उम्र की प्रेम कहानियों के दौर को अगर हम याद करें तो 1981 में राहुल रवैल निर्देशित और कुमार गौरव एवं विजेता पंडित अभिनीत सुपर हिट फिल्म **'लव स्टोरी'**, याद आती है, जिसको लेकर किशोरवय और युवा सिने प्रेमियों की बॉक्स ऑफिस पर दीवानगी कभी भी भुलाई नहीं जा सकती, जो इस फिल्म की कॉमर्शियल कामयाबी का आधार भी बनी थी। इस फिल्म के गीत संगीत ने क्या जबर्दस्त धूम मचाई थी। फिल्म के सभी गीत दर्शकों की जुबान पर चढ़ गए थे। इनमें से लता मंगेशकर और अमित कुमार की आवाज में आरडी बर्मन के संगीत से सजा आनंद बख्शी का लिखा यह गीत आज भी लोग नहीं भूले –

याद आ रही है, तेरी याद आ रही है
याद आने से, तेरे जाने से, जान जा रही है
पहले ये न जाना, तेरे बाद ये जाना प्यार में
जीना मुश्किल कर देगा, ये दिल दीवाना प्यार में
जाने कैसे, साँस ये ऐसे, आ जा रही है
याद आ रही है...!
ये रुत की रंगरलियां, ये फूलों की गलियां रो पड़ीं
मेरा हाल सुना तो, मेरे साथ ये कलियां रो पड़ीं
एक नहीं तू, दुनिया आँसू, बरसा रही है
याद आ रही है...!
बनते बनते दुल्हन, प्रीत हमारी उलझन बन गई
मेरे दिल की धड़कन, मेरी जान की दुश्मन बन गई
कुछ कह कहके, मुझे रह रहके, तड़पा रही है
याद आ रही है...!

इसी कड़ी में याद करें हम 1983 में राहुल रवैल निर्देशित, सनी देओल और अमृता सिंह अभिनीत फिल्म 'बेताब' को भी जो कि इसी प्रकार से अगर सुपर हिट रही थी तो इन्हीं किशोरवय और युवा दर्शकों के टिकट खिड़की पर टूट पड़ने की वजह से। इस फिल्म का गीत संगीत भी बहुत लोकप्रिय हुआ था। आरडी बर्मन के संगीत में सजे आनंद बक्षी लिखित गीत हर किशोरवय और युवा फिल्म दर्शक को दीवाना बना गए। इस फिल्म का लता मंगेशकर और शब्बीर कुमार की आवाज में ये युगल गीत याद आता है–

जब हम जवाँ होंगे जाने कहाँ होंगे
लेकिन जहाँ होंगे वहाँ पर याद करेंगे तुझे याद करेंगे...!
ये बचपन का प्यार अगर खो जायेगा
दिल कितना खाली-खाली हो जायेगा
तेरे ख़्यालों से इसे आबाद करेंगे तुझे याद करेंगे...!
ऐसे हँसती थी वो ऐसे चलती थी
चाँद के जैसे छुपती और निकलती थी
सब से तेरी बातें तेरे बाद करेंगे तुझे याद करेंगे...!
तेरे शबनमी ख़्वाबों की तसवीरों से
तेरी रेशमी जुल्फ़ों की ज़ंजीरों से
कैसे हम अपने आप को आज़ाद करेंगे तुझे याद करेंगे...! ज़हर जुदाई का पीना पड़ जाये तो
बिछड़ के भी हम को जीना पड़ जाये तो
सारी जवानी बस यूँ ही बर्बाद करेंगे तुझे याद करेंगे...!

इसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए 1988 में मंसूर खान निर्देशित आमिर खान और जूही चावला अभिनीत फिल्म **'कयामत से कयामत तक'** की बॉक्स ऑफिस पर कामयाबी को भी कभी भुलाया नहीं जा सकता। 1989 में सूरज बड़जात्या निर्देशित, सलमान खान और भाग्य श्री अभिनीत सुपर-डुपर हिट फिल्म **'मैंने प्यार किया'** बड़ी कामयाबी हासिल कर सकी थीं। 1995 में आई आदित्य चौपड़ा निर्देशित **'दिलवाले दुलहनियां ले जाएंगे'** जैसी कामयाबी उस दौर में किसी फिल्म ने हासिल नहीं की। सन 2000 में राकेश रोशन के निर्देशन में ऋतिक रोशन और अमीषा पटेल अभिनीत फिल्म **'कहो न प्यार है'** ने कामयाबी के इस सिलसिले को परवान चढ़ाया था। ■

फिल्म और टीवी की बदौलत बढ़ रही हिंदी की लोकप्रियता

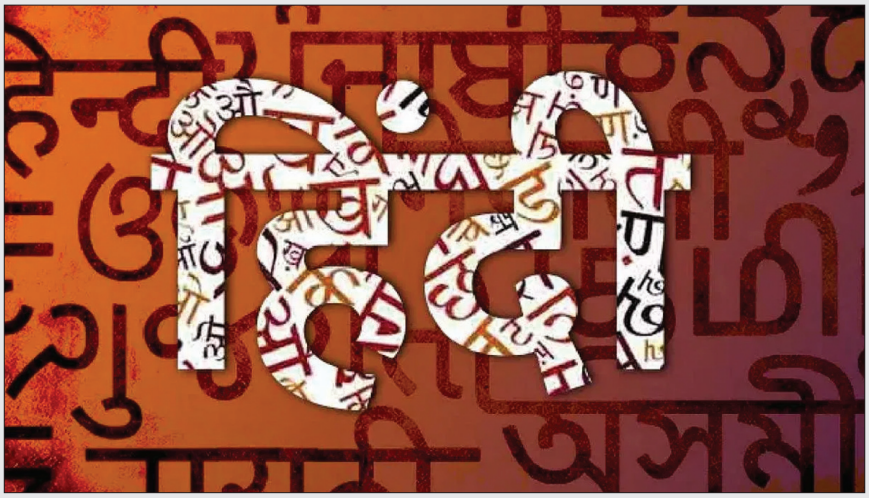

बृज खंडेलवाल

हिंदी भाषा की बढ़ती लोकप्रियता और व्यापक स्वीकार्यता इस बात का प्रमाण है कि यह सिर्फ भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि अब वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। हिंदी को भारत की लोक भाषा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभावशाली भाषा बनाने में साहित्यकारों, हिंदी संस्थानों और भाषा प्रेमियों का योगदान बहस का मुद्दा हो सकता है, लेकिन जनसंचार माध्यमों, विशेष रूप से बॉलीवुड और टेलीविजन चैनलों की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता। बॉलीवुड ने हिंदी को घर-घर तक पहुंचाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी फिल्मों के संवाद, गाने और कहानियां देश के कोने-कोने में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय हैं। केरल से लेकर असम तक हिंदी फिल्मों के गाने गाए और सुने जाते हैं। हिंदी फिल्मों के सुपरस्टार सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दुनियाभर में पसंद किए जाते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि हिंदी एक मजबूत सांस्कृतिक माध्यम बन चुकी है। फिल्मों के अलावा, टीवी धारावाहिकों ने भी हिंदी को लोकप्रिय बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है। सास-बहू के ड्रामे से लेकर अपराध और ऐतिहासिक धारावाहिकों तक, हिंदी भाषा में बने कार्यक्रमों ने लोगों को इस भाषा से जोड़े रखा। ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के उदय के बाद हिंदी कंटेंट की पहुंच और भी अधिक बढ़ गई है, जिससे यह वैश्विक स्तर पर भी पसंद की जाने लगी है। आज हिंदी केवल एक सरकारी भाषा नहीं, बल्कि एक जनभाषा बन चुकी है। टेलीविजन, रेडियो, अखबार, पत्रिकाएं और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी को हर व्यक्ति तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई है। हिंदी पत्रकारिता का भी तेजी से विकास हुआ है, जिससे इस भाषा का दायरा और मजबूत हुआ है। बड़ी संख्या में यात्रा करने वाली भारतीय जनता के लिए हिंदी एक ऐसा माध्यम बन गई है, जिसके सहारे वे संवाद स्थापित कर सकते हैं। हिंदी पूरे देश को एक सूत्र में बांधने वाली भाषा साबित हो रही है। इस भाषा ने न केवल भारत की सांस्कृतिक एकता को बनाए रखा है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तमिलनाडु में कुछ राजनीतिक कारणों से हिंदी का विरोध जरूर होता रहा है, लेकिन अब यह धीरे-धीरे कम हो रहा है। देश की नई पीढ़ी समझ चुकी है कि हिंदी के बिना आगे बढ़ना मुश्किल है। तकनीकी युग में हिंदी का महत्व बढ़ता जा रहा है, और अब यह अंग्रेजी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। ट्रांसलेशन ऐप्स और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की मदद से अब हिंदी सीखना, समझना और बोलना आसान होता जा रहा है। जब लोग ट्रैवल करते हैं घूमने के लिए, या व्यापार और शिक्षा के लिए, तो एक लिंक भाषा, बेसिक संवाद के लिए, चाहिए होती है, इस जरूरत को हिंदी भाषा बेहतरीन तरीके से पूरा कर रही है, ये कहना है बैंगलोर में रह रहे साथी राम किशोर का। आज के युवा हिंदी अंग्रेजी को लोकल भाषा के साथ करके नए प्रयोग कर रहे हैं और हिंग्लिश, पिंग्लिश, टिमलिश और बिंग्लिश जैसी नई शैलियों को अपना रहे हैं। भाषा में यह परिवर्तन बताता है कि हिंदी किसी भी रूप में हो, लोग इसे अपनाने से हिचकिचा नहीं रहे हैं। यह प्रवृत्ति दिखाती है कि हिंदी अब केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक व्यवहारिक संचार माध्यम बन गई है। एक समय था जब हिंदी केवल साहित्य और संचार तक सीमित थी, लेकिन अब यह व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में भी तेजी से अपनी जगह बना रही है। हिंदी की वजह से फिल्म उद्योग हजारों करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है, जबकि टीवी, अखबार और पत्रिकाओं का प्रिंट मीडिया उद्योग लगभग 15,000 करोड़ रुपये का हो गया है। अब कॉर्पोरेट सेक्टर भी हिंदी को अपनाने लगा है। बड़ी-बड़ी कंपनियां हिंदी में विज्ञापन बना रही हैं, सरकारी और निजी क्षेत्र में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है, और स्टार्टअप्स भी हिंदी को प्राथमिकता देने लगे हैं। अगर हिंदी के प्रसार की गति इसी तरह बनी रही, तो आने वाले समय में यह वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी को कड़ी चुनौती दे सकती है। आज कई विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है, और दुनिया के कई देशों में हिंदी बोलने-समझने वालों की संख्या बढ़ रही है। मनोरंजन, शिक्षा और तकनीकी उद्योग में हिंदी की उपयोगिता बढ़ने के कारण इसका भविष्य और भी उज्ज्वल दिखाई दे रहा है। अगर हिंदी का यह विकास जारी रहा, तो जल्द ही यह विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक बन जाएगी। फिल्मों, टेलीविजन, सोशल मीडिया और व्यापार की बदौलत हिंदी भाषा आज तेजी से आगे बढ़ रही है। जहां पहले इसे केवल भारत की भाषा माना जाता था, वहीं अब यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। बॉलीवुड, टेलीविजन और डिजिटल मीडिया ने इसे हर आम और खास व्यक्ति की भाषा बना दिया है। भविष्य में हिंदी के बढ़ते प्रभाव को देखकर यह कहना गलत नहीं होगा कि यह भाषा न केवल भारत की एकता का प्रतीक बनी रहेगी, बल्कि दुनिया में भी अपनी खास जगह बनाएगी। अंग्रेजी के वर्चस्व को चुनौती देने की क्षमता अगर किसी भाषा में है, तो वह निस्संदेह हिंदी है। ■

पौधा लगाना आसान कहां

संतोष कुमार उत्सुक

दूसरे गमले के पास बैठी मां चुपचाप देख रही है। पौधा लगाते हुए वह बिना पूछे समझाते हैं, सबसे पहले प्लास्टिक पॉट या पाली ग्रो बैग को हल्के हाथों से हिलाते हुए पौधे को बाहर निकालें। ध्यान रखें, उसकी जड़ें न टूटें। जड़ों में से कोकोपीट को निकाल दें।

हर पौधे को बाजार की नजर से देखना है क्यूंकि वह बिकने के लिए उगा है। घर की बची खुची हरियाली में खाली पड़े गमले में नया पौधा खुद लगा सकते हैं तो जरुर लगाएं। समय न रहते किसी अनुभवी पौधे लगाने वाले की सेवाएं लेंगे तो वह अपने तरीके से काम करेगा क्यूंकि उसका मूल कर्तव्य घर में उदास पड़े गमले में पौधा रोपना नहीं, पौधा रोपकर एक नया ग्राहक बनाना है जो भविष्य में भी उसे और अवसर दे सकता है। दूसरे गमले के पास बैठी मां चुपचाप देख रही है। पौधा लगाते हुए वह बिना पूछे समझाते हैं, सबसे पहले प्लास्टिक पॉट या पाली ग्रो बैग को हल्के हाथों से हिलाते हुए पौधे को बाहर निकालें। ध्यान रखें, उसकी जड़ें न टूटें। जड़ों में से कोकोपीट को निकाल दें। नए गमले में लगाते समय पौधे के चारों तरफ पोषक तत्वों से भरपूर मिटटी को अच्छी तरह ऐसे दबाएं। मां गौर से देख रही है। पौधा लगाने वाले ने मिटटी दबाई, फिर कहा अब इसकी हल्की सिंचाई कर देते हैं। कहने लगे इस पौधे में नियमित अंतराल पर पोषक तत्वों से भरपूर खाद ज़रूर डालें। दो मुट्ठी गोबर खाद, एक मुट्ठी केंचुआ खाद, एक मुट्ठी नीम की खली तथा एक मुट्ठी सरसों की खली मिलाकर, उचित मात्रा में खाद डालेंगे तो पौधा तंदरुस्त रहेगा। मां के चेहरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कराहट उगने लगी है। पौधा लगाना और बड़ा करना कितना मुश्किल काम हो गया है। वह बोले घबराइए नहीं, यह सब अब ऑनलाइन मिल जाता है।

पौधा लगाकर, अनुभवी हाथ धोते हुए बताने लगे, पौधों के बेहतर विकास के लिए घुलनशील उर्वरकों में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश दो ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर महीने में दो बार छिडकाव करना चाहिए। यह तो मानवीय शरीर को चुस्त दरुस्त रखने जैसा ही हुआ, जिसका ख्याल हम अपने अस्त व्यस्त जीवन में मुश्किल से रख पाते हैं। कहने लगे खाद डालने के एकदम बाद पानी नहीं डालना चाहिए। मां को पुरानी रसोई के साथ बना किचन गार्डन याद आने लगा। सबसे दिलचस्प उनका यह बताना रहा कि कैक्टस, सक्युलेंट और आर्किड्स जैसे कई पौधों को अगर पानी में मिनरल वाटर मिलाकर पिलाएंगे तो उनकी जड़ें मजबूत होंगी, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी। वक्त सचमुच बदल गया है अब पौधों को भी मिनरल वाटर पिलाना होगा। फिर कहने लगे कुछ पौधों को भूलकर भी मिनरल वाटर न दें, इससे उनकी जड़ों

का विकास रुक जाता है, फूल और फल भी कम लगते हैं। मां सोच रही है, मिटटी की मिटटी खराब कर दी, अनगिनत रसायन उसमें मिला दिए, ज्यादा उत्पादन के लिए, तकनीक की बढ़ती पैदावार ने, फूल पौधों को भी नहीं बख्शा। पहले कुदरत खुद देखभाल करती थी, अब इतना कुछ करना पड़ता है फिर भी संतुष्टि नहीं। विकास कुदरत को परेशान कर रहा है। ■

अपनी जमीं और अपना आसमां

खुली हवा में सांस लेती मां-बेटी

सत्यकाम के अपने दोस्त की बीवी पूजा से अनैतिक संबंध को लेकर रश्मि अपनी बेटी पाहुनी को ले कर मायके आ तो गई, पर वहां भी परेशानियां कम न थीं। क्या रश्मि इस का समाधान खोज पाई?

रितु वर्मा

रश्मि आज फिर अपनी बेटी पाहुनी के साथ परेशान सी घर आई थी। रश्मि के विवाह को 12 वर्ष हो गए थे, मगर सत्यकांत के व्यवहार में जरा भी बदलाव नहीं आया था। वह पैसे को पानी की तरह बहाता था। आज फिर रश्मि को कहीं से पता चला कि उसने अपना पैसा अपने दोस्त विराज की पत्नी, जिस का नाम पूजा है, के साथ औनलाइन बिजनैस में लगा रहा है। रश्मि ने पूजा को पहले भी देख रखा था। गहरे मेकअप की परतें और भड़कीले कपड़ों में पूजा एक आइटम गर्ल अधिक, पढ़ीलिखी सभ्य महिला कम लगती थी। रश्मि को अच्छे से पता था कि पूजा वो सारे हथकंडे अपनाती थी, जिस से वह सत्यकांत जैसे बेवकूफ पुरुष को काबू में रख सके। रातदिन 'सत्यजी, सत्यजी' कह कर वह सत्य की झूठी तारीफ करती थी। सत्य बेवकूफ की तरह पूजा की थीसिस भी लिख रहा था और अपने निजी फायदे के लिए पूजा का पति विराज मुंह में दही जमा कर बैठा हुआ था। आज रश्मि के सिर के ऊपर से पानी गुजर गया था। इसलिए वह सलाह लेने अपने घर आ गई थी। छोटी बहन अंशु बोली, आप पढ़ीलिखी हो, खुद कमाती हो, क्यों उस गलीच इनसान के साथ अपनी और पाहुनी की जिंदगी बरबाद कर रही हो? भैया बोले, अरे, तेरा कमरा अभी भी खाली पड़ा है। वहीं भाभी बोलीं, डाइवोर्स का केस फाइल करना बच्चू पर और जब एलमनी देनी पड़ेगी, दिन में तारे नजर आ जाएंगे। रश्मि ने पाहुनी के मुरझाए हुए चेहरे की तरफ देखा। पाहुनी सुबकते हुए कह रही थी, पापा उतने भी बुरे नहीं हैं, जैसा आप सब बोल रहे हो। तभी रश्मि की मम्मी सुधा बोलीं, बेटा, तेरे पापा ने तो हमारी बेटी की जिंदगी बरबाद कर दी है। 38 साल की उम्र में ही बूढ़ी लगने लगी है। मेरी बेटी महीने में लाख रुपए कमाती है। क्यों वह किसी आवारा के पीछे जिंदगी खराब करे? रश्मि ने घर आ कर बहुत देर तक घर छोड़ने के फैसले के बारे में सोचा। उसे लगा कि अगर आज वह पाहुनी के आंसू से पिघल जाएगी, तो कभी भी इस दलदल से बाहर नहीं निकल पाएगी। सत्यकांत रातदिन झूठ बोलता था। वह इतना झूठ बोलता था कि उसे खुद याद नहीं रहता था।

रात को सत्यकांत 11 बजे आया था। रश्मि ने सत्यकांत को अपने फैसले से अवगत करा दिया था। सत्यकांत ने बस इतना ही कहा, सोचसमझ कर फैसला लेना। ऐसा ना हो कि कुएं से खाई में गिर जाओ। तुम्हारे घर वाले तुम्हारे पैसों के कारण रातदिन मेरे खिलाफ कान भरते हैं, मगर एक बात याद रखना कि ये केवल तुम्हारी गलतफहमी है कि मेरे और पूजा के बीच कुछ है। रश्मि सत्यकांत के इन झूठे वादों से तंग आ चुकी थी। उस ने अपना और पाहुनी का सामान पैक कर लिया था। उसे लग रहा था कि कम से कम अपने घर वह तनावमुक्त तो रह पाएगी। जब रश्मि पाहुनी के साथ अपने घर पहुंची, तो सब लोगों ने उस का खुले दिल से स्वागत किया। अपनी छोटी बहन अंशु और भाभी मंशा की मदद से वह अपने कपड़े और छोटेमोटे सामान कमरे में जमाने लगी। रश्मि ने देखा कि उस के कमरे में एक अलमारी पुरानी चादरों से अटी पड़ी है। ठंडी सांस भरते हुए रश्मि ने सोचा कि अभी भी घर का वो ही हाल है। सब कुछ अस्तव्यस्त। मंशा भाभी भी घर के रंग में ही रंग गई थीं। मंशा भाभी बोलीं, अरे दीदी, आप इस के ऊपर अपने महंगे कभीकभार पहनने वाले कपड़े रख दो। जल्द ही मैं ये सामान हटवा दूंगी। तभी अंशु बोली, अरे, मेरे कमरे में एक अलमारी पूरी खाली है। आप के कपड़े वहां रख देते हैं। रश्मि के सारे महंगे सूट और साड़ी अंशु अपने कमरे में ले गई थी। रश्मि पाहुनी के साथ उस कमरे को अपना घर बनाने की कोशिश कर रही थी कि तभी रश्मि को बाहर शोर सुनाई दिया। जब रश्मि बाहर निकली तो देखा कि अंशु उस की कांजीवरम सिल्क की साड़ी पहन कर मौडलिंग कर रही है।

रश्मि को देख कर अंशु बोली, दीदी, इस बार औफिस में ट्रेडिशनल डे पर ये ही पहनूंगी। तभी भैया के छोटे बेटे भव्य से उस साड़ी के ऊपर पानी गिर गया। रश्मि को ऐसा लगा मानो साड़ी पर उकेरे हुए मोर को किसी ने जबरदस्ती नहला दिया हो। अंशु बोली, सौरी दीदी, मैं इसे ड्राईक्लीन करवा दूंगी। तभी रश्मि की मम्मी बोलीं, अरे, मैं घर पर ही धो दूंगी। रश्मि को अंदर ही अंदर झुंझलाहट तो हुई, मगर वह चुप लगा गई थी। रात में जब रश्मि और पाहुनी डिनर के लिए बाहर आए, तो डायनिंग टेबल पर सजी क्रौकरी देख कर रश्मि की भूख ही मर गई थी। क्रौकरी का रंग पीला पड़ गया था और खाना भी बेहद बदमाजा बना हुआ था। रश्मि ने देखा कि पाहुनी बस खाने से खेल रही थी। रात में रश्मि पाहुनी से बहुत देर तक बात करती रही थी। फिर तकरीबन 10 बजे रश्मि उठ कर रसोई में गई। वह पाहुनी को दूध देना चाहती थी। फ्रिज खोल कर देखा, तो बस एक गिलास ही दूध था। मम्मी रश्मि से बोलीं, अरे रश्मि, तेरा भाई तो अकेला कमाने वाला है। अब तू आ गई है, तो थोड़ा उसे भी चैन मिल जाएगा। रश्मि मम्मी की बात सुन कर थोड़ी अचकचा गई थी, 'क्या सत्यवान वास्तव में उसके परिवार के बारे में सही बोल रहा था? अगले दिन रश्मि सवेरे 5 बजे उठ कर नहा ली थी और अपने कपड़े भी धो कर डाल दिए थे। अब समस्या थी पाहुनी की, वह बिना दूध के आंख नहीं खोलती है। रश्मि ने फिर खुद अपने पैसों से 4 लीटर दूध खरीद लिया। पाहुनी को दूध देने के बाद जब वह तैयार होने लगी, तो मम्मी बोलीं, रश्मि आज बहुत बरसों बाद गाढ़ी दूध की चाय नसीब होगी। रश्मि जब नाश्ता ले कर अंदर आई तो पाहुनी अभी भी रात के कपड़ों में ही बैठी थी। रश्मि ने गुस्से में कहा, तुम अब तक नहाई क्यों नहीं हो?

पाहुनी रोआंसी सी बोली, कोई बाथरूम खाली नहीं है। रश्मि ने प्यार से पाहुनी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, चलो, फिर छुट्टी कर लेते हैं। पाहुनी बिदकते हुए बोली, नहीं, बिलकुल नहीं। फिर पाहुनी बस मुंहहाथ धोकर ही स्कूल के लिए तैयार हो गई थी। टिफिन में भी रश्मि बस ब्रेडजेम ही रख पाई थी। दफ्तर में रश्मि दिनभर सोचती रही थी कि वह क्या करे? पाहुनी को वह ऐसे नहीं देख सकती थी। वापसी में रश्मि ने पाहुनी की पसंद के स्नैक्स, ड्राईफ्रूट्स और भी ना जाने कितना सामान ले लिया था। मगर जब रश्मि घर पहुंची, तो शर्म के कारण उस ने पूरा सामान मम्मी के हाथों में पकड़ा दिया था। मम्मी गर्व से बोलीं, ऐसी बेटी क्या कभी मायके पर बोझ होती है? भैया और भाभी के लिए रश्मि अब एक कमाई का जरीया थी। मम्मी संकेत में बहुत बार रश्मि को ये समझा चुकी थी कि छोटी बहन अंशु की शादी उसकी और भैया की संयुक्त जिम्मेदारी है। आज जैसे ही रश्मि ऑफिस से आई, तो उस ने देखा कि अंशु उस का सिल्क का सूट लथेड़ते हुए आ रही है। रश्मि एकाएक चिल्ला कर बोली, अंशु किस से पूछ कर तुम ये सूट पहन कर गई थी? अंशु खिसियाते हुए बोली, दीदी आज ऑफिस में पार्टी थी। मैं ड्राईक्लीन करवा दूंगी। तभी मम्मी तपाक से बोलीं, अरे, जब 38 साल की उम्र में तुम्हें ही इतना शौक है तो वह तो बस अभी 24 साल की है। इस घर में मेरा और तेरा नहीं होता। ये हमारा घर है रश्मि। अब इस घर की जिम्मेदारी भी तेरी है। इसी तरह मन को समझाते हुए, समझौते करते हुए और घर की जिम्मेदारी उठाते हुए एक माह बीत गया था। रश्मि ने एकाध बार सत्यकांत से बात करने की कोशिश भी की, मगर सत्यकांत को शायद ये अरेंजमेंट पसंद आ गया था।

जब रश्मि अपने बड़े भाई सुशांत के साथ वकील के यहां गई, तो वकील ने कहा कि तुम्हारे पति के खिलाफ डोमेस्टिक वायलेंस का केस कर सकते हैं, क्योंकि पैसे न कमाना, बाहर गर्लफ्रेंड होना, ऐसी बातों से कुछ नहीं होगा। रश्मि बोली, वकील साहब, शादी को 12 साल हो गए हैं। अब भी डोमेस्टिक वायलेंस का केस बन सकता है। वकील बोला, क्यों नहीं। एक ऐसा रामबाण है मेरे पास, जो कभी खाली नहीं जाता है। बस तुम्हें थोड़ी हिम्मत रखनी पड़ेगी। फिर वकील ने जो बताया, उसे सुन कर रश्मि की रूह सिहर गई। वकील के अनुसार, रश्मि, पाहुनी के साथ वापस अपने घर जाए और जब सत्यकांत घर आए, उस की उपस्थिति में ही खुद को नुकसान पहुंचाए। तभी डोमेस्टिक वायलेंस का पक्का केस बनेगा। पूरा एक हफ्ता एलिमोनी की रकम तय करने में निकल गया था। मम्मी को एक करोड़ की रकम भी कम लग रही थी, तो अंशु और मंशा भाभी 60 लाख रुपए में समझौता करना चाहते थे। रश्मि थोड़ा झिझकते हुए बोली, भैया, क्या सत्यकांत से ऐसे पैसे लेना ठीक रहेगा? मम्मी तपाक से बोलीं, हमें उस बात से कोई मतलब नहीं है। तेरी जिंदगी बरबाद कर दी है उस ने। उन पैसों को तेरे भैया के बिजनैस में लगा देंगे, अंशु की शादी भी थोड़ी ठीक से हो जाएगी। रश्मि रोज इसी उधेड़बुन में लगी रहती थी। क्या हिंदू शादी में सिंदूर की कीमत वाकई इतनी महंगी है? क्या अपने घर आ कर उसे कोई चैन मिला था? यहां पर भी सब को उस के बस पैसों से मतलब था। एक हफ्ता इसी कशमकश में बीत गया। पाहुनी रोज अपने मामा, मामी और बाकी घर वालों के मुंह से सत्यकांत को फंसाने के नएनए आइडिया सुनती थी और अपने ही आप में सिमट जाती थी। रात में कभी भी उठ कर पाहुनी डर के कारण चिल्लाने लगी थी। पाहुनी अब रश्मि से खिंचीखिंची सी रहती थी। एक रात जब रश्मि ने पूछा, तो पाहुनी गुस्से में बोली, मम्मी, तुम गंदी हो। रश्मि फिर उस रात के बाद से पाहुनी से नजर नहीं मिला पाई। फिर 15 दिन बाद सुशांत ही बोला, रश्मि, पाहुनी को ले कर कब अपने घर जा रही हो। वकील साहब कह रहे हैं, जितना देर करोगी उतनी ही दिक्कत होगी। रश्मि ने कहा, भैया कोई और उपाय नहीं है। पाहुनी बहुत डरी हुई है।

मंशा भाभी आंखें तरेरते हुए बोलीं, और कोई उपाय होता तो आप के भैया थोड़े ही ना आपसे कहते और फिर ये पैसे हम सबके, आपके और पाहुनी के ही काम आएंगे। रश्मि धीमे स्वर में बोली, भाभी आप ठीक कह रही हैं, मगर फिर भी मेरा मन नहीं मान रहा है। मम्मी रुखाई से बोलीं, तुम्हारे मन के कारण ही तुम आज यहां खड़ी हो। उस रात बहुत देर तक रश्मि अपने कमरे में बिना लाइट जलाए बैठी रही, तभी मम्मी के मोबाइल की घंटी से रश्मि की तंद्रा टूटी। मम्मी किसी को अपने घुटने के औपरेशन का खर्चा बता रही थीं, अरे, पूरे 6 लाख का खर्च है। अगर सत्यकांत ने 15 लाख भी दिए तो भी मैं करा लूंगी। रश्मि को धीरे-धीरे सुशांत लौटा देगा, फिर कौन अपनी शादीशुदा बेटी को ऐसे सपोर्ट करता है जैसे हम कर रहे हैं। अंशु के लिए रिश्ता भी देख रहे हैं। अब तो रश्मि और सुशांत मिल कर सब देख लेंगे। अब देखो, रश्मि के पास पाहुनी है। उस की दूसरी शादी तो कैसे हो सकती है, हम लोगों के साथ रहेगी तो उस की जिंदगी भी कट जाएगी। रश्मि को लगा जैसे पहले सत्यकांत उस के साथ छल कर रहा था और अब उस के खुद के घर वाले, उस के टूटे रिश्ते पर अपनी जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। रात में जब रश्मि ने अपनी मम्मी को खिचड़ी दी तो संयत स्वर में कहा, मम्मी, अगले हफ्ते तक मैं और पाहुनी अपने घर चले जाएंगे। मम्मी ने खिले स्वर में कहा, ये हुई ना मेरी बेटी वाली बात। शनिवार की शाम को रश्मि ने अपना सामान फिर पैक कर लिया था। सुशांत बोला कि चल, मैं तुझे छोड़ आता हूं। रश्मि बोली, भैया, ये सफर मेरा है। तो रास्ता भी मुझे तय करने दीजिए। रश्मि का आटो जब एक छोटे से मकान के आगे रुका, तो पाहुनी बोली, मम्मी, ये किस का घर है? रश्मि बोली, ये हमारा घर है। जहां की हर ईंट में बस प्यार और अपनापन होगा। घर क्या था एक छोटी सी बरसाती थी, साथ में अटैच्ड टायलेट और रसोई भी थी। नीचे रश्मि की दोस्त निधि भी रहती थी और उस की बेटी ऊर्जा, पाहुनी की हमउम्र थी। निधि ने रश्मि की समस्या सुन कर उसे बहुत कम किराए पर ये बरसाती दिलवा दी थी। सुरक्षा की दृष्टि से, हवा धूप के हिसाब से ये काफी अच्छा ऑप्शन था। रश्मि ने वकील को फोन लगाया और कहा, वकील साहब, मुझे बिना किसी झूठ के अपना केस लड़ना है। क्या आप लड़ पाएंगे? वकील बोला, क्यों नहीं, मगर समय लगेगा। और बस वाजिब रकम ही मिल पाएगी। रश्मि हंसते हुए बोली, बस वाजिब ही चाहिए। नीचे से पाहुनी की खुल कर हंसने की आवाज आ रही थी। रश्मि को ऐसा लगा, जैसे बहुत दिन बाद उस ने खुल कर हवा में सांस लिया हो, जहां पर थोड़ी सी जमीं उस की है और थोड़ा सा आसमां भी उस का ही है। वह अपनी जमीं पर पांव रख कर अपने सपनों को अपने ही आसमां में बुनने के लिए तैयार है। नई जिंदगी के लिए अब शायद रश्मि तैयार थी। ■

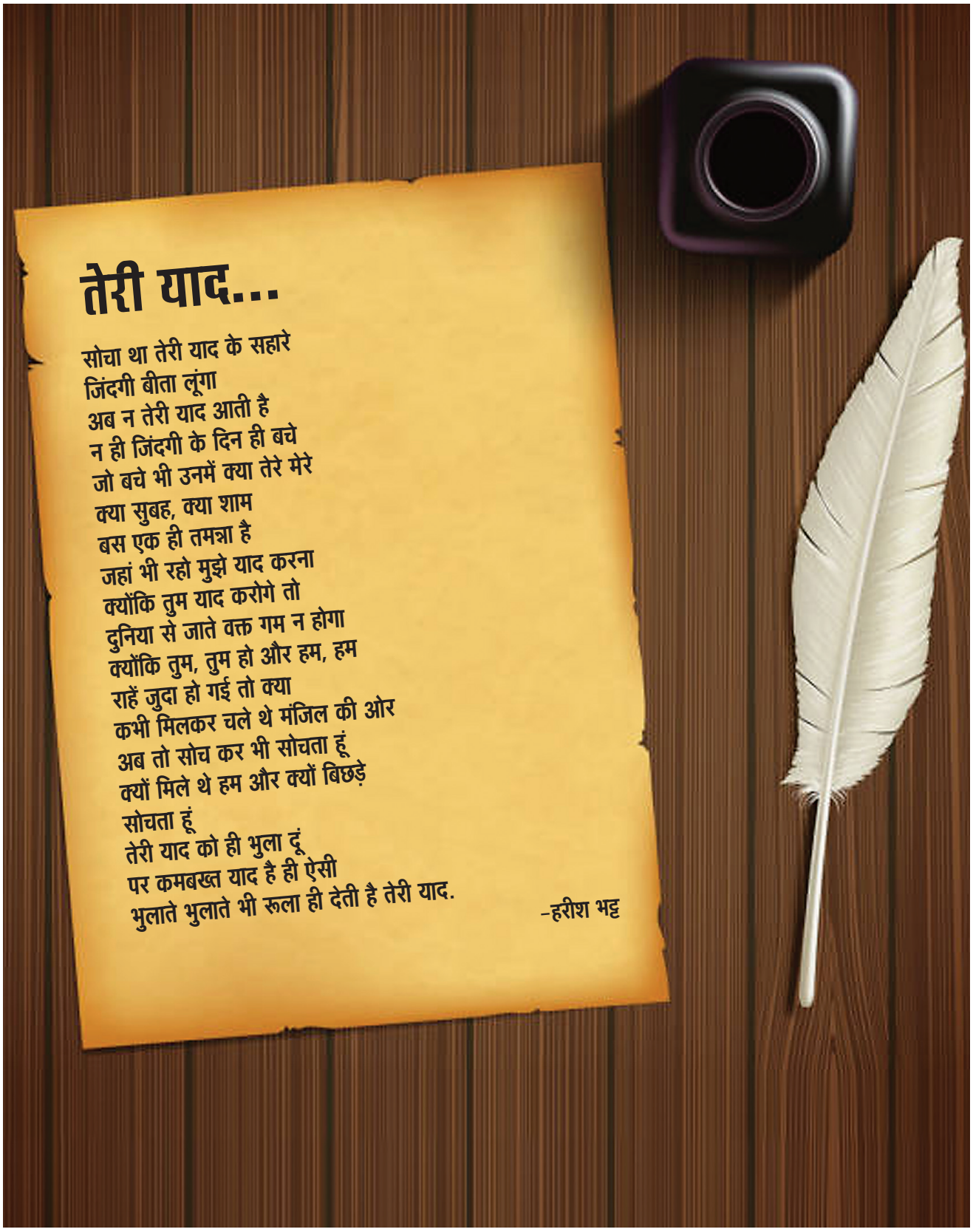

तेरी याद...

सोचा था तेरी याद के सहारे
जिंदगी बीता लूंगा
अब न तेरी याद आती है
न ही जिंदगी के दिन ही बचे
जो बचे भी उनमें क्या तेरे मेरे
क्या सुबह, क्या शाम
बस एक ही तमन्ना है
जहां भी रहो मुझे याद करना
क्योंकि तुम याद करोगे तो
दुनिया से जाते वक्त गम न होगा
क्योंकि तुम, तुम हो और हम, हम
राहें जुदा हो गई तो क्या
कभी मिलकर चले थे मंजिल की ओर
अब तो सोच कर भी सोचता हूं
क्यों मिले थे हम और क्यों बिछड़े
सोचता हूं
तेरी याद को ही भुला दूं
पर कमबख्त याद है ही ऐसी
भुलाते भुलाते भी रूला ही देती है तेरी याद.

–हरीश भट्ट

With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal

Managing Director

+91-9918700801

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

Dream of Healthy India

NOVA®

DAIRY PRODUCTS

Serving since 1991

घी, दूध, दही, छाछ, पनीर और डेयरी व्हाईटनर

STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.

E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com

Works : Village - Bhitauna, Soron Road,Kasganj-207123 (UP)

For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050

Vidhar